खंड

5

सामाजिक संबंध

इकाई 1

सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से मूल्य विकास: परिवार और प्रतिवेश 239

इकाई 2

स्कूल और सहकर्मी 255

इकाई 3

माता-पिता की भूमिका 270

इकाई 4

मूल्य विकास पर मीडिया का प्रभाव 286

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 5 सामाजिक संबंध

सामाजिक संबंध नामक इस ब्लॉक में चार इकाइयाँ हैं।

इकाई-1 सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से मूल्य विकास: परिवार और प्रतिवेश; में परिवार के महत्व पर चर्चा की गई है, जो बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बुनियादी मूल्य तथा नैतिकता यहीं बनते हैं। परिवार में ही सीखने की, आत्मविश्वास, तथा सकारात्मक सामाजिक संपर्क के लिए आवश्यक क्षमताएं हासिल की जाती हैं। मूल्यों के विकास में परिवार तथा प्रतिवेश की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

इकाई -2 स्कूल और सहकर्मी सहकर्मी संबंधों और मूल्य विकास को बढ़ावा देने वाली स्कूल गतिविधियों पर चर्चा करते हैं। साथियों का प्रभाव चाहे सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक - एक किशोर के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। सर्वोत्तम स्थिति में, सहकर्मी सकारात्मक प्रेरणा, सफलता और स्वस्थ व्यवहार का स्रोत हो सकते हैं। दूसरी ओर, नकारात्मक सहकर्मी किसी किशोर को ऐसे व्यवहार में शामिल होने के लिए प्रभावित कर सकते हैं जिसे अन्यथा उसके मूल्य अस्वीकार कर सकते हैं। भावनात्मक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए, बच्चों को परिवार, दोस्तों, स्कूल तथा साथियों से आवश्यक मूल्यों के संयोजन के आधार पर संतुलन हासिल करने की आवश्यकता होती है।

इकाई-3 माता-पिता की भूमिका एक बच्चे के विकास में माता-पिता द्वारा निभाई जाने वाली निर्णायक तथा निर्विवाद भूमिका पर चर्चा करती है। पालन-पोषण की शैलियों में अंतर के परिणामस्वरूप शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म-सम्मान, विचलित व्यवहार, स्वायत्तता, भावनात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता जैसे असंख्य परिणामों में अंतर होता है। इस इकाई में मूल्य शिक्षा में माता-पिता की भूमिका, बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में मदद के लिए आवश्यक दिशानिर्देशों पर चर्चा की गई है।

इकाई-4 'मूल्य विकास पर मीडिया का प्रभाव' सामाजिक जीवन के हर पहलू में मीडिया के प्रभाव पर चर्चा करती है। मीडिया के विभिन्न रूप जैसे प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया, मास मीडिया तथा पारंपरिक मीडिया सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों तरीकों से बच्चों के मूल्य विकास में योगदान करते हैं। मीडिया साक्षरता के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

इकाई 1 सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से मूल्य विकास: परिवार और प्रतिवेश

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल्य शिक्षा का महत्व

1.4 मूल्य विकास की अवधि

1.5 समाजीकरण: मूल्य विकास की प्रक्रिया के रूप में

1.6 घर: सीखने का प्रथम स्थान

- 1.6.1 सामाजिक-भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक व्यवहार सीखना
- 1.6.2 सामाजिक एवं भावनात्मक अनुभवों का प्रभाव
- 1.6.3 घरेलू वातावरण की गुणवत्ता
- 1.6.4 घर पर मूल्य विकास

1.7 व्यवहार: मूल्य विकास पर प्रभाव

1.8 प्रतिवेश एवं समकक्षों की भूमिका

1.9 सारांश

1.10 बोध प्रश्न के उत्तर

1.11 सन्दर्भ

1.1 प्रस्तावना

आप प्रत्येक संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में मूल्यों के अर्थ से पहले ही परिचित हो चुके होंगे (इकाई 1 और 2, खंड 2)। आस्था के साथ-साथ, वे व्यक्ति के व्यवहार को उत्पन्न करते हैं और उस पर प्रभाव डालते हैं। हममें से अधिकांश ने अपने मूल्य - या नैतिकता, घर पर, स्कूल में या अपने समुदाय (पड़ोस) से सीखे हैं। अधिकतर, जिन मूल्यों का हम पालन करते हैं वे माता-पिता, शिक्षकों और धार्मिक नेताओं से आते हैं। अब, हमारे जीवन में प्रौद्योगिकी की बढ़ती भागीदारी के साथ, हम टेलीविजन या रेडियो पर जो देखते और सुनते हैं उसके माध्यम से हम मीडिया से भी प्रभावित होते हैं। हमारे मूल्यों का स्रोत जो भी हो, वे हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाते हैं क्योंकि वे विशिष्ट परिस्थितियों में ओटीजी व्यवहार के लिए मानदंड/नियम बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, उनके माध्यम से हम यह पहचानते हैं कि किसे अच्छा या बुरा माना जाना चाहिए।

जीवन के लगभग हर क्षेत्र में 'नैतिक पतन' को देखने के बाद, हमारे समाज को उन पारंपरिक मूल्यों की ओर वापस लौटना होगा जिन्होंने इस देश को महानता की ओर मार्गदर्शित किया। इन मूल्यों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए, तीन घटक आवश्यक हैं: देखभाल करने वाले

वयस्क, आयु-उपयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण गतिविधियाँ, तथा समुदाय/प्रतिवेश में सार्थक भूमिकाएँ। इस इकाई में, हम चर्चा करेंगे कि परिवार एवं समुदाय/प्रतिवेश उन मूल्यों के विकास में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जो व्यक्तियों के विकास के चरणों के लिए उपयुक्त हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपको यह करने में सक्षम होना चाहिए:

- मूल्य शिक्षा के महत्व पर चर्चा;
- मूल्य विकास के चरणों का वर्णन;
- मूल्य विकास की प्रक्रिया के रूप में समाजीकरण के महत्व को समझाना;
- मूल्य विकास में परिवार की भूमिका का विश्लेषण करना; तथा
- मूल्य विकास में प्रतिवेश एवं साथियों की भूमिका का विश्लेषण करना

1.3 मूल्य शिक्षा का महत्त्व

यह तथ्य कि सभी अच्छी शिक्षा, संक्षेप में, मानव व्यक्तित्व को उसके सभी आयामों - बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक नैतिक तथा सदाचारपूर्ण - में विकसित करने की ऐसी प्रक्रिया है जो निर्विवाद एवं सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत है। यदि अच्छी शिक्षा अच्छे जीवन और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक मूल्यों का विकास करने में विफल रहती है तो वह कल्पनातीत है। मानव जाति के अभिलिखित इतिहास के प्रत्येक काल में महान विचारकों ने जीवन में चरित्र एवं मूल्यों के महत्व को समझने तथा युवाओं में इन मूल्यों को बढ़ावा देने में शिक्षा के विभिन्न माध्यमों की भूमिका पर बहुत ध्यान दिया है।

मूल्य वे मानक हैं जिन्हें समूह के सदस्य साझा करते हैं, जिसके आधार पर वे किसी कार्य अथवा किसी वस्तु के भी अच्छा, सही एवं वैध होने का निर्णय करते हैं। वे एक सामाजिक व्यवस्था के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में उत्पन्न होते हैं और इसीलिए वे समाज के मानकों द्वारा शासित होते हैं। इसी कारण से एक सामाजिक समूह के मूल्य दूसरे से भिन्न होते हैं।

मूल्य शिक्षा, जैसा कि यह शब्द आम तौर पर उपयोग किया जाता है, सीखने एवं गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला को संदर्भित करता है जिसमें शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वच्छता, शिष्टाचार तथा व्यवहार, उचित सामाजिक व्यवहार, नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों से लेकर सौंदर्य, और यहां तक कि धार्मिक प्रशिक्षण तक शामिल होते हैं। एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार, मूल्य शिक्षा अनिवार्य रूप से अनुभूत्तियों एवं भावनाओं को शिक्षित करने का मामला है। यह 'हृदय का प्रशिक्षण' है और इसमें सही अनुभूत्तियों एवं भावनाओं को विकसित करना शामिल है। इसमें ऐसी कोई संज्ञानात्मक क्षमता शामिल नहीं है जिसका प्रशिक्षण दिया जा सके। कविता की तरह ही, इसे पढ़ाया नहीं जाता, बल्कि 'पकड़ा' जाता है। यह अनिवार्य रूप से सही माहौल बनाने, अनुकरण करने एवं उदाहरण के तौर पर सीखने, प्रकृति के साथ समन्वय अथवा किसी आदर्श के अनुसार ख़ुद को ढालने का मामला है।

कुछ लोगों के लिए, मूल्य शिक्षा केवल कुछ सद्गुणों और आदतों का समावेश करते हुए उचित व्यवहार एवं स्वभावों को विकसित करने का मामला है। इस तरह के दृष्टिकोण के विरोध में, यह बताया गया है कि मूल्य शिक्षा में अनिवार्य रूप से एक संज्ञानात्मक घटक होता है और इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। वास्तव में, ठोस तर्क के आधार पर नैतिक निर्णय लेने की क्षमता मूल्य शिक्षा का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है और इसे विचारपूर्वक विकसित किया जाना चाहिए। मूल्य शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को अपने पास मौजूद मूल्य प्रणाली को बेहतर बनाने एवं उसे उपयोग में लाने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है। एक बार जब सभी लोग अपने जीवन मूल्यों को समझ जाते हैं, तो वे अपने जीवन में चुने गए विभिन्न विकल्पों की जांच एवं नियंत्रण कर सकते हैं। व्यक्ति को अपने जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों, सार्वभौमिक मूल्यों, व्यक्तिगत मूल्यों एवं सामाजिक मूल्यों जैसे विभिन्न प्रकार के मूल्यों को बार-बार क़ायम रखना पड़ता है। शिक्षा मानवता के बारे में बुनियादी तथ्य सीखने की दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास है। मूल्य शिक्षा के पीछे मुख्य विचार छात्रों में आवश्यक मूल्यों का विकास करना है ताकि जो सभ्यता हमें जटिलताओं का प्रबंधन करना सिखाती है उसे कायम रखा जा सके तथा उसे आगे विकसित किया जा सके। इसकी शुरुआत घर से होती है और यह स्कूलों में भी जारी रहती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ चीज़ों को विभिन्न माध्यमों, जैसे समाज या सरकार के माध्यम, से स्वीकार करता है।

मूल्य शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा धारण की गई मूल्य प्रणाली को सुधारने एवं उसका उपयोग करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है। एक बार जब हम जीवन में अपने मूल्यों को समझ लेते हैं, तो हम अपने जीवन में चुने गए विभिन्न विकल्पों की जांच और उनका नियंत्रण कर सकते हैं। जीवन में विभिन्न प्रकार के मूल्यों जैसे, सांस्कृतिक मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य एवं सामाजिक मूल्यों को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। इस प्रकार, एक छात्र के जीवन को आकार देने तथा उसे वैश्विक मंच पर प्रदर्शन का अवसर देने के लिए मूल्य शिक्षा सदैव आवश्यक है। माता-पिता, बच्चों, शिक्षकों आदि के बीच मूल्य शिक्षा की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है, क्योंकि हम समाज में बढ़ती हिंसक गतिविधियों, व्यवहार संबंधी विकार एवं एकता की कमी को जारी रहते देख रहे हैं।

1.4 मूल्य विकास की अवधि

यह बात हम सभी जानते हैं कि हम मूल्यों के साथ पैदा नहीं हुए हैं, तो हम अपने मूल्यों को कैसे विकसित करते हैं? हम कह सकते हैं कि मूल्यों को हम अपने निकटतम परिवेश से, अर्थात अपने परिवार, प्रतिवेश अथवा पड़ोसियों, अपने साथियों, आदि से प्राप्त करते हैं। एक समाज का निर्माण अनेक साझा मानदंडों, रीति-रिवाजों, मूल्यों, परंपराओं, सामाजिक भूमिकाओं, प्रतीकों एवं भाषाओं से होता है, तथा समाज के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने के लिए व्यक्ति को इनका अधिग्रहण करना होता है| जिस प्रक्रिया के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है उसे समाजीकरण के रूप में जाना जाता है। यह व्यक्तियों को उनके समाज में भाग लेने के लिए आवश्यक कौशल एवं आदतें प्रदान करता है, और यह स्कूलों में औपचारिक शिक्षा, ग़ैर-औपचारिक कार्यक्रमों के माध्यम से, या पारिवारिक पालन-पोषण जैसी अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से होता है। इस प्रक्रिया के दौरान, जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, मूल्यों का विकास होता है। समाजशास्त्री मॉरिस मैसी के अनुसार इस विकास की विभिन्न अवधियों को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है जो इस प्रकार हैं:

अ) छाप अवधि

यह अवधि जन्म से लेकर सात वर्ष की आयु तक होती है। इस अवधि के दौरान, मॉरिस मैसी ने व्यक्तियों को स्पंज की तरह बताया है, जो अपने आस-पास की हर चीज़ को आत्मसात कर लेते हैं। उनके अनुसार, एक व्यक्ति हर चीज़ को सत्य के रूप में स्वीकार करता है, ख़ासकर जब वह माता-पिता से आती है। कभी-कभी, इस अवधि के दौरान विकसित होने वाला भ्रम एवं अंध विश्वास आघात तथा अन्य गहरी समस्याओं के शुरुआती गठन का कारण भी बन सकता है।

यहां महत्वपूर्ण बिंदु सही और गलत, अच्छे और बुरे की समझ सीखना है। यह एक ऐसा मानवीय निर्माण है जिसके बारे में हम अक्सर यह मान लेते हैं कि अगर हम यहां नहीं होते तो भी इसका अस्तित्व होता। यह इस बात का संकेत है कि यह रचना कितनी गहरी छाप छोड़ती है।

ब) मॉडलिंग अवधि

यह अवधि आठ से तेरह वर्ष की आयु के बीच होती है। इस अवधि के दौरान, व्यक्ति दूसरों की नक़ल करते हैं, अक्सर माता-पिता की, बल्कि अन्य लोगों की भी नक़ल करते हैं जैसे शिक्षक, फ़िल्मी सितारे, खिलाड़ी, आदि। इस स्तर पर, व्यक्ति प्रयोग करने की कोशिश करता है तथा कभी-कभी नए विचारों से प्रभावित भी होता है।

स) समाजीकरण अवधि

यह अवधि तेरह से इक्कीस वर्ष की आयु के बीच होती है। हम सभी समझते हैं कि यह एक ऐसा चरण है जो काफ़ी हद तक सहकर्मी समूह से प्रभावित होता है। हम ऐसे लोगों को पसंद करते हैं जो दृष्टिकोण, व्यवहार एवं धारणा के मामले में हमारे जैसे लगते हैं।

बोध प्रश्न 1

1. मूल्य शिक्षा के महत्व पर चर्चा करें (40 शब्द)।

   .....

   .....

   .....

2. आपके अनुसार मूल्य विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण कौन सा है? (40 शब्द)

   .....

   .....

   .....

1.5 समाजीकरण: मूल्य विकास की प्रक्रिया के रूप में

आपने इकाई 1 खंड 2 में सीखा है कि समाजीकरण समाज के मानदंडों एवं संस्कृतियों को विरासत में प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। यह व्यक्ति को अपने समाज में भाग लेने के लिए आवश्यक कौशल तथा आदतें प्रदान कर सकता है। एक समाज स्वयं अनेक साझा मानदंडों, रीति-रिवाजों, मूल्यों, परंपराओं, सामाजिक भूमिकाओं, प्रतीकों एवं भाषाओं के माध्यम से

बनता है। चूँकि मूल्य समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में उत्पन्न होते हैं, वे उस समाज विशेष के मानकों तथा मानदंडों द्वारा शासित होते हैं। इसलिए, आप देख सकते हैं कि प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में एक अलग मूल्य प्रणाली होती है जो एक सामाजिक समूह को दूसरे से अलग करती है।

एली चिनॉय ने समाजशास्त्र पर अपनी मानक पाठ्यपुस्तक में कहा है कि समाजीकरण दो प्रमुख कार्य करता है:

1. एक ओर, यह व्यक्ति को उसके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के लिए तैयार करता है, उसे आदतों, विश्वासों, मूल्यों, भावनात्मक प्रतिक्रिया के उचित पैटर्न, धारणा के तरीकों एवं अपेक्षित कौशल और ज्ञान का आवश्यक भंडार प्रदान करता है।
2. दूसरी ओर, यह संस्कृति की सामग्री को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित करके उसे दृढ़ता एवं निरंतरता प्रदान करता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया में, दोनों मानदंडों (जो प्रकृति में अनिवार्य हैं) और मूल्यों को समाज के समूह के सदस्यों द्वारा आत्मसात किया जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से आरंभ होती है तथा उसकी मृत्यु तक चलती रहती है। इस प्रकार यह एक सतत प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि समाजीकरण के परिणामस्वरूप उन मूल्यों का आंतरिककरण होता है जो उस समय किसी संस्कृति के प्रतीक होते हैं। अब यह स्पष्ट है कि मूल्यों का विकास एक आंतरिक प्रक्रिया है जो समाजीकरण प्रक्रिया से प्रभावित होती है। अतः, अब आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मूल्य मूलतः, और अपनी अभिव्यक्ति में मौलिक रूप से, सामाजिक हैं। समाज जितना अधिक जटिल होगा, मूल्यों के कार्यकारी होने की आवश्यकता उतनी ही अधिक होगी।

उदाहरण के लिए, आज के समाज में हम पाते हैं कि पूरे सामाजिक ताने-बाने की विशेषता हिंसा, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, आदि है। इसलिए यह आवश्यक है कि गुरु या शिक्षक के रूप में हमें सहिष्णुता, भाईचारे, आदि, जैसे मूल्यों पर ज़ोर देना चाहिए। चूँकि, मूल्य, निर्णय, विकल्प या अस्वीकृति के लिए, आधार प्रदान करते हैं और यही मूल्य प्रणालियाँ आगे चलकर समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार से प्रभावित होती हैं, इसलिए वे सकारात्मक रूप से विकसित होती हैं। समाज में समाजीकरण के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि वे समूह हैं जो हमारे व्यवहार तथा दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। इन समूहों में शामिल हैं:

- परिवार, जो धर्म एवं आजीविका के लक्ष्यों के प्रति किसी के दृष्टिकोण का निर्धारण करने के लिए उत्तरदायी है;
- स्कूल, जो समाज में विशेष कौशल तथा मूल्यों में युवा लोगों के समूहों का सामाजिकरण करने के लिए ज़िम्मेदार प्रतिनिधि है;
- मित्र/ सहकर्मी मंडली; तथा
- संचार मीडिया।

मूल्यों को उन अनुभवों की मदद से प्राप्त किया जाता है जो एक व्यक्ति सामाजिक संस्थानों (स्कूल, परिवार) में, साथियों से, मीडिया के माध्यम से प्राप्त करता है।

अब हम मूल्य विकास में इन सामाजिक संस्थाओं के प्रभाव पर चर्चा करेंगे।

1.6 घर: सीखने का प्रथम स्थान

परिवार समाज की बुनियादी सामाजिक इकाई है तथा हम अपने परिवार से जो कुछ भी सीखते हैं वह हमारी मूल्य प्रणाली बन जाता है, हमारी धारणाएं बनाता है, एवं हमारे कार्यों का आधार बन जाता है। चूँकि एक व्यक्ति अपने कार्यों से जाना जाता है; इसलिए परिवार की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उचित पहचान देना है।

परिवार/घर का वातावरण व्यक्ति के सीखने को जीवन भर प्रभावित करता है एवं भिन्न प्रकार के अनुभव (सुखद एवं अप्रिय) एक बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देते हैं। सीखने सहित हर तरह के विकास के लिए सुरक्षा की भावना एक बुनियादी पूर्वापेक्षा है। बच्चे घर में अनुकूल माहौल चाहते हैं। प्रारंभिक वर्षों के दौरान, घर का सामाजिक एवं भावनात्मक वातावरण व्यक्ति के सीखने तथा विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक बन जाता है। वास्तव में, सीखने की कुछ बुनियादी रणनीतियाँ एवं शैलियाँ बच्चे के औपचारिक स्कूल में जाने से पहले ही गढ़ना शुरू हो जाती हैं। बच्चे घर एवं आसपास के समुदाय से जो अनौपचारिक रूप से सीखने के प्रयास करते हैं, वे बाद के जीवन में उनके सीखने के अन्वेषणों के लिए आधार तैयार करते हैं।

1.6.1 सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक व्यवहार सीखना

बच्चे कई सामाजिक-भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक व्यवहार उन लोगों को देखकर और उनकी नकल करके सीखते हैं जो उनके लिए महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे कि माता-पिता। बच्चे अक्सर अपने माता-पिता से उनके डर, पूर्वाग्रहों एवं मूल्यों को सीख लेते हैं। अतः, यह महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता अपने बच्चों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए के बारे में उपदेश देने के बजाय अपने व्यवहार से उनके लिए एक उदाहरण स्थापित करें।

मूल्य प्रणालियाँ विभिन्न समाजीकरण संरचनाओं के भीतर उत्पन्न होती हैं। प्रतीकात्मक मूल्य एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के अंतर्गत परिवार, सहकर्मियों एवं मीडिया जैसी समाजीकरण की एजेंसियों द्वारा प्रसारित होते हैं। माता-पिता समाजीकरण की मुख्य एजेंसी हैं और प्रतीकात्मक मूल्यों का सिद्धांत दर्शाता है कि परोपकारी माता-पिता विभिन्न संदर्भों में अपने बच्चों का समाजीकरण कैसे करते हैं।

1.6.2 सामाजिक एवं भावनात्मक अनुभवों का प्रभाव

किसी भी प्रकार की सीखने की प्रक्रिया पर्यावरण के सामाजिक तथा भावनात्मक अनुभवों और विशेषताओं से प्रभावित होती है। भावनात्मक अनुभवों की प्रकृति एवं गुणवत्ता, घर एवं तात्कालिक प्रतिवेश में सुरक्षा और अपनेपन की भावना किसी व्यक्ति की मूल्य प्रणाली को प्रभावित करती है। यदि बच्चे सुरक्षित व्यक्ति के रूप में विकसित होते हैं, तो वे अपने आसपास के लोगों पर भरोसा करना सीखते हैं। माता-पिता और भाई-बहनों के साथ बच्चों के जो लगाव होते हैं वे जीवन भर बने रहते हैं, तथा वे प्रतिवेश एवं समाज में भावनात्मक संबंधों और सीखने की खोज के लिए मॉडल के रूप में काम करते हैं। घर पर, वे भौतिक परिवेश के महत्व को समझते हैं एवं आवश्यक मुकाबला कौशल एवं व्यक्तिगत तथा वर्ग व्यवहार के सामाजिक मानदंड हासिल करते हैं। वे सीखते हैं कि परिवार, समुदाय और अन्य सामाजिक समूहों का सम्मान कैसे करें, दूसरों के साथ कैसे तालमेल बिठाएँ और एक साथ रहें, कैसे सुनें, कैसे दें

और लें, कैसे क्षमा करें, कैसे दूसरों की सराहना करें तथा अपने बारे में कैसे सोचें।

परिवार के भीतर, व्यक्ति अनुशासन के महत्त्व के बारे में अपनी पहली धारणा भी प्राप्त करते हैं एवं अनुपालन तथा सहयोग में महत्त्वपूर्ण सबक सीखते हैं जो दूसरों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखने के अवसर प्रदान करते हैं।

1.6.3 घरेलू वातावरण की गुणवत्ता

इस अवधि के दौरान घरेलू वातावरण की गुणवत्ता जीवन के किसी भी अन्य चरण की तुलना में अधिक प्रभावशाली तथा स्थायी होती है। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे व्यक्ति स्वतंत्र होना सीखते हैं और घर के बाहर वस्तुओं एवं लोगों की दुनिया का पता लगाना शुरू करते हैं, व्यक्तिगत मतभेद उभरने लगते हैं। वे सही और गलत के बारे में अपना दृष्टिकोण रखना शुरू कर देते हैं और अच्छे और बुरे के बीच अंतर करना सीख जाते हैं। सहिष्णुता और अन्य धर्मनिरपेक्ष आदर्शों के अधिकारों और इच्छाओं के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों का बुनियादी आधार घर के माहौल या परिवार की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिए, परोपकारिता का अर्थ है 'स्वयं की कीमत पर दूसरे को देना', यह एक मूल्य है जो आम तौर पर उन बच्चों में विकसित होता है जिनके माता-पिता पोषण एवं समर्थन करते हैं, परोपकारिता प्रदर्शित करते हैं, दूसरों पर अपने कार्यों के प्रभावों को उजागर करते हैं, प्रेरण का उपयोग करते हैं, परिपक्व व्यवहार के लिए स्पष्ट अपेक्षाएं स्थापित करते हैं, तथा अपने बच्चों के लिए दूसरों के प्रति ज़िम्मेदारी प्रकट करने के अवसर पैदा करते हैं| शोध से पता चलता है कि परोपकारी बच्चों के माता-पिता नैतिकतावाद का उपदेश देते हैं, अर्थात् सही एवं ग़लत के बारे में व्याख्यान देते हैं। इस प्रकार, परिवार एकमात्र सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के लिए अनुकूल माने जाने वाले मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. मूल्य विकास में समाजीकरण प्रक्रिया का क्या महत्व है? (40 शब्द)

   .....

   .....

   .....

2. घर बच्चे के मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित करता है? (40 शब्द)

   .....

   .....

   .....

1.6.4 घर पर मूल्य विकास

मूल्यों को विकसित करना एक कठिन कार्य है, क्योंकि इसमें मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता, सही मूल्यों का चयन, तथा उन्हें आत्मसात करने की क्षमता विकसित करना शामिल है। यदि आप मूल्यों के समावेशन के स्रोत का विश्लेषण करते हैं, तो आप पाएंगे कि यह किसी व्यक्ति

के साथ माता-पिता/ अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के बीच, अथवा अपने समकक्षों एवं अन्य व्यक्तियों के बीच के संवादात्मक व्यवहार में निहित है। क्या सही है और क्या गलत, अच्छा या बुरा, इसके बारे में सबसे प्रारंभिक अवधारणा, विशिष्ट कृत्यों एवं स्थितियों का सन्दर्भ देते हुए, बड़ों, विशेषकर माता-पिता के नियमों एवं अपेक्षाओं के संदर्भ में बनाई गई है।

माता-पिता अपने बच्चों में व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों का संचार करने वाले प्राथमिक सामाजिक माध्यम होते हैं। यह सर्वविदित है कि दूसरों का व्यवहार बच्चों के कार्य करने के तरीक़े पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है।

1.7 व्यवहार: मूल्य विकास पर प्रभाव

जो व्यवहार किसी व्यक्ति के मूल्यों को प्रभावित कर सकते हैं, उन्हें निम्नलिखित प्रक्रियाओं द्वारा अन्तर्निहित किया जा सकता है:

- माता-पिता द्वारा प्रेरण का उपयोग,
- पोषण एवं समर्थन की अभिव्यक्ति,
- मांग तथा सीमा निर्धारण,
- सामाजिक-नैतिक व्यवहार की मॉडलिंग, एवं
- लोकतांत्रिक खुले परिवार की चर्चा एवं संघर्ष समाधान शैली का कार्यान्वयन सकारात्मक रूप से नैतिकता के "निर्माण खंडों" से संबंधित है।

आइए अब उन विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें जिनके माध्यम से घर पर मूल्यों को विकसित किया जा सकता है:

अ) प्रेरण

बर्कोविट्ज़ और ग्रिच (1998) के अनुसार, प्रेरण को बच्चों के नैतिक विकास पर माता-पिता का सबसे शक्तिशाली प्रभाव माना जाता है। हॉफमैन (2001) बताते हैं कि प्रेरण में माता-पिता के मानकों को बच्चे तक पहुँचाने के लिए उनके साथ स्पष्टीकरण या तर्क का उपयोग शामिल है। इसमें बच्चे से तदनुसार कार्य करने का अनुरोध भी शामिल है तथा बच्चे के व्यवहार (बच्चे और दूसरे, दोनों, के लिए) के परिणामों पर बल दिया गया है। शायद यह इतना शक्तिशाली है, क्योंकि यह किसी विशेष व्यवहार को चुनने के कारणों के बारे में बच्चे की समझ को बढ़ाता है, साथ ही उन्हें यह भी दिखाता है कि उनके व्यवहार का किसी अन्य व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार, यह नैतिक कामकाज के संज्ञानात्मक (नैतिक तर्क) एवं भावनात्मक (सहानुभूति) पहलुओं को सीधे संबोधित करता है, एवं इन्हें जोड़ता है, तथा बच्चों में नैतिक व्यवहार के मानकों को आंतरिक करने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए अधिकतम प्रभाव डालने के लिए उन्हें उन मूल्यों एवं मान्यताओं को जानना होगा जो साथ हैं यानी हम सीधे, बताकर सिखाते हैं। हमें न केवल जिसका हम उपदेश देते हैं उसका अभ्यास करने की आवश्यकता है, बल्कि हमें उसका उपदेश देने की भी आवश्यकता है जिसका हम अभ्यास करते हैं।

यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करके कि किसी स्थिति में अन्य लोग कैसा महसूस कर सकते हैं अथवा सोच सकते हैं बच्चों की परिप्रेक्ष्य को समझने की क्षमताओं को भी बढ़ाता है। प्रेरण को नियोजित करने के कई अवसर हैं। सबसे स्पष्ट में से एक अनुशासन के संदर्भ में है। जब बच्चे अवज्ञा करते हैं, तब माता-पिता के पास अपने बच्चों को यह सिखाने का अवसर होता है कि क्या सही है एवं क्या ग़लत, तथा इससे भी महत्त्वपूर्ण बात कि कुछ व्यवहार अन्य व्यवहारों से बेहतर क्यों हैं।

जब माता-पिता किसी बच्चे से व्यवहार के बारे में बात करते हैं, तो यह भी महत्त्वपूर्ण है कि उनके संदेश बच्चे के तर्क के स्तर से थोड़ा (न कि अत्यंत) ऊपर हों। माता-पिता के लिए उस कार्यक्षेत्र पर ध्यान देना भी महत्त्वपूर्ण है जिसमें वे बच्चों के साथ काम कर रहे हैं। अधिनायकवादी माता-पिता उन मुद्दों को नैतिक बनाने की संभावना रखते हैं जो प्रकृति में सामाजिक या व्यक्तिगत हैं, जबकि अनुज्ञाकारी माता-पिता के पास बेहद व्यापक सीमाएँ हो सकती हैं जो नैतिक मुद्दों को भी बच्चे के विवेक पर छोड़ देती हैं। पालन-पोषण की अधिक उपयुक्त शैली नैतिक, सामाजिक-पारंपरिक एवं व्यक्तिगत के बीच स्पष्ट सीमाएँ खींचती है। बातचीत की अनुमति दी जा सकती है, किंतु व्यक्तिगत एवं पारंपरिक दायरे के बिना (स्मेताना, 1999)।

ब) पोषण एवं सहायता प्रदान करके

घर पर मूल्य विकास का एक अन्य तत्त्व घर में अपनाई गई पालन-पोषण शैली है। पालन-पोषण की शैली तीन प्रकार की हो सकती है: एकतंत्रीय, आधिकारिक तथा अनुदार। बॉमरिंड (1980) के अनुसार, आधिकारिक प्रकार के पालन-पोषण में कुत्सित नैतिक-भावनात्मक पैटर्न को रोका जाता है, क्योंकि यह सामाजिक संवेदनशीलता, आत्म-जागरूकता एवं नियमों तथा अधिकार के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है। अतः, आधिकारिक परिवारों में, बातचीत के लिए सौहार्दपूर्ण, पारस्परिक रूप से सकारात्मक बुनियाद होती है। यह बच्चों में विवेक एवं नैतिक तर्क के विकास को बढ़ावा देती है, जो मूल्य विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

सौहार्दपूर्ण एवं संवेदनशील पालन-पोषण का एक प्रभाव इस विचार का संचार है कि बच्चा मूल्यवान है तथा ऐसे व्यवहार के योग्य है जो सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करने में मदद करता है। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसे व्यक्ति का विकास होता है जो दूसरों के विचारों का सम्मान करता है तथा मानता है कि ऐसा कुछ करना गलत है जो दूसरे को ठेस पहुँचाता है।

स) मॉडलिंग के माध्यम से

सामाजिक शिक्षण सिद्धांत सुझाव देता है कि हम सामाजिक अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं और हमारा व्यवहार तथा कार्य उसी के अनुरूप होते हैं जैसा कि हम दूसरों में देखते हैं। इस प्रकार, मॉडलिंग मूल रूप से उस व्यवहार का अनुकरण है जिसका पालन परिवार के सदस्य करते हैं। जब एक बच्चे को नैतिक रूप से व्यवहार करने वाले मॉडल प्रदान किए जाते हैं तो वह बच्चा देखे गए कार्यों को अपनाने के लिए प्रवृत्त होता है। जब बच्चे अपने माता-पिता की एक-दूसरे के साथ, परिवार के सदस्यों के साथ एवं आम तौर पर लोगों के साथ बातचीत को करीब से देखते हैं, तो ऐसे अवलोकनों से वे दूसरों के साथ व्यवहार करने के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। जैसे, माता-पिता दूसरों के प्रति सम्मान एवं करुणा का आदर्श बना सकते हैं, वैसे ही वे ऐसे व्यवहार का भी आदर्श बना सकते हैं जो

हानिकारक या अपमानजनक हो। उदाहरण के लिए, जो माता-पिता असहमति को आक्रामकता अथवा दूसरों का अनादर करके सुलझाते हैं, उनके बच्चे भी उन्हीं मूल्यों को अपनाते हैं। हालाँकि बच्चे अपने द्वारा देखे गए विशिष्ट व्यवहारों की नक़ल नहीं कर सकते हैं, लेकिन अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना है, इसके बारे में उनकी मान्यताएँ और दृष्टिकोण ऐसे पारिवारिक अनुभवों से अच्छी तरह से आकार ले सकते हैं।

इसलिए, उचित व्यवहार प्रदर्शित करना, उनका स्पष्ट रूप से वर्णन करना और बच्चों के प्रश्नों का स्पष्टता से उत्तर देना आवश्यक है। इसी तरह, सामाजिक-समर्थक व्यवहार जैसे कि अपने बच्चों के साथ सब कुछ साझा करने से लेकर दान में योगदान पर चर्चा करने तक, बच्चों को सिखाते हैं कि उन्हें दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। माता-पिता का मॉडलिंग बच्चे के विकास पर एक शक्तिशाली प्रभाव हो सकता है। माता-पिता को पारिवारिक बातचीत और सामाजिक संबंधों में अपने व्यवहार के प्रति सावधान रहना चाहिए। जब तक माता-पिता और माता-पिता दोनों के बीच संबंध सुरक्षित नहीं होंगे, बच्चा दूसरों के साथ भावनाओं को साझा नहीं कर पाएगा। इसके अलावा माता-पिता अपने बच्चों को अन्य लोगों के साथ अच्छे पारस्परिक संबंध रखने के लिए नहीं कह सकते, जब तक कि दूसरों के साथ उनके अपने संबंध ईमानदारी से स्थापित न हो जाएं।

द) लोकतांत्रिक पारिवारिक निर्णय-प्रक्रिया के माध्यम से

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, माता-पिता को उन्हें विभिन्न नैतिक एवं सामाजिक मुद्दों पर दृष्टिकोणों तथा मनोभावों का आदान-प्रदान करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। उन्हें बच्चों को पारिवारिक निर्णय लेने में भी भाग लेने की अनुमति देनी चाहिए। माता-पिता-बच्चे की मौखिक बातचीत, जैसे चर्चा करना, बहस करना या योजना बनाना सामाजिक विकास में मदद करने के अन्य तरीके हैं। पारंपरिक परिवारों में, बच्चों को आम तौर पर माता-पिता एवं बड़े वयस्कों की आज्ञा मानना तथा उनका सम्मान करना सिखाया जाता है। उनके साथ राय एवं दृष्टिकोण का आदान-प्रदान करने का अवसर असंभव है। यह महत्त्वपूर्ण है कि परिवार को पारिवारिक चर्चाओं, निर्णयों एवं संघर्ष समाधान प्रक्रियाओं में सार्थक योगदान के रूप में बच्चों के मत का सम्मान करना चाहिए। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि उनकी आवाज़ को महत्त्व दिया जाता है और पारिवारिक चर्चाओं में उनकी भागीदारी के लिए स्नेहपूर्ण समर्थन प्रदान किया जाता है। इस दृष्टिकोण के लिए माता-पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों के दृष्टिकोण पर विचार करके उनका सम्मान करें। यह:

- बच्चे को अपनी आवश्यकताओं के साथ-साथ दूसरों की आवश्यकताओं के बारे में भी सोचना सिखाता है;
- संघर्ष समाधान के कौशल में आवश्यक अभ्यास प्रदान करता है, जो बेहतर मानवीय संबंधों के लिए महत्त्वपूर्ण है;
- समस्या की प्रकृति एवं उस पर दृष्टिकोण की आपसी समझ हासिल करने में मदद करता है और समस्या को सुलझाने में सकारात्मक मूल्यों को विकसित करने का सबसे अचूक उदाहरण के द्वारा पढ़ाना है।

ई) बच्चों में अच्छा पढ़ने की आदतें विकसित करने में मदद करके

बच्चे किताबें पढ़कर, रेडियो सुनकर तथा टेलीविजन अथवा फ़िल्में देखकर सामाजिक दुनिया के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, घर तथा परिवार, शहरी तथा ग्रामीण जीवन, व्यवसाय तथा विभिन्न संस्कृतियों एवं राष्ट्रीयताओं के लोगों के बारे में किताबें, लोगों की सफ़लता की कहानियां, एक दयालु पुरुष या महिला, सभी, सामाजिक संसार में जीवन के बारे में महत्त्वपूर्ण तथ्य तथा विचार बताते हैं जो बच्चों के लिए सीधे अनुभव करना कठिन है।

च) महत्त्वपूर्ण पहचान के माध्यम से

पहचान एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति को सोचने, महसूस करने एवं व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है जैसे कि उसके पास महत्त्वपूर्ण अन्य व्यक्ति की विशेषताएं हैं जिन्हें 'पहचान का मॉडल' कहा जाता है। वास्तव में, पहचान वह मूल प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे नैतिक मानक तथा व्यवहार सीखते हैं| बच्चे लगातार अपने माता-पिता के समान महसूस करना चाहते हैं; एक शक्तिशाली माता-पिता के साथ यह पहचान एक छोटे बच्चे के लिए सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हो सकती है। अधिकांश माता-पिता उन विशेषताओं के बारे में जो वे अपने बच्चों में देखना चाहते हैं, तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए बच्चे के पालन-पोषण के जिन तरीक़ों का उपयोग वे करेंगे के विषय में कुछ विशवास प्रदर्शित करते हैं। इसी संदर्भ में, माता-पिता के सौहार्द को कई कारणों से समाजीकरण प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। सबसे पहले, बच्चा माता-पिता की स्वीकृति चाहेगा तथा प्यार अथवा स्नेही माता-पिता के खोने की संभावना से व्यथित महसूस करेगा। दूसरा, बच्चे को सामाजिक नियमों को आत्मसात करना तथा एक स्नेही एवं देखभाल करने वाले माता-पिता के साथ पहचान बनाना सिखाना आसान है। तीसरा, माता-पिता द्वारा सौहार्द एवं पालन-पोषण बच्चे में सुरक्षा, कम चिंता तथा उच्च आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ पाया जाता है। यह पाया गया है कि बच्चों के पालन-पोषण की प्रथाएँ मूल्यों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। जो माता-पिता बच्चे से उसके दुर्व्यवहार के बारे में बात एवं तर्क करते हैं, वे संभवतः बच्चे को यह स्पष्ट समझ प्रदान करते हैं कि उसने क्या अनुचित कार्य किया है। यदि माता-पिता के अपने मूल्य अत्यधिक कठोर न हों तो बच्चों में मूल्य विकास सुगम होता है।

बोध प्रश्न 3

1. उन विभिन्न तरीक़ों की सूची बनाएं जिनके द्वारा घर पर मूल्यों का विकास किया जा सकता है। (40 शब्द)

   ……..

   ……..

   ……..

2. मॉडलिंग को एक प्रक्रिया के रूप में समझाइये। (40 शब्द)

   ……..

   ……..

   ……..

1.8 प्रतिवेश एवं साथियों की भूमिका

आप जानते हैं कि जैसे-जैसे व्यक्ति बड़े होते हैं, उनकी सामाजिक दुनिया का विस्तार होता है। वे अपने घरों के बाहर एवं अपने आस-पड़ोस के अन्य व्यक्तियों को खेलने तथा अपने मानसिक विचारों को साझा करने के लिए अपने साथी के रूप में देखना शुरू कर देते हैं। व्यक्तियों का प्रतिवेश वह स्थान है जहां वे अपने घरों और स्कूलों के अलावा अपना अधिकांश समय बिताते हैं। पड़ोस की अवधारणा के भौतिक तथा सामाजिक दोनों अर्थ हैं। लेकिन सामाजिक अर्थ अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यक्तियों की सामाजिक समानताओं द्वारा चिह्नित होता है। उनकी रुचियों में बदलाव के साथ घर के बाहर साथियों के साथ रहने और उनके द्वारा स्वीकार किए जाने की इच्छा बढ़ती है। सामाजिक बनना प्रमुख विकासात्मक कार्यों में से एक है। बच्चे अपने साथियों के समूह के सदस्य बन जाते हैं, जिससे धीरे-धीरे उनके दृष्टिकोण तथा व्यवहार पर परिवार का प्रभाव कम हो जाता है।

यह देखा गया है कि आम तौर पर समुदाय में प्रचलित परंपराएं, रीति-रिवाज, रिश्तों के मानदंड एवं अंतर-व्यक्तिगत बातचीत घर पर माता-पिता तथा बच्चों के बीच विभिन्न प्रथाओं और बातचीत के ढाँचे को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। अतः, जिस सामुदायिक संदर्भ में बच्चा बड़ा हो रहा है, उसकी शारीरिक, मनोसामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का, घर के बाद, बच्चे के मूल्य विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। पड़ोस एक ऐसा स्थान है जहां असामाजिक आचरण के लिए एक शक्तिशाली सामाजिक अस्वीकृति है, तथा इस प्रकार यह उन गतिविधियों में शामिल होने के विरुद्ध एक जांच के रूप में कार्य करता है जो सामाजिक कल्याण के लिए हानिकारक हैं।

स्कूलों एवं अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की तुलना में, प्रतिवेश अत्यंत कम संरचित है। परिवार की तुलना में यह अधिक सार्वजनिक है; लेकिन व्यक्तियों के सामाजिक विकास के लिए, "मैं-अन्य" संबंधों की खोज तथा समझ के लिए इसकी क्षमता को कम नहीं आंका जाना चाहिए। घरों और स्कूलों के विपरीत, जो अत्यधिक नियंत्रित स्थल हैं, पड़ोस व्यवहार पर बहुत कम प्रतिबंधात्मक हैं। इस प्रकार, क्या पड़ोस अन्वेषण एवं खोज के अवसरों के स्थल हैं, अथवा भोग के लिए खतरे वाले क्षेत्र हैं, यह बहुत हद तक उन गतिविधियों पर निर्भर करता है जिनमें व्यक्ति भाग लेते हैं। यह बदले में, उन साथियों के प्रकार पर निर्भर करता है जिन्हें वे रखना चुनते हैं। नैतिक शिक्षा के उद्देश्य से, यदि सामुदायिक सेवा में उनकी भागीदारी बढ़ाकर उचित गतिविधियों की व्यवस्था की जा सकती है, तो पड़ोस एक ऐसा स्थान हो सकता है जहां "दूसरों के लिए सम्मान" मानक है।

पड़ोस मूल्य विकास का उतना ही महत्वपूर्ण स्रोत है जितना कि परिवार। पड़ोस का हिस्सा बनने वाले सामाजिक समूह, जैसे गिरोह एवं सहकर्मी समूह, भी सकारात्मक मूल्यों के विकास के संदर्भ में व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। हैवीगर्स्ट (1942) द्वारा परिभाषित सहकर्मी समूह लगभग एक ही उम्र के लोगों का एक समूह है जो एक साथ अनुभव करते हैं तथा कार्य करते हैं। बच्चे अपने अहंकारी हितों को उन प्रणालियों में पुनर्निर्देशित करना सीखते हैं जो समूह के हित को बढ़ावा देते हैं और इस प्रकार अन्य केंद्रितता की ओर बढ़ते हैं।

सामान्य तौर पर साथियों के साथ बातचीत तथा विशेष रूप से साथियों के बीच टकराव एवं बहस, दूसरे के दृष्टिकोण को स्वीकार करना सीखने के लिए आवश्यक शर्तें हैं। ऐसी बातचीत

के दौरान, बच्चे को अपने स्वयं के तर्कों की जांच करने के लिए मजबूर किया जाता है। इसलिए, बच्चे को अन्य दृष्टिकोणों पर विचार करना सिखाने के लिए साथियों के साथ अनुभवों की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे भूमिका निभाने की क्षमताएं उभरती हैं, बच्चा दूसरों के साथ सहयोग एवं चर्चा जैसे पारस्परिक सामाजिक व्यवहार में संलग्न हो जाता है। पियाजे ने एक द्वि-दिशात्मक कारण संबंध का सुझाव दिया: भूमिका निभाने के कौशल के विकास के लिए सहकर्मी बातचीत एक आवश्यक कारक है। किसी सामाजिक समूह में किसी व्यक्ति की भागीदारी जितनी अधिक होगी, उसके पास दूसरों के सामाजिक दृष्टिकोण के लिए उतने ही अधिक अवसर होंगे।

इस प्रकार, सहकर्मी रिश्ते निस्संदेह बच्चों में सामाजिक मूल्यों के विकास में एक सार्थक भूमिका निभाते हैं। अच्छे सामाजिक मूल्यों वाला बच्चा नेतृत्व जैसे कई क्षेत्रों में उच्च सामाजिक क्षमता तथा दूसरों के साथ घुलने-मिलने की क्षमता के कारण साथियों के बीच लोकप्रिय होने की संभावना रखता है। विकासात्मक एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, सामाजिक परिप्रेक्ष्य वह केंद्रीय तंत्र है जो एक बच्चे के पास दूसरे के दृष्टिकोण से अपने व्यवहार को समझने की क्षमता प्राप्त करने के लिए होता है। यह क्षमता बच्चे को यह पहचानने की आवश्यकता बताती है कि दूसरों के विचार और भावनाएँ स्वयं से भिन्न हो सकती हैं, उसे दूसरों के दृष्टिकोण को आंतरिक रूप से ध्यान में रखना सीखना चाहिए। यह उसे किसी विशेष मुद्दे के बारे में अपने विचार और महसूस करने के तरीके को पुनर्गठित करने में सक्षम बनाता है। एक बार जब बच्चा यह कौशल विकसित कर लेता है, तो वह विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अन्य लोगों के साथ अधिक सटीक रूप से संवाद कर सकता है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य लेने का कौशल वांछनीय सामाजिक संज्ञान जैसे नैतिक तर्क तथा समस्या-समाधान और सामाजिक व्यवहार जैसे बेहतर सहकर्मी बातचीत एवं व्यवहारिक समायोजन के लिए एक शर्त है। जैसा कि पहले चर्चा की गई है, माता-पिता सामाजिक परिप्रेक्ष्य लेने को बढ़ावा दे सकते हैं। माता-पिता और बच्चे के बीच सौहार्दपूर्ण, स्नेहपूर्ण एवं पोषण संबंधी रिश्ता बच्चे को सुरक्षित एवं आरामदायक महसूस कराता है, तथा इस प्रकार आत्म-चिंता, भय अथवा वैमनस्य की भावना को कम करता है, साथ ही उसे दूसरों के विचारों तथा भावनाओं से अवगत कराता है।

जिन व्यक्तियों को सामाजिक भूमिकाएँ निभाने, एवं ज़िम्मेदारियाँ लेने के अधिक अवसर मिलते हैं, उदाहरण के लिए, काम एवं सामुदायिक गतिविधियों (जैसे, सामुदायिक सेवा, पाठ्येतर) में उनकी भागीदारी एवं सामाजिक रूप से विनियमित व्यवहारों (जैसे, ड्राइविंग, धूम्रपान, मदिरा सेवन, सेना में शामिल होना) को नैतिक निर्णय लेने में मदद की जाती है। कई किशोरों के बीच मीडिया (जैसे, इंटरनेट, पत्रिकाएं, फ़िल्म) की पहुंच एवं साक्षरता स्तर अतिरिक्त अद्वितीय तथा महत्त्वपूर्ण सामाजिक अनुभव प्रदान करते हैं जिन्हें कम करके नहीं आंका जा सकता है। किशोरों के पास न केवल नवीन नैतिक जानकारी तक पहुंच है बल्कि वे अपनी नैतिक मान्यताओं एवं कार्यों को दूसरों तक प्रचारित करने में भी सक्षम हैं।

पियाजे ने सहकर्मी संबंधों के महत्त्व की भी पहचान की है। उनके अनुसार, साथी प्राणियों के साथ निरंतर बातचीत के बाद एक व्यक्ति को निष्पक्षता तथा न्याय की बेहतर समझ प्राप्त होती है। सहकर्मी बातचीत पारस्परिकता एवं खुली चर्चा के सिद्धांत के आधार पर सामाजिक-समर्थक व्यवहार के अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा, साथियों के साथ ये बातचीत

व्यक्तियों को समान स्तर के अन्य लोगों के साथ तुलना करके अपने स्वयं के नैतिक स्वरूप के बारे में समझ हासिल करने का अवसर प्रदान करती है। सहकर्मी फीडबैक का भी एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं जो सामाजिक-समर्थक व्यवहार को बढ़ावा देने या कम करने में मदद कर सकते हैं। अतः, एक सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्तियों के बीच सकारात्मक मूल्यों के विकास के लिए एक शक्तिशाली आधार प्रदान करती है।

इस प्रकार, अब आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पड़ोस एवं सहकर्मी संबंधों की गुणवत्ता यह निर्धारित करती है कि कोई व्यक्ति अपने जीवन में किस प्रकार के मूल्यों को लेकर आगे बढ़ेगा।

बोध प्रश्न 4

1. घर की तुलना में प्रतिवेश के माध्यम से मूल्य विकास किस प्रकार भिन्न है? (40 शब्द)

   ……..

   ……..

   ……..

2. मूल्य विकास में सहकर्मी संबंधों का क्या महत्त्व है? (40 शब्द)

   ……..

   ……..

   ……..

1.9 सारांश

इस इकाई में हमने चर्चा की है कि मूल्य प्रत्येक संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। स्वयं से उत्पन्न होने वाली मान्यताओं के साथ-साथ वे व्यक्तियों के व्यवहार पर भी प्रभाव डालते हैं। हममें से अधिकांश ने अपने मूल्य घर, स्कूल या अपने समुदाय (पड़ोस) से सीखे। अधिकतर, जिन मूल्यों का हम पालन करते हैं वे माता-पिता, शिक्षकों एवं धार्मिक नेताओं से सीखे जाते हैं। मूल्यों का विकास तीन चरणों में होता है अर्थात् छाप, मॉडलिंग तथा समाजीकरण। माता-पिता प्राथमिक सामाजिक माध्यम हैं जो अपने बच्चों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों का संचार करते हैं।

यह सर्वविदित है कि दूसरों का व्यवहार बच्चों के कार्य करने के तरीक़े पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। ये व्यवहार जो किसी व्यक्ति के मूल्यों को प्रभावित कर सकते हैं, उन्हें निम्नलिखित प्रक्रियाओं द्वारा विकसित किया जा सकता है: माता-पिता द्वारा प्रेरण का उपयोग, पोषण तथा समर्थन की अभिव्यक्ति, मांग और सीमा निर्धारण का उपयोग, सामाजिक-नैतिक व्यवहार की मॉडलिंग एवं एक लोकतांत्रिक खुली पारिवारिक चर्चा का कार्यान्वयन, और संघर्ष समाधान शैली सकारात्मक रूप से नैतिकता के "निर्माण खंडों" से संबंधित हैं। हमने यह भी चर्चा की है कि परिवार तथा प्रतिवेश व्यक्ति के बीच मूल्यों के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं।

1.10 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मूल्य शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा धारण की गई मूल्य प्रणाली को सुधारने और उसका उपयोग करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है। एक बार जब हम जीवन में अपने मूल्यों को समझ जाते हैं, तो हम अपने जीवन में चुने गए विभिन्न विकल्पों की जांच और नियंत्रण कर सकते हैं।
2. समाजीकरण चरण

बोध प्रश्न 2

1. समाजीकरण समाज के मानदंडों और संस्कृति को विरासत में देने की एक प्रक्रिया है। यह व्यक्तियों को अपने समाज में भाग लेने के लिए आवश्यक कौशल तथा आदतें प्रदान कर सकता है; एक समाज स्वयं अनेक साझा मानदंडों, रीति-रिवाजों, मूल्यों, परंपराओं, सामाजिक भूमिकाओं, प्रतीकों एवं भाषाओं के माध्यम से बनता है।
2. अन्य धर्मनिरपेक्ष आदर्शों के अधिकारों एवं इच्छाओं के प्रति सहिष्णुता और सम्मान जैसे मूल्यों का बुनियादी आधार घर के माहौल या परिवार की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

बोध प्रश्न 3

1. मॉडलिंग के माध्यम से, पहचान के माध्यम से अच्छी अध्ययन आदतें विकसित करना।
2. मॉडलिंग सीखने की एक प्रक्रिया है जहां एक व्यक्ति सामाजिक अनुभवों के माध्यम से सीखता है तथा हमारा व्यवहार और कार्य उसी के आधार पर होता है जैसा हम दूसरों से मॉडल करते हैं।

बोध प्रश्न 4

1. पड़ोस के माध्यम से, परंपराओं, रीति-रिवाजों, रिश्तों के मानदंडों एवं पारस्परिक बातचीत को सीखा जाता है जबकि परिवार में बातचीत पारिवारिक मानदंडों, रीति-रिवाजों आदि तक ही सीमित होती है।
2. सहकर्मी बातचीत के माध्यम से, एक व्यक्ति निष्पक्षता तथा न्याय की बेहतर समझ हासिल करता है, और सामाजिक व्यवहार, पारस्परिकता के सिद्धांत एवं खुली चर्चा को लागू करने के अवसर भी प्राप्त करता है।

1.11 संदर्भ

बर्कोविट्ज़, एम.डब्ल्यू. और ग्रिच, जे.एच. (1998)। अच्छाई को बढ़ावा देना: माता-पिता को बच्चों के नैतिक विकास को बढ़ावा देना सिखाना। जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन, 27(3), 371-391।

भारद्वाज, टी.के., (2001)। मानवीय मूल्यों की शिक्षा, पृष्ठ 279-287, मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली

क्लॉसन, जॉन ए. (सं.) (1968)। समाजीकरण और समाज, बोस्टन: लिटिल ब्राउन एंड कंपनी।

चिनॉय, एली (1961) सोसाइटी: एन इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी, न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस

फ़र्ज़, बी. और हीली, पी. (1997)। स्टैफ़ोर्ड, सी. और फर्ज़, बी. (एड) सोसाइटी एंड

चेंज (द्वितीय संस्करण), मैकमिलन एजुकेशन ऑस्ट्रेलिया, मेलबर्न में "अंडरस्टैंडिंग सोसाइटी एंड चेंज"

ग्रुसेक, जे.ई., गुडनाउ, जे, और कुकिज़ंस्की एल. (2000)। बच्चों के मूल्यों के अधिग्रहण में पालन-पोषण के योगदान के विश्लेषण में नई दिशाएँ। बाल विकास, 71(1), 205-211.

हैवीगर्स्ट, आर.जे., और प्रेस्कॉट, डी.ए., और रेडल, एफ. (1942)। "विकासशील लड़कों और लड़कियों के वैज्ञानिक अध्ययन ने दिशानिर्देश स्थापित किए हैं" बी.एल. में।

जॉनसन (सं.). अमेरिकन हाई स्कूल में सामान्य शिक्षा, (पीपी. 105-135) शिकागो: स्कॉट फ़ोर्समैन एंड कंपनी।

पियागेट जीन (1978)। व्यवहार और विकास, नोपफ प्रकाशन समूह।

राव, नलिनी (1989)। युवाओं और बच्चों का समाजीकरण, राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक सहयोग, आगरा।

स्मेताना, जे.जी. (1999)। नैतिक विकास में माता-पिता की भूमिका: एक सामाजिक डोमेन विश्लेषण। जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन, (28)3

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 स्कूल और सहकर्मी

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 सहकर्मी

- 2.3.1 सहकर्मी कौन हैं?
- 2.3.2 सहकर्मी विकास
- 2.3.3 सहकर्मी संबंध
- 2.3.4 सहकर्मी प्रभाव एवं सहकर्मी दबाव
- 2.3.5 सहकर्मी समूह एवं उनका प्रभाव
- 2.3.6 सहकर्मियों के माध्यम से मूल्य विकास

2.4 स्कूल एवं सहकर्मियों के माध्यम से मूल्यों का समावेश

- 2.4.1 सहकर्मी नेता कार्यक्रम
- 2.4.2 सहयोगात्मक अधिगम पद्धतियाँ
- 2.4.3 युवा संगठन
- 2.4.4 खेल क्लब

2.5 अन्य पहल--गतिविधियों के माध्यम से सहकर्मी अधिगम

- 2.5.1 आत्मसम्मान का विकास करना एवं आत्मविश्वास पैदा करना
- 2.5.2 सकारात्मक व्यक्तित्व लक्षणों को पहचानना
- 2.5.3 बच्चों को अच्छे विकल्प चुनने एवं उनके लिए खड़े होने में मदद करना
- 2.5.4 दूरदर्शिता शिक्षण
- 2.5.5 निर्णयों का मूल्यांकन करना सीखना

2.6 सारांश

2.7 बोध प्रश्न के उत्तर

2.8 सन्दर्भ

2.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसे दूसरों की संगति एवं समाज की आवश्यकता होती है। इस पाठ्यक्रम की इकाई एक में आपने सीखा है कि समाजीकरण विभिन्न प्रकार की अन्योन्यक्रियाओं एवं सामाजिक मिलन से उत्पन्न होता है।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनके सामाजिक संसार का भी विस्तार होता है। वे साहचर्य के लिए अपने घर के बाहर अपने पड़ोस एवं स्कूल के अन्य बच्चों की ओर देखना शुरू करते हैं| समाजीकरण करना इस अवधि के प्रमुख विकासात्मक कार्यों में से एक है| बच्चे एक 'सहकर्मी

समूह' के सदस्य बन जाते हैं जिससे धीरे-धीरे उनके दृष्टिकोण, विचार एवं व्यवहार पर परिवार का प्रभाव कम हो जाता है। सहकर्मी सम्बन्ध बच्चों के व्यवहार को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चे अपने समान आयु वर्ग, श्रेणी अथवा मित्र मंडली के अन्य लोगों की तरह सोचते तथा व्यवहार करते हैं, और 'फिट' होने की इच्छा रखते हैं|

आपने यह भी सीखा कि भावनात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए बच्चों को एक संतुलन प्राप्त करने की आवश्यकता है जो उन्हें मूल्यों के संयोजन के आधार पर निर्णय लेने में मदद करता है - परिवार से सीखे गए मूल्य, स्वतंत्र रूप से सोचने से प्राप्त मूल्य एवं दोस्तों तथा अन्य रोल मॉडल से प्राप्त मूल्य।

स्पष्ट लेकिन निष्पक्ष मूल्य प्रणाली प्रदान करना, व्यवहार के सकारात्मक मॉडल पैटर्न स्थापित करना एवं सकारात्मक शैक्षणिक, एथलेटिक, कलात्मक और सामाजिक गतिविधियों में संलग्न सहकर्मी समूहों के गठन को प्रोत्साहित करना ऐसे तरीके हैं जिनसे परिवार तथा स्कूल साथियों के दबाव को एक सकारात्मक शक्ति बना सकते हैं। इस इकाई में, हम स्कूल एवं साथियों के माध्यम से मूल्यों को सिखाने के महत्त्व पर प्रकाश डालेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप सक्षम होंगे:

- सहकर्मी संबंधों के महत्व पर चर्चा करने के
- साथियों के दबाव एवं प्रत्येक बच्चे पर इसके प्रभाव पर चर्चा करने के
- यह समझाने के कि सहकर्मी समूहों की राय क्यों महत्वपूर्ण है
- वर्णन करने के कि स्कूल तथा सहकर्मी मूल्य विकास में कैसे मदद कर सकते हैं; एवं
- चर्चा करने के कि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से साथियों द्वारा सीखना कैसे होता है

2.3 सहकर्मी

हमारे संदर्भ में 'सहकर्मी' शब्द का अर्थ एक ऐसा व्यक्ति है जो क्षमताओं, योग्यताओं, आयु, पृष्ठभूमि एवं सामाजिक स्तर में दूसरे के बराबर है।

2.3.1 सहकर्मी कौन हैं?

सहकर्मी वे व्यक्ति होते हैं जिनके साथ हम अपनी पहचान बनाते हैं। हमारे सहकर्मी हमारे मित्र हैं तथा वे लोग जो हमारे क़रीबी हैं जिनके साथ हम अपना अधिकांश समय बिताते हैं एवं जिनके साथ हम समान रुचियों और भावनाओं को साझा करते हैं। सहकर्मी हमारे समान विचारधारा वाले मित्र और साथी हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं और अधिक स्वतंत्र होते हैं, हमारे साथी हमारे जीवन में बड़ी भूमिका निभाते हैं, यहां तक कि हमारे माता-पिता एवं भाई-बहनों से भी अधिक। वे हमारे विस्तारित परिवार की तरह हैं। साथियों के बीच मित्रता एवं स्वीकार्यता हो सकती है। हम उनके साथ कुछ भी साझा कर सकते हैं जो बदले में हमें गहरा संबंध बनाने में मदद करता है।

2.3.2 सहकर्मी विकास

जैसे-जैसे जीवन का पहला वर्ष आगे बढ़ता है, बच्चे तीव्रता से मिलनसार होते जाते हैं। स्पर्श, मुस्कुराहट, बड़बड़ाहट तथा हावभाव बहुत अधिक समन्वित होते जाते हैं। बच्चे एक साथ खिलौनों से खेलना शुरू करते हैं। जीवन के दूसरे वर्ष के दौरान बच्चों का पारस्परिक विचार-विमर्श बढ़ जाता है, जैसे कि 2 साल के बच्चे, 2 साल की उम्र तक, अक्सर एक-दूसरे का पीछा करते हैं एवं खिलौनों के साथ मिलकर खेलते हैं, तथा निश्चित रूप से 3 साल की उम्र तक, बच्चे स्पष्ट रूप से कुछ बच्चों को दूसरों से अधिक पसंद करने लगते हैं। यानी, वे दोस्त बनाने लगते हैं|

पूर्वस्कूली उम्र के वर्षों के दौरान सहकर्मी संबंध काफी हद तक विकसित होते हैं। प्रारंभिक-स्कूल के वर्षों के दौरान, साथियों के साथ बातचीत और भी अधिक जटिल हो जाती है; बच्चे साथियों के साथ जो खेल खेलते हैं वे भी अधिक परिष्कृत होते हैं। बच्चे अपने दोस्तों के साथ बात करने, समान रुचियों वाले लोगों के साथ विचार तलाशने में बहुत समय बिताते हैं। ग्रेड-स्कूल के वर्षों के दौरान, बच्चे अपने पड़ोस में रहने वाले बच्चों के साथ समय बिताने के बजाय उन बच्चों के साथ समय बिताते हैं जिनके साथ वे रहना चाहते हैं। प्रारंभिक वर्षों में शारीरिक लड़ाई-झगड़े कम हो जाते हैं; साझा करना एवं एक दूसरे की मदद करना बढ़ जाते हैं।

किशोरावस्था के आरंभ के साथ मित्रता की प्रगाढ़ता एवं उसका महत्त्व भी बढ़ने लगता है। किशोर अक्सर 5 से 10 व्यक्तियों के सहकर्मी समूह का हिस्सा होते हैं जिन्हें गुट कहा जाता है, जो उनके लिए महत्त्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, हाई स्कूलों में पाई जाने वाली कुछ विशिष्ट भीड़ को जॉक्स, दिमाग, ड्रगी तथा नर्ड के रूप में पहचाना जा सकता है।

साथियों के साथ मेलजोल एवं मित्रता स्पष्ट रूप से शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बढ़ती है। बढ़ती उम्र के साथ, बातचीत अधिक जटिल एवं अधिक निश्चित रूप से सामाजिक होती है। किशोर संबंधों के पदानुक्रम में भाग लेते हैं, ऐसी भीड़ के सदस्य होते हैं जो जीवनशैली तथा सामान्य रुचियों को साझा करते हैं और साथ ही ऐसे गुटों का हिस्सा होते हैं जो क़रीबी दोस्त होते हैं।

2.3.3 सहकर्मी संबंध

बच्चों में सामाजिक कौशल के विकास में सहकर्मी सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण एवं रचनात्मक भूमिका निभाते हैं। बच्चे अपने अहंकार-केंद्रित हितों को उन तरीक़ों पर पुनर्निर्देशित करना सीखते हैं जो सहकर्मी समूह के हितों को बढ़ावा देते हैं, और इस प्रकार आत्म-केंद्रितता से अन्य-केंद्रितता की ओर बढ़ते हैं। साथियों के साथ बातचीत तथा साथियों के बीच टकराव ऐसी आवश्यक स्थितियाँ हैं जिनमें एक बच्चा दूसरे के दृष्टिकोण को स्वीकार करना सीखता है। ऐसी बातचीत के दौरान, बच्चा अपने स्वयं के तर्कों की जांच करना सीखता है। सहकर्मी समूह के साथ इस अनुभव की आवश्यकता बच्चे के अहं-केंद्रवाद को तोड़ने, एवं उसे अपने दृष्टिकोण के अलावा अन्य दृष्टिकोणों पर विचार करने की क्षमता प्रदान करने के लिए होती है। जैसे-जैसे बच्चे विभिन्न भूमिकाओं को निभाने की क्षमताओं में निपुण होते जाते हैं, वे सामाजिक व्यवहार में संलग्न होना शुरू कर देते हैं जिसमें टीम वर्क, सहयोग, चर्चा तथा दूसरों के साथ योजना बनाना, जैसे अन्य कार्य शामिल होते हैं। भूमिका निभाने के कौशल के विकास के लिए साथियों के साथ बातचीत एक आवश्यक कारक है। किसी सामाजिक समूह में बच्चे की

भागीदारी जितनी अधिक होगी, उसके सामाजिक कौशल उतने ही अधिक विकसित होंगे एवं उसके अपने साथियों के बीच लोकप्रिय होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

बच्चों के सामाजिक कौशल में सहकर्मी संबंध सार्थक भूमिका निभाते हैं। साथियों के साथ मेलजोल एवं मित्रता स्पष्ट रूप से शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बढ़ती है। बढ़ती उम्र के साथ, बातचीत अधिक जटिल तथा अधिक निश्चित रूप से सामाजिक होती है। हालाँकि, बहुत छोटे बच्चों के भी दोस्त बनाम परिचित होते हैं, एक क़रीबी मित्र तथा एक बड़ी भीड़ के सदस्य के बीच का अंतर बढ़ती उम्र के साथ और अधिक स्पष्ट हो जाता है। किशोर यह पता लगाते हैं कि वे कौन हैं, वे क्या बनना चाहते हैं, वे क्या सोचते हैं तथा कैसे जीना चाहते हैं। जिन बच्चों में नेतृत्व कौशल जैसे क्षेत्रों में उच्च सामाजिक क्षमता होती है, उनमें दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने की क्षमता रखते हैं। बच्चों को अपने ही आयु वर्ग के बच्चों के साथ बातचीत करने की अनुमति देकर, हम उन्हें अपने साथियों के साथ अच्छे सामाजिक संबंध बनाने में मदद करते हैं।

यह सामाजिक संपर्क एक ऐसा तंत्र है जिसके द्वारा एक बच्चा अपने व्यवहार को दूसरों के दृष्टिकोण से समझना शुरू करता है। इससे बच्चे को इस बात को पहचानने में मदद मिलती है कि दूसरों के विचार एवं भावनाएँ उसके विचारों एवं भावनाओं से भिन्न हो सकती हैं। वह दूसरों के दृष्टिकोण को मानना और स्वीकार करना सीखता है। इससे बच्चे को यह समझने में मदद मिलती है कि वह किसी विशेष मुद्दे के बारे में क्या सोचता एवं महसूस करता है। एक बार जब बच्चा यह कौशल विकसित कर लेता है, तो वह विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अन्य लोगों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है। ये 'सामाजिक परिप्रेक्ष्य' कौशल वांछनीय सामाजिक संज्ञान, जैसे नैतिक तर्क, समस्या समाधान, सोच तथा बेहतर सामाजिक व्यवहार, यानी साथियों के साथ बेहतर बातचीत एवं समायोजन के लिए आवश्यक हैं।

2.3.4 सहकर्मी प्रभाव एवं सहकर्मी दबाव

क्या आपको वह समय याद है जब आप छोटे थे? जब आप ठीक वैसा ही करना चाहते थे जैसा आपके समान आयु वर्ग के दोस्तों ने किया था? आप वही खिलौना चाहते थे, या साइकिल चाहते थे, जैसे कपड़े वे पहनते थे, वैसे ही कपड़े पहनना चाहते थे। सीधे शब्दों में कहें तो सहकर्मी प्रभाव का यही मतलब है। सहकर्मी दबाव एक व्यक्ति के सहकर्मी समूह द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से डाला गया दबाव है जो उस समूह में फिट होने के लिए उस व्यक्ति के दृष्टिकोण अथवा व्यवहार में बदलाव ला सकता है।

सभी व्यक्तियों के लिए यह स्वाभाविक है कि वे जिन लोगों के साथ बातचीत करते हैं, उनके साथ अपनी पहचान बनाएँ तथा उनसे अपनी तुलना करें। इस प्रक्रिया में वे एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं एवं प्रभावित होते हैं। मित्र हमें कई तरह से प्रभावित करते हैं - हमारे कपड़े पहनने के तरीक़े, सोचने के तरीक़े, निर्णय लेने के तरीक़े, चीज़ें ख़रीदने के तरीक़े, आदि।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं तथा उनके अनुरूप होने की आवश्यकता बढ़ती है - इससे पहले कि वे वास्तव में एक वयस्क की पहचान बना सकें - साथियों के प्रभाव का स्तर आम तौर पर बढ़ता है। जैसे-जैसे बच्चे परिवार से स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं, साथियों के प्रभाव के प्रति प्रतिरोध कम हो जाता है। प्री-स्कूल के बच्चों को सहकर्मी दबाव के बारे में सबसे कम जानकारी होती है तथा वे अनुरूप होने की आवश्यकता से सबसे कम प्रभावित होते हैं। हालाँकि, घर के बाहर

अधिक सामाजिक संपर्क एवं दूसरों के प्रति अधिक जागरूकता के साथ साथियों का प्रभाव बढ़ता है, एवं सहकर्मी प्रभाव अधिक होता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब यह प्रभाव सहकर्मी दबाव में बदल जाता है।

सहकर्मी दबाव तब होता है जब कोई व्यक्ति समान मूल्यों, विश्वासों एवं लक्ष्यों को अपनाने या सहकर्मी समूह की समान गतिविधियों में भाग लेने के लिए निहित अथवा व्यक्त अनुनय का अनुभव करता है। साथियों का दबाव सभी उम्र के लोगों पर होता है - एक छह साल का लड़का ज़िद करता है कि उसकी माँ उसे तुरंत खिलौने की दुकान पर ले जाए, ताकि उसे नवीनतम खिलौना अथवा गैजेट अथवा स्पोर्ट्स बाइक ख़रीदकर दे, क्योंकि 'उसके दोस्तों' के पास यह है। जब मां 'नहीं' कहती है तब वह ग़ुस्से में आ जाता है। एक दस साल की लड़की एक पार्टी में एक बार एक पोशाक पहनती है, तथ फिर उसे दोबारा पहनने से इंकार कर देती है, क्योंकि 'उसके दोस्तों' ने उसका मज़ाक़ उड़ाया है अथवा वह पोशाक फैशनेबल नहीं है। किशोर लड़के स्कूल के नायकों की तरह 'दोषहीन शरीर' पाने के लिए जिम में कसरत करते हैं, एवं लड़कियाँ स्कूल में सबसे आकर्षक लड़की की तरह दिखने के लिए स्वयं को भूखा रखती हैं। वे ऐसा अनुरूप बनने के लिए करते हैं।

किशोरावस्था के दौरान साथियों का दबाव चरम पर होता है, लेकिन यह कभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं होता है। यहां तक कि वयस्कों को भी वांछित समूह में शामिल होने के लिए अनुरूप होने का दबाव महसूस होता है तथा यह कार्यस्थल, प्रतिवेश, अथवा, यहां तक कि परिवार में भी हो सकता है। वयस्कों के रूप में हम समूह की मान्यताओं को स्वीकार करने एवं अपने स्वयं के व्यक्तित्व को बनाए रखने के बीच एक तर्कसंगत संतुलन पा सकते हैं। किंतु, पूर्व-किशोरों एवं किशोरों को अनुरूपता तथा साथियों के दबाव से संबंधित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वे दो विभिन्न दिशाओं में खींचे जाते हैं - एक व्यक्ति के रूप में देखे जाने की इच्छा तथा एक ऐसे समूह से संबंधित होने की इच्छा जहां वे सुरक्षित एवं स्वीकृत महसूस करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अक्सर बच्चे, विशेष रूप से किशोर, सामान्य रूप से परिवार एवं समाज के विचारों को नज़रअंदाज़ करते हैं, तथा अपने सहकर्मी समूह के मूल्यों के अनुरूप होने का दबाव महसूस करते हैं। इसका एक उदाहरण है जब युवा लोग गिरोह में शामिल होते हैं। गिरोह में शामिल होने के लिए, उन्हें गिरोह की अपनी पोशाक, व्यवहार और बोलने की शैली का पालन करना होता है| केवल तभी वे इसमें फिट हो पाएंगे। जबकि बच्चे अपने सहकर्मी समूहों के साथ तालमेल बिठाने की इस प्रक्रिया में शामिल होते हैं, वे साथियों के दबाव में आने के परिणामों को देखने में विफल रहते हैं।

2.3.5 सहकर्मी समूह एवं उनका प्रभाव

वेबस्टर डिक्शनरी द्वारा परिभाषित सहकर्मी समूह का अर्थ है 'समान स्थिति के समकालीन।' इस शब्द की एक विस्तारित परिभाषा यह है: "एक सहकर्मी समूह लगभग समान उम्र, सामाजिक स्थिति, एवं रुचि के लोगों का एक समूह है"। सहकर्मी समूह बढ़ते बच्चों, विशेषकर, किशोरों पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि यह वयस्कों को कितना मूर्खतापूर्ण लग सकता है, एक समूह से संबंधित होना एक बच्चे के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अभिप्रायापूर्ण बात है। सहकर्मी समूह एक ऐसी जगह है जहां बच्चे स्वीकृत महसूस करते हैं, जहां वे स्वयं कार्य कर सकते हैं, अपने बारे में अच्छा महसूस कर सकते हैं - उनका आत्मसम्मान बढ़ता है। यह आमतौर पर देखा जाता है कि बच्चों का जीवन

तब सरल हो जाता है जब वे अपने सहकर्मी समूहों के मूल्यों के अनुरूप होते हैं। युवा स्वाभाविक रूप से अन्य युवाओं की ओर आकर्षित होते हैं जिनकी समस्याएँ उन्हीं जैसी होती हैं तथा वे उन्हीं स्थितियों में होते हैं जिनमें वे स्वयं होते हैं और जहाँ उन्हें लगता है कि उन्हें समझा जाएगा एवं स्वीकार किया जाएगा। उस प्यास को संतुष्ट करने की बहुत प्रबल आवश्यकता है - स्वीकृति की आवश्यकता। 'अपनेपन' की भावना एक बहुत शक्तिशाली शक्ति है जो परिवार, स्कूल, समाज अथवा समुदाय से संबंधों पर भारी पड़ सकती है।

कुछ अन्य विशेषताएं जो सहकर्मी समूह अपनेपन की भावना और अकेले या सामाजिक रूप से अलग-थलग न होने के अलावा पेश करते हैं:

- एक शक्तिशाली विश्वास संरचना
- नियमों की एक स्पष्ट प्रणाली
- नशीली दवाओं, सेक्स, धूम्रपान, आदि जैसे वर्जित विषयों के बारे में संचार एवं चर्चा।

2.3.6 सहकर्मियों के माध्यम से मूल्य विकास

एक आम धारणा है कि बच्चों, विशेषकर किशोरों में सभी नकारात्मक व्यवहारों का कारण साथियों का दबाव है। हालाँकि, सफ़ल सर्वांगीण विकास के लिए सहकर्मी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं। सहकर्मी समूह स्नेह, सहानुभूति एवं समझ का स्रोत है; प्रयोग के लिए एक स्थान और बच्चों के दो प्राथमिक विकासात्मक कार्यों को प्राप्त करने के लिए एक सहायक व्यवस्था| सबसे पहले, "मैं कौन हूँ?" प्रश्न के उत्तर में अपनी पहचान ढूँढ़ना। एवं द्वितीय, अपने आप को माता-पिता से एक अलग और स्वतंत्र इकाई के रूप में खोजना। जबकि युवा लोग अक्सर इन आवश्यकताओं को परिवार के भीतर ही पूरा करते हुए पाते हैं, सहकर्मी समूह इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अद्वितीय एवं अलग अवसर प्रदान करता है। सहकर्मी समूह स्वायत्तता, पारस्परिकता तथा स्व-निर्देशित भूमिकाओं के साथ प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। दोस्त बनाने एवं बनाए रखने की क्षमता, सफ़ल, सकारात्मक सहकर्मी समूह पारस्परिक विचार विमर्श के सबसे शक्तिशाली संकेतों में से एक है।

चूँकि बच्चे अपना अधिकांश समय घर से दूर बिताते हैं, चाहे स्कूल में, अथवा सामाजिक कार्यक्रमों में, उन्हें अपने साथियों की स्वीकृति में सुरक्षा मिलती है। अपने साथियों द्वारा स्वीकार किए जाने की यह इच्छा शायद विशेष रूप से किशोरावस्था के दौरान एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति है, एवं यही कारण है कि साथियों का दबाव कभी-कभी किशोरों को उच्च जोखिम उठाने तथा साहसी करतबों में शामिल होने के लिए मजबूर करता है। सबसे बड़े जोखिम की अवधि तब होती है जब किशोर हाई स्कूल में प्रवेश करते हैं। जैसे ही उनका आत्म-सम्मान गिरता है (विशेषकर लड़कियों में) और उनका दैनिक दबाव बढ़ता है, उन्हें पूर्व सहकर्मी समूहों से परिचित कराया जाता है जो नई गतिविधियों में संलग्न होते हैं।

साथियों का दबाव सकारात्मक हो सकता है यदि सहकर्मी व्यक्ति को बेहतरी के लिए बदलने में मदद करें। सहकर्मी सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं तथा मूल्यों को आत्मसात करने एवं एक बलवान चरित्र का निर्माण करने में मदद कर सकते हैं। सबसे अधिक प्रभाव शैक्षणिक उपलब्धियों के क्षेत्र में दिखाई देता है। कई अध्ययनों ने शोध निष्कर्षों की पुष्टि की है कि सहकर्मी समूह के मूल्य, जिनके साथ हाई स्कूल का छात्र सबसे अधिक समय बिताता है,

उनके परिवार द्वारा प्रदान किए गए मूल्यों, दृष्टिकोणों एवं समर्थन की तुलना में, छात्र की शैक्षणिक सफ़लता के स्तर में एक मज़बूत कारक हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि जिन छात्रों के परिवार बहुत सहायक नहीं थे, लेकिन जिन्होंने शैक्षणिक रूप से उन्मुख सहकर्मी समूह के साथ समय बिताया, उन्हें अच्छे ग्रेड मिले। इसके विपरीत वे छात्र जिनके परिवार पढ़ाई पर बल देते थे, लेकिन वे उन साथियों के साथ समय बिताते थे जिनकी रुचि या रुझान उच्च शैक्षणिक उपलब्धियों की ओर नहीं था, उन्होंने कम अच्छा प्रदर्शन किया। यह स्पष्ट है कि यदि छात्र शैक्षणिक एवं सामाजिक केंद्र प्रदान करने वाले अध्ययन समूहों में एक साथ समूह बनाते हैं, तो वे उच्च शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने वाले होंगे। यहां तक कि स्कूलों में भी सबसे प्रभावी सबक़ अपने साथियों से ही सीखा जाता है।

शोध प्रश्न 1

1. सहकर्मियों की क्या भूमिका है?

   .....

   .....

   .....

2. सहकर्मी समूह क्या है?

   .....

   .....

   .....

2.4 स्कूल एवं सहकर्मियों के माध्यम से मूल्यों का समावेश

शेषाद्रि (1981) स्वीकार करते हैं कि "स्कूल का माहौल एवं शिक्षक का व्यक्तित्व बच्चों पर अत्यधिक प्रभाव डालता है। ऐसे स्कूल परिवेश में मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करना वास्तव में हास्यास्पद होगा जो इन मूल्यों की कमी को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। यदि शिक्षक में ऐसे मूल्यों के प्रति आस्था का अभाव है तो वह स्वयं इसे प्रदान नहीं कर सकता।" घर के अलावा, स्कूल वह महत्वपूर्ण स्थान है जहां बच्चे गतिविधियों के माध्यम से तथा अपने साथियों के साथ दैनिक सामान्य विचार-विमर्श के माध्यम से स्वाभाविक रूप से मूल्य सीखते हैं। तथा, बच्चों में मूल्यों के विकास में माता-पिता के बाद शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका होती है। इसलिए शिक्षक का व्यवहार महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि कार्य शब्दों से अधिक प्रभावशाली होते हैं। शिक्षक को, बच्चे में, जो कोई भी कार्य करना चाहिए उसमें उद्देश्य की ईमानदारी का गुण विकसित करना चाहिए। शिक्षक को बच्चे के अवांछनीय आवेगों एवं आदतों के कारण उसके साथ कठोरता से व्यवहार नहीं करना चाहिए, जब बच्चा कोई भूल करता है तो शिक्षक यह देखना चाहिए कि वह उसे अनायास ही शिक्षक के सामने स्वीकार कर ले, तथा उसे दयालुता के साथ उसकी ग़लती समझानी चाहिए। अतः, स्कूल को ऐसे माहौल को प्रोत्साहित करने में सक्षम होना चाहिए जो पारस्परिक एवं सामुदायिक जीवन को प्रोत्साहित करेगा। स्कूलों को संचालित करने वाले सिद्धांतों को निम्नानुसार संक्षेप में प्रस्तुत

किया जा सकता है।

- स्कूल एक सौहार्दपूर्ण, मैत्रीपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण समुदाय होना चाहिए जिसका हर बच्चा महसूस कर सके कि वह एक मूल्यवान सदस्य है जिसके पास योगदान करने के लिए कुछ है।
- इसे एक सामान्य लोकाचार तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए जिस पर कर्मचारियों एवं छात्रों ने काम किया है।
- बच्चों को छोटे समूहों में सभी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए।
- स्कूल को सभी स्तरों पर उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए - कार्यों का उत्तरदायित्व, स्कूल के जीवन में योगदान, एक-दूसरे की मदद करना एवं समुदाय की समस्याओं को हल करना।
- पाठ्यक्रम को बच्चों की जिज्ञासा तथा रचनात्मक शक्तियों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए।
- स्कूल को मार्गदर्शन एवं परामर्श की व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए।
- स्कूल बच्चे को खुद पर और उस जीवन पर ध्यान देने से परिचित करा सकता है जिसे वह अन्यथा हासिल नहीं कर सकता। एक बच्चे को स्कूल सेटिंग में साथियों, किताबों, शिक्षकों, अन्य माता-पिता, बाहरी विशेषज्ञों आदि से सीखने का अधिकार होना चाहिए।

स्कूल को अपनी विभिन्न गतिविधियों, विशेष रूप से स्कूल असेंबली के माध्यम से साहस, उपलब्धि, प्रेम, करुणा, आश्चर्य, कल्पना, खुशी, त्रासदी, सहनशक्ति, आशा, उत्तरदायित्व, मानवीय प्रयास तथा अस्तित्व की चुनौती एवं रहस्य के विषयों पर बल देना चाहिए। सभा को विद्यार्थियों के मूल्यों को सुदृढ़ करना चाहिए। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे स्कूल सकारात्मक सहकर्मी समूहों के गठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं, तथा ऐसी गतिविधियों का सञ्चालन कर सकते हैं जहाँ बच्चे निम्नलिखित तरीक़ों से मूल्यों को आत्मसात कर सकें।

2.4.1 सहकर्मी नेता कार्यक्रम

सहकर्मी नेता कार्यक्रम में, कुछ छात्रों को सहकर्मी नेता के रूप में चुना जाता है। सहकर्मी नेताओं को परामर्श, सहायता समूहों, नशीली दवाओं अथवा हिंसा रोकथाम कार्यक्रमों तथ ऐसे अन्य सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जहां छात्र अन्य छात्रों के लिए सकारात्मक भूमिका मॉडल के रूप में कार्य करते हैं।

2.4.2 सहयोगात्मक अधिगम पद्धतियाँ

सहयोगात्मक अधिगम पद्धतियों में सहकर्मी सलाह एवं ट्यूशन कार्यक्रम शामिल होते हैं जहां छात्र नेता अन्य छात्रों अथवा छात्र समूहों के लिए संरक्षक के रूप में काम करने के लिए स्वेच्छा से काम करते हैं। वे पढ़ाई में अकादमिक रूप से कम उपलब्धि हासिल करने वालों को उनके स्कोर सुधारने में मदद करने में शामिल होते हैं। कुछ लोग छात्रों अपने सीखे हुए कुछ कौशल सिखाने के लिए स्वेच्छा से भी काम करते हैं। छात्र नेताओं को दूसरों को समझने एवं उनके साथ सहानुभूति रखने, लक्ष्य, अथवा प्राप्त करने योग्य लक्ष्य, निर्धारित करने, समस्या की पहचान करने तथा निर्णय लेते समय समस्या को हल करने एवं अन्य छात्रों का नेतृत्व करने,

प्रशिक्षित करने एवं समर्थन करने तथा अच्छे रोल मॉडल बनने के लिए सबसे अधिक संचार कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है।

2.4.3 युवा संगठन

युवा क्लब अथवा संगठन, जो सांस्कृतिक कार्यक्रम, मंच नाटक एवं नाटक जैसी कई स्वस्थ गतिविधियाँ करते हैं, चैरिटी शो, स्वास्थ्य शिविर, आदि का आयोजन करते हैं। संरक्षण अभियान एक अच्छी गतिविधि है जहाँ बच्चे एक सहकर्मी समूह में भाग ले सकते हैं तथा एक ज़िम्मेदार नागरिक बनना सीख सकते हैं। यह छात्र को अपने अब तक छिपे कौशल, चाहे वे संगीत, नाटक, या संगठन कौशल हों, को अपने साथियों के सामने दिखाने का मौका देता है जिनकी प्रशंसा एवं मान्यता उसके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

2.4.4 खेल क्लब

सकारात्मक सहकर्मी दबाव एक छात्र को एक खेल क्लब में शामिल होने का एहसास करा सकता है, यदि कोई समूह जिसपर वह श्रद्धा रखता है, ऐसा कर रहा होता है। खेल भावना, स्वस्थ शरीर का निर्माण एवं विफ़लता तथा सफ़लता को समान रूप से संभालना सीखना, टीमों के रूप में काम करना (टीम भावना) महत्वपूर्ण मूल्य हैं जो वह अपने साथियों की संगति में सीख सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. साथियों का दबाव क्या है??

   .....

   .....

   .....

2. शैक्षणिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने में सहकर्मी हमें कैसे मदद करते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. स्कूल साथियों के माध्यम से मूल्यों के विकास को कैसे प्रोत्साहित कर सकता है?

   .....

   .....

   .....

2.5 अन्य पहल – गतिविधियों के माध्यम से सहकर्मी अधिगम

एक शक्तिशाली सहकर्मी समूह शिक्षक को न केवल बच्चों को यह सिखाने में मदद कर सकता है कि क्या सही है और क्या सही नहीं है, बल्कि यह भी सिखा सकता है कि परिणामों पर कैसे विचार किया जाए, तथा अपने निर्णयों का सूक्ष्म रूप से मूल्यांकन कैसे किया जाए।

2.5.1 आत्मसम्मान का विकास करना एवं आत्मविश्वास पैदा करना

सबसे अच्छी चीज़ों में से एक जो शिक्षक कर सकते हैं वह है बच्चों में आत्मसम्मान विकसित करना तथा आत्मविश्वास पैदा करना। आत्मसम्मान वह आत्मविश्वास एवं संतुष्टि है जो किसी व्यक्ति में होता है। यह इस बात का माप है कि कोई व्यक्ति स्वयं को कितना पसंद करता है, स्वीकार करता है तथा स्वयं का सम्मान करता है। जिस व्यक्ति में उच्च आत्मसम्मान होता है वह आलोचनाओं, असफलताओं एवं कठिनाइयों से बहादुरी से निपटने में सक्षम होता है। उच्च आत्मसम्मान से आत्मविश्वास आता है।

आत्मविश्वास सही चुनाव करने में सक्षम होने से आता है। बच्चे, जो सही है उसके आधार पर चुनाव करने में सक्षम होते, हैं तथा साथियों के विरोध के बावजूद भी, अपने निर्णय पर टिके रहते हैं।

2.5.2 सकारात्मक व्यक्तित्व लक्षणों को पहचानना

स्कूलों में, शैक्षणिक, खेल अथवा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को स्वीकरन दिया जाता है, लेकिन छात्रों में सकारात्मक व्यक्तित्व गुणों के लिए भी मान्यता एवं पुरस्कार दिए जाने चाहिए। इसे सहकर्मी समूह गतिविधि के रूप में किया जा सकता है।

छात्र अपने साथियों को शिक्षकों से भी बेहतर जानते हैं। उनमें एक-दूसरे के चरित्र के बारे में उल्लेखनीय अंतर्दृष्टि होती है, एवं अक्सर शिक्षक को अन्य साथी छात्रों के माध्यम से एक छात्र के गुणों के बारे में पता चलता है।

अच्छे गुणों की वांछनीयता को प्रोत्साहित करने, एवं छात्रों को उनके बुरे गुणों से छुटकारा पाने में मदद करने के लिए निम्नलिखित गतिविधि की जा सकती है:

गतिविधि: 1

शिक्षक किन्हीं तीन या चार अच्छे व्यक्तित्व लक्षणों का चयन कर सकता है तथा छात्रों के साथ इनमें से प्रत्येक लक्षण की विशेषताओं पर चर्चा कर सकता है। छात्रों से वोट देने के लिए कहा जा सकता है कि उनके सहपाठियों में सबसे अधिक अनुशासित, सबसे ईमानदार, सबसे मददगार, सबसे मिलनसार कौन है। सर्वाधिक वोट पाने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जा सकते हैं। साथियों द्वारा साथियों के माध्यम से मूल्यों को सीखने के लिए यह एक अच्छी गतिविधि है! विद्यार्थियों को अपने सहपाठी के एक/दो अच्छे गुण लिखने के लिए कहा जा सकता है जिन्हें वे आत्मसात करना चाहेंगे। फिर उसने एक महीने में कितना हासिल किया है इसकी एक प्रक्रिया सहकर्मी समूह मूल्यांकन द्वारा की जाएगी जहां बच्चों की राय पूछी जाती है और ताकत और कमजोरियों पर विचार किया जाता है। सहकर्मी तय करेंगे कि कोई सुधार हुआ है या नहीं।

इस खेल को डंब शरेड्स के रूप में भी खेला जाता है, जहां किसी विशेष छात्र के कुछ गुणों का प्रदर्शन किया जाता है, एवं छात्रों को छात्रों की पहचान कराई जाती है। हालाँकि, इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि दूसरों की संवेदनशीलता को ठेस न पहुँचे। इसका उद्देश्य सीखना है न कि मजाक उड़ाना।

2.5.3 बच्चों को अच्छे विकल्प चुनने एवं उनके लिए खड़े होने में मदद करना

कक्षाओं में कई सामूहिक गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है जहां उन्हें एक नैतिक मूल्यांकन वाली स्थिति दी जाती है। छात्रों को विश्लेषण करने एवं निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यदि निर्णय 'नहीं' कहना है - तो उन्हें किसी मित्र के प्रोत्साहन पर कोई हानिकारक कार्य नहीं करने के लिए शब्दों/अभिव्यक्ति का चयन करना सिखाना चाहिए। उन्हें 'नहीं' कहने के वे तरीक़े सिखाने चाहियें जिससे कि उनके मित्र उनको स्वयं से दूर रहने के लिए कहने के बजाय उनका सम्मान कर सकें। यदि उन्हें आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सोच तथा अच्छे संचार कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है तो वे उनका उपयोग अपने दैनिक जीवन में करेंगे।

गतिविधि: 2

विद्यार्थियों से अपनी नोटबुक में दो कॉलम बनाने को कहें। एक कॉलम का शीर्षक "ठीक है" और दूसरे का शीर्षक "ठीक नहीं" होना चाहिए।

विद्यार्थियों से उन स्थितियों का वर्णन करने के लिए कहकर एक सूची तैयार करें जिनका वे आमतौर पर सामना करते हैं। वैकल्पिक रूप से, आप उन स्थितियों की सूची दे सकते हैं जो "ठीक" और "ठीक नहीं" हैं।

उनसे उन स्थितियों को उचित शीर्षकों के अंतर्गत रखने के लिए कहें।

एक बार जब वे कार्य समाप्त कर लें, तो प्रत्येक छात्र से एक "ठीक है" स्थिति तथा एक "ठीक नहीं" स्थिति को ज़ोर से पढ़ने को कहें।

विद्यार्थियों से यह पूछकर सामूहिक चर्चा को बढ़ावा दें कि वे कुछ स्थितियों को दूसरे कॉलम के बजाय एक कॉलम में क्यों रखते हैं।

छात्रों से कुछ ऐसे अनुभवों को साझा करने के लिए कहें जहां उनपर उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करने के लिए ज़ोर दिया गया अथवा जहां उन्होंने "नहीं" कहा।

2.5.4 दूरदर्शिता शिक्षण

समूह को संभावित परिणामों के बारे में सोचने, प्रस्तावित कार्रवाई के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष को संतुलित करने, उनकी कार्रवाई के दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में सोचने तथा फिर संतुलित निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

गतिविधि: 3

छात्रों से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर अपने निर्णयों को संतुलित करने के लिए कहा जा सकता है:

- क्या इससे मुझे अथवा किसी और को नुकसान होगा?
- क्या इससे मेरा दीर्घकालिक स्वास्थ्य बदल सकता है?

- क्या ऐसा करने से मेरी शिक्षा प्रभावित हो सकती है?
- अगर मेरे माता-पिता को पता होता, तो क्या वे इसे स्वीकार करते?
- क्या यह अवैध है?
- यदि मेरे शिक्षक/मेरे लिए महत्वपूर्ण लोगों को जानकारी होती है तो वे क्या सोचेंगे?

2.5.5 निर्णयों का मूल्यांकन करना सीखना

बिंदु (3) में उल्लिखित तकनीकों का उपयोग करके निम्नलिखित गतिविधि की जा सकती है:

गतिविधि: 4

निर्णय लेने वाली गतिविधि

क्र.	स्थिति	निर्णय लेना		आपके निर्णय का कारण
		(a)	(b)	
1	आपके दोस्त आपसे कक्षा छोड़ने एवं उनके साथ फ़िल्म देखने जाने के लिए कहते हैं। आप…	नहीं कह देते हैं। उनके साथ जाने से इंकार कर देते हैं|	समूह में शामिल हों जाते हैं और जाते हैं|	
2	आप एक परीक्षा दे रहे हैं. आप अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं। अचानक आपको समझ आता है कि आपके पास सबसे अच्छे छात्र से नक़ल करने का मौका है। आप…	इस प्रलोभन को 'नहीं' कह देते हैं|	जितना हो सकता है उस विद्यार्थी के उत्तर की नक़ल कर लेते हैं|	
3	आप दोस्तों के साथ घर पर अकेले हैं। आपके माता-पिता घर पर नहीं हैं। आपके मित्र कंप्यूटर पर कोई प्रतिबंधित वेबसाइट देखना चाहते हैं। आप…	मना करते हैं तथा अपने मित्रों को इसके विरुद्ध सलाह देते हैं|	वह आपत्तिजनक सामग्री देखते हैं|	
4	आपका दोस्त छोटे बच्चों की उपस्थिति में गंदे चुटकुले सुनाता है। हर कोई हंसता है| आप…	अपनी अस्वीकृति व्यक्त करते हैं तथा भीड़ में शामिल होने से इंकार करते हैं। अपनी दोस्ती तोड देते हैं|	भीड़ के साथ हँसते हैं|	
5	आप एक समूह को अपने किसी शिक्षक के बारे में गपशप करते हुए सुन लेते हैं। आप…	अपने शिक्षक के लिए खड़े होते हैं, एवं अन्य लोगों को डाँटते हैं|	उस बातचीत में शामिल होते हैं तथा उसमें अपने हिस्से की गपशप जोड़ते हैं।	
6	आपके माता-पिता आपसे दृढ रूप से अध्ययन करने के लिए कहते हैं। आप…	उनकी बात मानते और उनसे अधिक मेहनत करने का वादा करते हैं|	उनकी सलाह को अस्वीकार करते हैं|	

7	आप अपने माता-पिता की अनुमति के बिना किसी पार्टी में जाने के बाद देर से घर लौटे। आप…	माफी मांगते हैं तथा दोबारा ऐसा न करने का वादा करते हैं।	आप कहां थे, इसके बारे में झूठ बोलते हैं|	
8	आपके कुछ सहपाठी स्कूल का चुनाव जीतते हैं, उच्च पद प्राप्त करते हैं अथवा कोई पुरस्कार जीतते हैं। आप…..	उन्हें सच्चे दिल से बधाई देते हैं|	उनकी सफ़लता पर अप्रसन्न होते हैं एवं उनकी पीठ पीछे उनपर गंदी टिप्पणियाँ करते हैं।	
9	आपको स्कूल परिसर में एक पर्स मिलता है जिसमें बहुत सारे पैसे होते हैं। आप…	इसे स्कूल प्राधिकारियों/कक्षा शिक्षक को सौंप देते हैं|	पैसे आप ख़ुद ही ले लेते हैं|	
10	कुछ छात्र आपकी उपस्थिति में किसी अलोकप्रिय छात्र पर अनुचित आरोप लगाते हैं। आप…	उस छात्र के बचाव में बोलते हैं|	यह कहते हुए चुप रहते हैं, "यह मेरी चिंता का विषय नहीं है।"	
11	आपके माता-पिता आपके मित्रों को नापसंद करते हैं। आप…	अपने माता-पिता की आज्ञा मानते हैं|	उनकी राय को अस्वीकार करते हैं, एवं अपने मित्रों के दोस्त बने रहते हैं।	
12	आपके किसी कार्य के लिए किसी और पर झूठा आरोप लगाया गया है। उसे नाहक दंडित किया जाएगा। आप…	अपना दोष मानते हैं तथा उचित दंड स्वीकार करते हैं|	चुप रहते हैं एवं निर्दोष को दंड मिलने देते हैं|	
13	आपको पता चलता है कि कुछ लोग आपके बारे में झूठ फैला रहे हैं। आप…	उन्हें नज़रअंदाज़ करते हैं। उनपर ध्यान नही देते|	क्रोधित हो जाते हैं तथा द्वेष रखते हैं|	
14	आपके मित्र आपको अपने साथ धूम्रपान करने अथवा नशीली दवाएँ लेने के लिए आमंत्रित करते हैं। आप…	“नहीं" कहते हैं|	"ठीक है" कहते हैं तथा समूह में शामिल होते हैं|	

स्कूल सहकर्मी नेता कार्यक्रम, सहयोगात्मक अधिगम पद्धतियों, युवा संगठनों, खेल क्लबों, आदि के माध्यम से सकारात्मक सहकर्मी समूहों के गठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

सहकर्मी अधिगम का आरंभ निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है:

- आत्मसम्मान का विकास करना एवं आत्मविश्वास पैदा करना
- बच्चों को अच्छे विकल्प चुनने एवं उनके लिए खड़े होने में मदद करना
- दूरदर्शिता शिक्षण
- निर्णयों का मूल्यांकन करना सीखना

2.6 सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसे दूसरों की संगति एवं समाज की आवश्यकता होती है। समाजीकरण विभिन्न प्रकार की अंतःक्रियाओं एवं सामाजिक अन्योन्यक्रियाओं का परिणाम है। बच्चे एक 'सहकर्मी समूह' के सदस्य बन जाते हैं जिससे उनके दृष्टिकोण, सोच एवं व्यवहार पर परिवार के प्रभाव को तीव्रता से कम हो करता है। सहकर्मी समूह लगभग एक ही उम्र के लोगों का एक समूह है जो एक साथ महसूस करते हैं तथा कार्य करते हैं। बच्चों में सामाजिक कौशल के विकास में सहकर्मी रिश्ते महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक भूमिका निभाते हैं। किसी सामाजिक समूह में बच्चे की भागीदारी जितनी अधिक होगी, उसके सामाजिक कौशल उतने ही अधिक विकसित होंगे तथा उसके अपने साथियों के बीच लोकप्रिय होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

सहकर्मी दबाव किसी व्यक्ति के सहकर्मी समूह द्वारा डाला गया प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दबाव है जो उस समूह में फिट होने के लिए व्यक्ति के दृष्टिकोण व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है। बच्चों में सामाजिक कौशल के विकास में सहकर्मी रिश्ते महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक भूमिका निभाते हैं। किसी सामाजिक समूह में बच्चे की भागीदारी जितनी अधिक होगी, उसके सामाजिक कौशल उतने ही अधिक विकसित होंगे, तथा उसके अपने साथियों के बीच लोकप्रिय होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

सहकर्मी समूह ऐसे स्थान हैं जहां बच्चे स्वीकरन का अनुभव करते हैं, जहां वे स्वयं कार्य कर सकते हैं, अपने बारे में अच्छा महसूस कर सकते हैं - उनका आत्मसम्मान बढ़ता है। सहकर्मी दबाव या तो 'सकारात्मक' होता है अथवा 'नकारात्मक'। स्कूल सहकर्मी नेता कार्यक्रम, सहयोगात्मक अधिगम पद्धतियों, युवा संगठनों, खेल क्लबों, आदि के माध्यम से सकारात्मक सहकर्मी समूहों के गठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं। अतः, सहकर्मी, एवं स्कूल, मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2.7 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. बच्चों में सामाजिक कौशल के विकास में सहकर्मी संबंध एक महत्वपूर्ण तथा रचनात्मक भूमिका निभाते हैं। जैसे-जैसे भूमिका निभाने की क्षमता उभरती है, बच्चा सामाजिक व्यवहार में संलग्न होना शुरू कर देता है जिसमें टीम वर्क, सहयोग, चर्चा एवं अन्य लोगों के साथ योजना बनाना, जैसे कार्य शामिल होते हैं। भूमिका निभाने के कौशल के विकास के लिए सहकर्मियों के साथ बातचीत एक आवश्यक कारक है। किसी सामाजिक समूह में बच्चे की भागीदारी जितनी अधिक होती है, उसके सामाजिक कौशल उतने ही अधिक विकसित होते हैं तथा उसके अपने साथियों के बीच लोकप्रिय होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है|
2. सहकर्मी समूह लगभग एक ही उम्र के लोगों का एक समूह है जो एक साथ महसूस करते हैं एवं कार्य करते हैं।

1. सहकर्मी दबाव किसी व्यक्ति के सहकर्मी समूह द्वारा डाला गया प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दबाव है जो उस समूह में फिट होने के लिए व्यक्ति के दृष्टिकोण व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है। सहकर्मी दबाव 'सकारात्मक' एवं 'नकारात्मक' दोनों हो सकता है।
2. कई अध्ययनों ने पुष्टि की है कि, शैक्षणिक क्षेत्र में, सहकर्मी समूह के मूल्य छात्र की शैक्षणिक सफलता के स्तर में उनके परिवार द्वारा प्रदान किए गए मूल्यों, दृष्टिकोण एवं समर्थन की तुलना में, एक मजबूत कारक हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि जिन छात्रों के परिवार बहुत सहायक नहीं थे, लेकिन जिन्होंने शैक्षणिक रूप से उन्मुख सहकर्मी समूह के साथ समय बिताया, उन्हें अच्छे ग्रेड मिले। अर्थात्, यदि छात्र शैक्षणिक तथा सामाजिक केंद्र प्रदान करने वाले अध्ययन समूहों में एक साथ समूह बनाते हैं, तो वे उच्च शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने वाले हो जाते हैं।
3. स्कूल, सहकर्मी नेता कार्यक्रम, सहयोगात्मक शिक्षण पद्धतियों, युवा संगठनों, खेल क्लबों, आदि के माध्यम से, सकारात्मक सहकर्मी समूहों के गठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

2.8 संदर्भ

एउर, जिम और आर.डब्ल्यू. एले (2003): साथियों के दबाव के प्रति खड़े रहना: आपके प्रति सच्चा होने के लिए एक मार्गदर्शिका; अभय प्रेस.

बैरन, आर.ए., ब्रायन, डी (1991): सामाजिक मनोविज्ञान-अमेज़ॅन। कंपनी (12वां संस्करण)

बैरी एच. श्नाइडर (2000): मित्र और शत्रु: बचपन में सहकर्मी संबंध; होडर अर्नोल्ड प्रकाशन

डॉ. वेंकटैया एन (2010): वैल्यू एजुकेशन: ए.पी.एच पब्लिशिंग नई दिल्ली।

डर्किन केविन (1996): द ब्लैकवेल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइकोलॉजी। ब्लैकवेल पब्लिशिंग इंक.

लियोनार्ड ओ. पेलिसरएंडरसन लोरिन डब्ल्यू (1995): शिक्षक नेताओं के लिए एक पुस्तिका; ऋषि प्रकाशन

रत्ना कुमारी बी. (1998): शिक्षा और मूल्य अभिविन्यास, स्वार्थी प्रकाशन, हैदराबाद

शेषाद्री, सी., (1981): मूल्यों में शिक्षा, जागरण प्रकाशन प्रकाशन, बैंगलोर

इकाई 3 माता-पिता की भूमिका

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल्यों की पहचान

3.4 मूल्य विकास की प्रक्रिया

- 3.4.1 चरण I
- 3.4.2 चरण II
- 3.4.3 चरण III
- 3.4.4 चरण IV

3.5 माता-पिता की भागीदारी

- 3.5.1 अनुसरण करने योग्य चरण

3.6 मूल्य विकास के उदाहरण

- 3.6.1 शिक्षकों/अभिभावकों द्वारा बच्चों के लिए परियोजनाएँ

3.7 मूल्योन्मुख वातावरण का निर्माण

- 3.7.1 अपने प्रतिपाल्य (वार्ड) को जानें

3.8 माता-पिता की भूमिका

- 3.8.1 माता-पिता के लिए दिशानिर्देश

3.9 समुदाय की भूमिका

- 3.9.1 आवश्यक कार्य योजना

3.10 सारांश

3.11 बोध प्रश्न के उत्तर

3.12 संदर्भ

3.1 प्रस्तावना

तीव्र वैज्ञानिक विकास एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप औद्योगीकरण हुआ है। इस तीव्र विकास ने हमारी सदियों पुरानी मूल्य संरचनाओं तथा नैतिक मानकों को जोखिम में डाल दिया है। वैश्विक स्तर पर, इससे मूल्य संकट पैदा हो गया है। छोटी-छोटी बातों पर विवाद, सड़क पर हिंसा, डकैती, हत्या, आंदोलन, चाकूबाजी एवं अन्य अपराध समाज में व्याप्त हो गए हैं। ये समाचार पत्रों, पत्रिकाओं तथा मीडिया में प्रचुर मात्रा में रिपोर्ट किए गए हैं। हमारा मनोरंजन हिंसा एवं अपराधियों को आकर्षक बनाने से भरा है। मूल्यहीनता का यह माहौल समाज के विघटन का कारण बन रहा है तथा इसका असर हमारे परिवारों पर भी पड़ रहा है। इसलिए, हमारे लिए कार्रवाई करने एवं इस प्रवृत्ति को रोकने और परिवारों को सही दिशा में ले जाने के

लिए सचेत प्रयास करने का यह सही समय है।

इसके अलावा, हर कोई लोगों के व्यावहारिक मानकों एवं प्रतिरूपों में सामान्य गिरावट पर बहुत चिंता व्यक्त करता है। इनके बिगड़ने तथा विकृतियों से अधिकांश प्रणालियाँ एवं संरचनाएँ प्रभावित हुई हैं। एक दृष्टिकोण से, समूह, प्रणाली अथवा संरचना के सदस्य के रूप में, व्यक्ति को उनके लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। दूसरे दृष्टिकोण से, व्यक्ति इस स्थिति के प्रति असहाय है। इसलिए इस व्यावहारिक विकृति एवं गिरावट के मूल कारणों को खोजने के लिए गंभीरता से सोचना होगा। इसका एक प्रमुख कारक हमारे दृष्टिकोण, विश्वास, आदर्श एवं मानकों में बदलाव है। वैकल्पिक रूप से, एक व्यक्ति इस गिरावट का कारण बदलते सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को बता सकता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई को पूरा करने के बाद, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

- मूल्य शिक्षा में माता-पिता की भूमिका की पहचान करने में,
- बच्चों की मदद के लिए आवश्यक दिशानिर्देशों पर चर्चा करने में,
- एक परिवार के लिए आवश्यक मूल्यों का विश्लेषण करने में, तथा
- मूल्य शिक्षा में माता-पिता की भूमिका का वर्णन करने में

3.3 मूल्यों की पहचान

शिक्षा की पहली संस्था के रूप में परिवार अपने सदस्यों को कौशल, दृष्टिकोण एवं मूल्यों को विकसित करने में सक्षम बनाता है। परिवार के सदस्यों के बीच दैनिक मेल-जोल से ऐसी आदतें बनती हैं जो व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। अतः, प्रत्येक परिवार परिवार के सदस्यों द्वारा अर्जित किए जाने वाले कौशल एवं मूल्यों की सावधानीपूर्वक पहचान करता है।

पहले, धर्म व्यवहार के विकास का एक बड़ा स्रोत था। परिवार में पवित्र पुस्तकों का उल्लेख किया जाता था। इन्हें न केवल विभिन्न अवसरों पर पढ़ा जाता था बल्कि इन्हें अभ्यास के लिए भी संजोया जाता था। ये पवित्र पुस्तकें अभी भी परिवार में उपलब्ध हैं तथा इन्हें समुदाय के नेताओं द्वारा उद्धृत किया जाता है। पवित्र पुस्तकें मूल्यों से भरी हैं। वे हमें प्रेम और भाईचारा सिखाते हैं। हमारे बहुलवादी समाज में, कई परिवार न तो धर्म में विश्वास करते हैं और न ही पवित्र पुस्तकों में। इसके अलावा, परिवार में उपलब्ध पवित्र पुस्तकों की संख्या एक से अधिक हो सकती है। यह व्यक्ति के लिए किसी एक अथवा दूसरी पुस्तक का अनुसरण करने का निर्णय लेने में दुविधा पैदा करता है।

एक लोकतांत्रिक समाज में मूल्य, राष्ट्रीय लक्ष्यों, सार्वभौमिक धारणा एवं नैतिक विचार से तैयार होते हैं। हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य भारतीय संविधान की प्रस्तावना में प्रतिबिंबित होते हैं।

उसके अनुसार:

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संप्रभु समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य** बनाने और इसके सभी नागरिकों को सुरक्षित करने का गंभीरता से संकल्प लेते हैं:

न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक;

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, विश्वास और पूजा की **स्वतंत्रता**;

स्थिति और अवसर की **समानता**; और उन सभी के बीच प्रचार करना

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**;

नवंबर, 1949 के इस छब्बीसवें दिन **हमारी संविधान सभा में, इस संविधान को अपनाएं, अधिनियमित करें और स्वयं को सौंप दें**।

हमारे संविधान की यह प्रस्तावना मूल्यों का स्रोत है। यह हमें चार मूल्य देता है - न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व

किसी व्यक्ति एवं परिवार द्वारा मूल्यों की पहचान कई कारकों से प्रभावित होती है। इनमें से कुछ हैं:

1. संस्कृति
2. परम्पराएँ
3. सामाजिक वातावरण

भारत में पितृसत्तात्मक एवं मातृसत्तात्मक, दोनों प्रकार के, समाज हैं।

मूल्यों को मानवीय गतिविधियों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, जैसे शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, नैतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक। इसलिए, मूल्य सीमित होते हैं। अनगिनत मूल्यों के कारण हमारा जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा। अतः, एक व्यक्ति को परिवार में प्रचलित मूल्यों की संख्या को सीमित करना चाहिए। गांधीजी ने दो मूल्यों की हिमायत की - सत्य एवं अहिंसा। कई परिवारों में पाँच मूल्यों - स्वच्छता, सच्चाई, कड़ी मेहनत, समानता एवं सहयोग - को महत्व दिया जाता है। कुछ परिवारों में पाँच मूल्यों - सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, प्रेम एवं अहिंसा - का एक और संग्रह देखा जा सकता है। परिवार अपने लिए मूल्य चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

गतिविधि

एक परिवार की गतिविधियों का तीन दिनों तक निरीक्षण करें, तथा परिवार के सदस्यों की गतिविधियों में सन्निहित कुछ मूल्यों की पहचान करें।

पारिवारिक व्यवस्था में, शिक्षा अच्छे जीवन की उच्चतम अवधारणाओं को संदर्भित करती है। डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता वाले विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने माना कि शिक्षा जीवन के प्रति प्रेम एवं पीड़ा के प्रति चिंता पर केंद्रित होनी चाहिए। वास्तविक स्वतंत्रता की अनुभूति लोकतंत्र के मूल्य से की जा सकती है। इस प्रकाश में, यह माना जाता है कि, एक परिवार को अपने सभी सदस्यों को चरित्र का प्रशिक्षण देना चाहिए। स्वाभाविक रूप से, माता-पिता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3.4 मूल्य विकास की प्रक्रिया

माता-पिता के लिए विकास की प्रक्रियाओं को जानना महत्वपूर्ण है - शारीरिक, सामाजिक एवं नैतिक। यहां हमारा ध्यान नैतिक विकास पर अधिक है। पियाजे ने बच्चों के नैतिक निर्णय का अध्ययन किया था। उन्होंने कहा कि नैतिक निर्णय आयु के साथ बढ़ता है। पियाजे द्वारा अध्ययन किए गए प्रमुख क्षेत्रों में न्याय, समानता, अधिकार तथा उत्तरदायित्व शामिल थे। स्वाभाविक रूप से, ये एक परिवार में भी वांछनीय मूल्य हैं। गुप्ता के.एम. (1984) ने भी स्कूली बच्चों के नैतिक विकास का अध्ययन किया एवं नैतिक विकास के चार चरणों का अवलोकन किया।

3.4.1 चरण I

तत्काल परिणामों के लिए, बच्चे को जागरूक करने के लिए, माता-पिता का ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता होती है। इससे उन्हें अपने व्यवहार के परिणामों को जानने में सहायता मिलती है।

3.4.2 चरण II

आंशिक मूल्यांकन: एक बच्चा घटनाओं को केवल एक ही दृष्टिकोण से देखता है। स्वाभाविक रूप से, माता-पिता को प्रत्येक पक्ष के परिणामों के बारे में बच्चे के साथ चर्चा करनी चाहिए।

3.4.3 चरण III

पूर्ण मूल्यांकन: एक बच्चा किसी दुर्घटना में अपने व्यवहार के लिए तर्क प्रदान करता है। स्वाभाविक रूप से, माता-पिता को उसे वास्तविकता के समीप आने के लिए मार्गदर्शन देना होगा।

3.4.4 चरण IV

सामान्यीकृत टिप्पणियाँ: एक बच्चे को परिवार एवं समाज के कल्याण के लिए काम करने के लिए माता-पिता से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। बच्चे हमेशा सहकर्मियों की संगती के प्रभाव में रहते हैं। साथियों की उपस्थिति में माता-पिता का रोब लगभग अनुपस्थित होता है। अतः, बच्चों को, साथियों के दबाव से उबरते हुए, पारिवारिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए, माता-पिता से सुझाव की आवश्यकता होती है।

3.5 माता-पिता की भागीदारी

मूल्य शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी बच्चे की स्कूली शिक्षा से अत्यंत पहले आरंभ हो जाती है, एवं, इसलिए स्कूल में किसी भी मूल्य शिक्षा कार्यक्रम की योजना बनाते समय घर शामिल होने वाले मुख्य माध्यमों में से एक बन जाता है।

कोई भी व्यक्ति निर्धारित मूल्यों के साथ पैदा नहीं होता है। प्रारंभ में, मूल्य माता-पिता, दादा-दादी/अन्य क़रीबी नातेदारों, जिनके साथ बच्चा बातचीत करेगा, द्वारा प्रसारित होते हैं। ये मूल्य आमतौर पर ऐसे होते हैं जो एक बच्चे को समाज में स्वीकार किए जाने के लिए तैयार करते हैं। चीजों को व्यवस्थित तरीक़े से रखना सीखना, बड़ों का अभिवादन करना, समय-सारिणी का

पालन करके समय का सम्मान करना, हिंसा के सरल कार्यों (जैसे वस्तुओं को फेंकना, संपत्ति को नष्ट करना) से बचना शायद मूल्य शिक्षा की कुछ प्रारंभिक शुरुआत हैं। अधिकांश मूल्य वे हैं जिन्हें परिवार ने समाज से ग्रहण किया है। किशोरावस्था के मध्य अथवा उत्तरार्ध के दौरान कहीं, व्यक्ति इन मूल्यों पर सवाल उठाना प्रारंभ कर देता है। जैसे जैसे वह जीवन के अनुभवों में भाग लेता है, पुराने मूल्यों का मूल्यांकन किया जाता है, एवं नए मूल्यों को बनाने के लिए, उन्हें नया रूप दिया जाता है। कुछ मूल्य त्याग दिए जाते हैं, तथा अन्य स्वयं में एकीकृत हो जाते हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है वह बचपन में सीखे गए मूल्यों का अभ्यास करना आरंभ कर देता है। मूल्यों को बदलते समाज के संदर्भ में भी मापा जाता है, और व्यक्तियों को यह पता लगाने के लिए कौशल की आवश्यकता होती है कि वास्तव में उनके अपने मूल्य क्या हैं। उन्हें अपने मूल्यों को स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है।

मूल्य विकास के चरणों को साधारणतया इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है (कोहलबर्ग 1968):

1. पूर्व-पारंपरिक चरण (0.7): मैं ऐसा करता हूं ……..
   - क्योंकि मेरे माता-पिता ऐसा कहते हैं
   - क्योंकि ऐसा करने से मुझे सराहना/उपहार आदि मिलेंगे।
2. पारंपरिक चरण (7-10):
   - क्योंकि आप मुझे बेहतर पसंद करेंगे-साथियों, माता-पिता, शिक्षकों के संबंध में
   - क्योंकि यह कानून है तथा मुझे यह करना होगा
3. उत्तर-पारंपरिक चरण (18+):
   - क्योंकि न्याय को इसकी आवश्यकता है
   - क्योंकि यह मानवता के लिए अच्छा है

3.5.1 अनुसरण करने योग्य चरण

अतः, जिस बच्चे का पालन-पोषण अच्छे मूल्यों वाले घर में होता है तथा वह ऐसे स्कूल में शिक्षा प्राप्त करता है जो इन मूल्यों की पुष्टि करता है, वह इन चरणों के अनुसार आगे बढ़ेगा:

वह……

- उपलब्ध विकल्पों की समीक्षा करेगी/ करेगा
- विकल्पों के परिणामों पर सोच-समझकर विचार करेगी/ करेगा
- विकल्पों में से स्वतंत्र रूप से चयन करेगी/ करेगा
- सार्वजनिक रूप से मान्यताओं/मूल्यों की पुष्टि करेगी/ करेगा
- अपने विश्वासों पर कार्य करेगी/ करेगा
- स्वयं के विश्वासों एवं व्यवहार को महत्व देगी/ देगा, तथा उन्हें संजोएगी/ संजोएगा
- मूल्य प्रोफ़ाइल को इंगित करने वाले प्रतिरूप पर, स्थिरता एवं पुनरावृत्ति के साथ कार्य करेगी/ करेगा

एक ऐसा वयस्क बनने के लिए जो किसी विशेष मूल्य के लिए खड़े होने, उस मूल्य को जानने एवं उस पर कार्य करने में सक्षम हो, एक व्यक्ति को, जीवन की किसी स्थिति में, उस मूल्य का पता लगाने, उसपर सोचने तथा उसपर कार्य करने का प्रयास करने की आवश्यकता है। जो मूल्यवान एवं वांछित है, उसके बारे में सोचने, महसूस करने, कल्पना करने तथा प्रकट रूप से स्पष्ट करने में समय लगता है। यह एक कठिन प्रक्रिया है लेकिन यह लाभदायक है, क्योंकि यह जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती है। मूल्य कार्रवाई के मानक हैं, किंतु वे सभी स्थितियों, व्यक्तियों अथवा संस्कृतियों के लिए संपूर्ण नहीं हो सकते। हमें अपने मूल्यों को बदलना एवं उनका पुनर्मूल्यांकन करना आना चाहिए। यह शायद, एक निश्चित, यहां तक कि, स्पष्ट मूल्य प्रणाली के होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

3.6 मूल्य विकास के उदाहरण

यह नितांत आवश्यक है कि स्कूल महत्वपूर्ण पहचान वाले मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिए माता-पिता के साथ काम करें। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें स्कूल की आबादी की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सम्मिलित किया जा सकता है। इस अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए यहाँ मूल्य विकास के कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये हैं।

अ) कार्य नैतिकता

इसमें प्रतिबद्धता, समय की पाबंदी, निष्पक्षता, ईमानदारी, साझा करना, मदद करना, स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व, विनम्रता एवं गर्व के सह-संबंधित मूल्य शामिल होंगे।

माता-पिता से यह मदद मांगी जा सकती है कि वे देखते रहें कि:

- कार्य संग्रह निर्धारित समय पर पूरा हो गया है;
- कार्य संग्रह यथासंभव स्वतंत्र रूप से किया जाता है;
- बच्चा निर्धारित कार्य संग्रह को पूरा करने के लिए अपनी ज़िम्मेदारी विकसित करता है;
- साफ-सुथरेपन, लिखावट एवं नवीनता पर किए गए कार्यों पर ज़ोर देकर बच्चे में गर्व की भावना पैदा की जाती है;
- बच्चे को अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है;
- बच्चे को यह देखना सिखाया जाता है कि कार्यों के परिणाम होते हैं, तथा, चाहे वे कितने ही कष्टदायक क्यों न हों, उन्हें सहन करना पड़ता है;
- सहायता की पेशकश करते समय, बच्चे को सहायता चुनने अथवा उसे अस्वीकार करने की स्वतंत्रता भी दी जाती है। इससे बच्चे को यह समझने में मदद मिलती है कि माता-पिता के होते हुए भी उसे स्थिति को नियंत्रित करने तथा अपने कार्यों के बारे में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार है; और
- बच्चे प्रतिबद्धताओं एवं दायित्वों के महत्व को समझते हैं, क्योंकि इससे दूसरों के साथ-साथ स्वयं वे भी प्रभावित होते हैं।

ब) ईमानदारी

इस मूल्य को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि:

- माता-पिता स्वयं आदर्श हों, अथवा इस मूल्य के उदाहरण हों;
- ईमानदारी उनकी वाणी एवं कार्यों में झलकती हो - इसका तात्पर्य, बच्चे के साथ सीधे तरीक़े से संवाद करने में सक्षम होना है। कभी भी कपट वाले कार्यों की प्रशंसा अथवा सराहना न करें, जैसे बेईमानी से धन इकट्ठा करना;
- भौतिकवादी समाज की बुराइयों - रिश्वतखोरी, धन-प्रदर्शन, धन की प्रशंसा, आदि को सही नहीं होने के रूप में पहचाना जाता हो;
- वे कभी भी बेईमानी का काम नहीं करते हों, जैसे कार्यालय से घर की स्टेशनरी, अथवा दूसरों का कोई अन्य सामान लाना;
- बच्चे समझते हों कि सत्य की उपेक्षा से अधिक कोई भी चीज़ मानवीय रिश्तों को तेज़ी से नहीं तोड़ती एवं संचार में बाधा नहीं डालती; और
- बच्चे कभी भी गलतियों अथवा कार्यों को छुपाने के लिए सत्य का उल्लंघन नहीं करते हों। छात्रों को यह देखने में मदद करके सत्य को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि असफ़लता मनुष्य के रूप में उनके मूल्य को मापने के बजाय विकास का एक अवसर है

स) सामाजिक न्याय

सामाजिक न्याय को घर पर ही इस प्रकार सुदृढ़ किया जा सकता है

- माता-पिता सभी मनुष्यों के प्रति सम्मान दिखाते हों, घर पर घरेलू मदद करने वालों एवं सहायता प्रदान करने वाले अन्य लोगों का सम्मान करते हों, जैसे माली, ड्राइवर, कार्यालय चपरासी, आदि, तथा उनमें से प्रत्येक को अपने कार्य क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में पेश करके एवं बच्चे को उनसे बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करके।
- बच्चों को अंध विद्यालय, स्पास्टिक्स होम, आदि के दौरे पर ले जाकर समाज के कम सक्षम सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाकर| बच्चों को ऐसे समूहों की मदद करने, काम करने एवं उनके साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करके।
- बच्चों को सामाजिक न्याय के लिए खड़े होने तथा किसी भी अन्याय-आर्थिक अथवा धार्मिक अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित करके।
- विद्यालय में स्वेच्छा से उत्तरदायित्व उठाकर। इस प्रकार माता-पिता बच्चे को दिखाते हैं कि न केवल स्कूल महत्वपूर्ण हैं बल्कि ज़िम्मेदार वयस्कों के लिए स्वयंसेवा एक दायित्व है।

सुव्यवस्था/स्वच्छता: घर में सुव्यवस्था का माहौल बनाकर, एवं बच्चों को अपनी पढ़ाई की मेज़, कपड़े, इत्यादि साफ-सुथरे रखने, कूड़ेदान का उपयोग करने, आदि के लिए प्रोत्साहित करके विकसित किया जा सकता है।

द) लिंग संबंधी मुद्दे

लिंग संबंधी मुद्दों को घर पर ही निपटाया जा सकता है, उदाहरण के लिए, पिता नाश्ता बना रहा है, माँ कभी-कभी बच्चे को बाहर ले जा रही है। बच्चे को यह स्वीकार करने के लिए बड़ा किया जाना चाहिए कि उत्तरदायित्व साझा किये जाते हैं, न कि लिंग के आधार पर विभाजित किये जाते हैं।

माता-पिता को लिंग या किसी अन्य आधार पर बच्चों के बीच अंतर नहीं करना चाहिए। माता-पिता को हमेशा इस बात के प्रति सचेत रहना चाहिए कि उनकी सर्वोत्तम मूल्य वाली शिक्षा उदाहरण के तौर पर होगी। जिस तरह से वे एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं, परिवार में बड़ों के प्रति जो सम्मान दिखाया जाता है, जिस दुर्व्यवहार के लिए दंडित किया जाता है अथवा जिसे अनदेखा किया जाता है, इन सभी का बच्चे पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। माता-पिता के रूप में उन्हें बच्चों के लिए उच्च नैतिक मानक स्थापित करने चाहिए। बच्चों को यह संदेश अवश्य मिलना चाहिए कि सच्चा आत्मसम्मान असामाजिक व्यवहार अथवा आत्मभोग से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

बच्चों को सौहार्द, समर्थन तथा देखभाल प्रदान करने की आवश्यकता है, लेकिन उन्हें निराशा एवं उच्च मानकों, दोनों, का सामना करना भी सीखना होगा। सबसे बढ़कर, माता-पिता को बच्चों को नैतिक विवेक एवं शक्ति वाले पुरुषों तथा महिलाओं के रूप में विकसित होने में मदद करनी चाहिए।

3.6.1 शिक्षकों/अभिभावकों द्वारा बच्चों के लिए परियोजनाएँ

- किसी सामुदायिक समस्या के समाधान हेतु हस्ताक्षर अभियान पर कार्य करें
- कैम्प एवं ट्रेक पर बच्चों के साथ जाएँ
- समुदाय के इतिहास पर छात्रों के साथ काम करें, समुदाय में वृद्ध लोगों का साक्षात्कार लें, फोटो अध्ययन करें, आदि। स्कूल को पेपर रीसाइक्लिंग केंद्र शुरू करने में मदद करें
- छात्रों के लिए स्कूल के बाद मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन करें
- छात्रों तथा उनके अभिभावकों के लिए मूल्य स्पष्टीकरण कार्यशाला का आयोजन करें
- छात्रों के लिए पर्यावरण, इतिहास, आदि पर एक दिवसीय कार्यशाला चलाएँ
- स्कूल सौंदर्यीकरण कार्यक्रमों, उद्यान लेआउट, फर्नीचर डिज़ाइन, आदि में भाग लेकर सौंदर्य मूल्यों को विकसित करने में सहायता करें
- विद्यालय में शिक्षण केंद्र विकसित करने में सहायता करें
- उपचारात्मक शिक्षा, विशेष शिक्षा हेतु विशेष कार्यक्रम चलायें
- सफ़ल जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण विषयों पर अन्य अभिभावकों के लिए व्याख्यान आयोजित करें, जैसे
  - असफलता
  - पारस्परिक संचार
  - धन मूल्य

- विश्वास का माहौल बनाना
- मूल्यों को स्पष्ट करना
- बदलते मूल्यों की अवधारणा और मूल्य स्पष्टीकरण
- चुनाव करना सीखना
- बच्चों में लक्ष्य निर्धारण का विकास करना
- स्वीकृति, प्यार एवं सम्मान के लिए बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करना।
- अवकाश के समय की गतिविधियाँ

गतिविधि

नोट: एक बच्चे का, उसके साथियों की संगति में, निरीक्षण करें। क्या आपने कभी किसी बच्चे को पौधे अथवा पेड़ की पत्तियां तोड़ते देखा है? पेड़ की पत्तियाँ तोड़ने का उद्देश्य क्या है? इस घटना को पर्यावरण संरक्षण के मूल्य से जोड़िए।

बोध प्रश्न 1

1. मूल्य विकास के उदाहरण दीजिए

   ……..

   ……..

   ……..

2. किन्हीं दो परियोजनाओं का उल्लेख करें जिन्हें शिक्षकों/अभिभावकों द्वारा आरंभ किया जा सकता है

   ……..

   ……..

   ……..

माता-पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार में अनुशासन बनाए रखने के लिए पुरस्कार एवं दंड का उपयोग करें। परिवार के सदस्यों में वांछित व्यवहार विकसित करने अथवा उनके अवांछित व्यवहार को समाप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं दंड प्रचलन में हैं। जबकि पुरस्कार सौहार्दपूर्ण तथा घनिष्ठ संबंध बनाए रखने में मदद करते हैं, कठोर दंड से किशोरों में विद्रोह की भावना विकसित होती है।

ऐसे में छोटे बच्चे 'वापसी' (withdrawal) के सुरक्षा तंत्र का पालन कर सकते हैं। पिता अथवा माता को लगता है कि बच्चों को दंडित करना उनका अधिकार है। किन्तु, उन्हें इस अधिकार का प्रयोग मनमाने ढंग से नहीं करना चाहिए। अगर ठीक से समझाया जाए तो पुरस्कार एवं दंड चरित्र विकास तथा मूल्य संवर्धन के साधन बन जाते हैं। गांधीजी ने प्रेम, सहानुभूति तथा समझ से व्यक्ति का हृदय बदलने की वकालत की। स्वाभाविक रूप से, इसके फलस्वरूप, न केवल अनुशासन बनाए रखना, बल्कि उदाहरण के द्वारा मूल्यों की शिक्षा देना भी सरल होता है।

3.7 मूल्योन्मुख वातावरण का निर्माण

घर में मूल्योन्मुख वातावरण बनाने का उत्तरदायित्व माता-पिता का होता है। यह एक आसान लक्ष्य नहीं। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपना कर्तव्य अच्छे से निभाना होता है। इस उद्यम के दौरान उनसे कुछ कार्यों को पूरा करने की अपेक्षा की जाती है। इन कार्यों को करने की कोई अनोखी शैली नहीं होती। अतः, किसी कार्य को करने के तरीकों पर अलग-अलग राय होगी। इससे परिवार में झगड़े होते हैं। इन झगड़ों को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीक़ा कोई नहीं जानता।

परिवार में प्रत्येक सदस्य का एक पद होता है। यह स्थिति उनके बीच के संबंधों में परिलक्षित होती है। एक सामान्य परिवार में रिश्तों को पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई, बहन, पति एवं पत्नी के रूप में जाना जाता है। परिवार में दादा, दादी, पोता, पोती, सास, ससुर, चाचा, चाची, भाभी, आदि भी हो सकते हैं। दिन-प्रतिदिन के कामकाज में एक-दूसरे के साथ उनकी बातचीत परिवार के परिवेश को निर्धारित करती है। किसी को उनके बीच के व्यवहार का बहुत ध्यान से निरिक्षण करना होता है। पारिवारिक संबंध की गुणवत्ता परिवार द्वारा अपनाए गए मूल्यों की गुणवत्ता निर्धारित करती है।

परिवार के प्रत्येक सदस्य का विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं एवं जीवन के प्रति अलग-अलग स्वभाव होता है। यह स्वभाव सोचने के तरीकों को निर्धारित करता है, इसके कारण वास्तविकता को एक तरह से देखा जाता है तथा यह अन्य कारकों से संबंधित होता है। इससे घर का माहौल प्रभावित होता है।

जीवन के प्रति दृष्टिकोण परिवार के सदस्यों के दैनिक कामकाज में परिलक्षित होता है। इसी आधार पर उचित अथवा अनुचित का निर्धारण होता है। यह वास्तविकता परिवार के सदस्यों के लिए सत्य बन जाती है तथा इसकी व्याख्या इस प्रकार की जाती है। साझा करना, देखभाल करना एवं विश्वास करना, सभी, दृष्टिकोण से प्रभावित होते हैं। परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच के संबंध प्रेम-घृणा की भावनाओं द्वारा प्रभावित होते हैं। जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण बनाए रखने का उत्तरदायित्व माता-पिता का होता है।

परिवार में जीवन वरिष्ठ सदस्यों द्वारा बनाए गए विभिन्न नियमों द्वारा संचालित होता है। ये नियम परिवार द्वारा प्रचलित रीति-रिवाजों एवं परंपराओं के आधार पर विकसित किए गए हैं। परिवार के छोटे सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन नियमों का, जिनकी सीमाएँ होती हैं, पालन करें। इन सीमाओं के किसी भी उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाता है और प्रतिबंध लगाए जाते हैं। इन पारिवारिक रीति-रिवाजों एवं परंपराओं का पालन तथा प्रबलन मूल्यों की नींव बन जाता है।

3.7.1 अपने प्रतिपाल्य (वार्ड) को जानें

प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है। क्या आपने कभी सोचा है कि बच्चे कितने प्रकार के होते हैं? एक परिवार में बच्चों के बीच अद्भुत विविधता होती है। वे न केवल उम्र में, बल्कि रंग तथा क़द में भी भिन्न होते हैं। उनकी पसंद-नापसंद भी अलग-अलग होती है। एक को सफ़ेद कपड़े पसंद आ सकते हैं तो दूसरे को लाल। एक को आलू खाना पसंद हो सकता है और दूसरे को रोटी खाना पसंद हो सकता है.. प्रत्येक बच्चा एक परिस्थिति पर एक अनूठे अंदाज़ से प्रतिक्रिया

देता है। यह प्रतिक्रिया उनके पिछले अनुभव पर आधारित होती है। ये प्रतिक्रियाएँ बच्चे परिवार में दिन-प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के अवलोकन के दौरान अधिग्रहित करते हैं। एक बच्चा दिन-प्रतिदिन की घटनाओं में पिता तथा माँ के व्यवहार का उत्सुक पर्यवेक्षक होता है।

एक बच्चे की समझ, माता-पिता को उसके व्यवहार को चुने गए मूल्यों के अनुसार, वांछित दिशा में ढालने एवं परिवार में एक अनुकूल माहौल बनाने में सहायता करेगी।

3.8 माता-पिता की भूमिका

समाज के ताने-बाने में परिवार बुनियादी इकाई है। यह दबाव, तनाव एवं प्रतिकूलता के साथ-साथ बीमारी तथा ख़राब स्वास्थ्य के समय में हम सभी को संभालता है, इसलिए पारिवारिक संबंधों को पोषित तथा प्रबल किया जाना चाहिए।

एक बच्चा एक परिवार में पैदा होता है तथा माता-पिता उसके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। वे उसके पालन-पोषण में अहम भूमिका निभाते हैं, इसलिए माता-पिता का उत्तरदायित्व सचमुच बहुत बड़ा है। इसमें बहुत अधिक समय, धैर्य एवं बलिदान शामिल होता है तथा खुशहाल पारिवारिक जीवन के लिए माता-पिता को यह उत्तरदायित्व स्वीकारना होगा। माता-पिता अपने बच्चों के लिए आदर्श होते हैं। वे कहते हैं, "कोई समस्याग्रस्त बच्चे नहीं हैं, केवल समस्याग्रस्त माता-पिता हैं"। सभी बच्चे अच्छे पैदा होते हैं, किन्तु यदि उन्हें उपेक्षित किया जाता है तथा उन्हें प्यार एवं सुरक्षा प्रदान नहीं किया जाता है तथा उनकी बुनियादी शारीरिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं किया जाता हैं, तो वे स्वस्थ, प्रसन्न एवं संतुलित व्यक्ति के रूप में विकसित नहीं हो पाएंगे।

माता-पिता को प्रारंभ से ही अपने बच्चों के साथ सौहार्द, प्रेम तथा मैत्री का शक्तिशाली बंधन बनाने की आवश्यकता है, एवं बच्चे को दिया गया कोई भी पैसा माता-पिता के प्रेम, समझ तथा समय का विकल्प नहीं बन सकता है। जिन बच्चों के पारिवारिक बंधन मजबूत होते हैं एवं जिनके माता-पिता का अच्छा समर्थन होता है, उनके भटकने की संभावना कम होती है। इसलिए, एक स्वस्थ पारिवारिक वातावरण एक मूल्य-आधारित समाज की स्थापना के लिए बुनियादी है।

3.8.1 अभिभावकों के लिए दिशानिर्देश

माता-पिता को अपने बच्चों का सही ढंग से पालन-पोषण करने में मदद करने के लिए नीचे कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं:-

1) हमेशा याद रखें कि आप अपने बच्चे के आदर्श हैं। ऐसा कुछ भी न करें जिसका अनुकरण आप नहीं चाहते कि आपका बच्चा करे।
2) पिता तथा माता को एक ही भाषा बोलनी चाहिए। उन्हें आपस में चर्चा करनी चाहिए एवं बच्चे के पालन के लिए सरल नियम बनाने चाहिए।
3) माता-पिता को नियमों के पालन में निरंतरता रखनी चाहिए। किसी बच्चे के लिए यह बहुत भ्रमित करने वाली बात है कि जब माता-पिता अच्छे मूड में हों तो उसे कुछ करने की अनुमति दी जाए, एवं, दूसरे दिन, जब माता-पिता की मनःस्थिति बुरी हो, वही काम करने के लिए दंडित किया जाए।

4) अपने बच्चों के साथ जितना संभव हो उतना समय बिताएं। जब आप उनके साथ कोई खेल खेल सकें, तब उनके साथ पिकनिक तथा पारिवारिक सैर पर, अथवा छुट्टियों पर जाने की योजना बनाएं।

5) अपने बच्चे का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें तथा उससे विश्वासपूर्वक बात करके उसकी आवश्यकता विशेष को समझने का प्रयास करें। प्रत्येक बच्चा भिन्न होता है, तथा उसे अलग तरीके से संभाला जाना चाहिए। सभी प्रकार के सकारात्मक व्यवहार के लिए अपनी स्वीकृति एवं प्रोत्साहन दें, तथा उसे खिलने में मदद करें।

6) अपने बच्चों की तुलना न करें, अर्थात प्रतिभाशाली बच्चे की प्रशंसा न करें, तथा औसत बच्चे को नीचा न दिखाएँ। इससे ईर्ष्या भावना पैदा होती है, तथा हीनता एवं श्रेष्ठता की भावना का विकास होता है। प्रत्येक बच्चे को वैसा ही स्वीकार करें जैसा वह है, तथा जो बच्चा शैक्षणिक रूप से इतना उज्ज्वल नहीं है उसे मान्यता देने के लिए अलग-अलग तरीके खोजें।

7) बच्चों को अपनी संस्कृति एवं राष्ट्रीय विरासत के बारे में जागरूक करने के लिए अपने बच्चों के साथ प्रार्थना करें तथा राष्ट्रीय एवं अन्य त्योहारों का पालन करें।

8) अपने बच्चों को उचित एवं अनुचित के बीच भेदभाव की भावना का विकास करने में मदद करें एवं इस प्रकार उनमें मूल्य निर्णय विकसित करें।

9) अपने बच्चों को उनके दैनिक जीवन में अध्ययन, खेल तथा मनोरंजन के लिए आवंटित समय के साथ संतुलित कार्यक्रम बनाने के लिए मार्गदर्शित करें।

10) अपने बच्चों को टीवी तथा वीडियो पर केवल अच्छे कार्यक्रम देखने की अनुमति दें।

11) उनके पढ़ने के लिए उपयुक्त पुस्तकों का चयन करें तथा बड़े होने पर उन्हें महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के संपर्क में रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

12) उन्हें घर के काम बांटने के लिए प्रशिक्षित करें तथा उन्हें विशेष कृत्यों का भार सौंपे।

13) जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, अपनी व्यक्तिगत अधूरी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अपने बच्चों पर दबाव डालने की कोशिश न करें।

14) अपने बच्चों से आपकी उम्मीदें उनकी क्षमता के अनुरूप होनी चाहिए।

15) आवश्यक दिशानिर्देश प्राप्त करने तथा प्रत्येक पेशे के फ़ायदे एवं नुकसान पर चर्चा करने के बाद अपने बच्चे को अपना करियर चुनने दें।

16) जैसे-जैसे वह बड़ा हो रहा हो उसकी आदतों एवं मित्रों पर नज़र रखें। गलत दोस्तों द्वारा डाला गया सहकर्मी समूह का दबाव कई किशोरों को नशीली दवाओं तथा शराब का सेवन करने के लिए प्रेरित करता है तथा यदि समय रहते इसकी रोकथाम नहीं की गई, तो वे नशे के आदी हो सकते हैं।

17) जैसे-जैसे वे युवा वयस्क होते जाते हैं, उन्हें 'छोड़ने' तथा धीरे-धीरे उन पर से अपनी पकड़ ढीली करने का समय आ जाता है। उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने दें, लेकिन मांगे जाने पर मदद के लिए उपलब्ध रहें। अब आपकी भूमिका एक मित्र एवं परामर्शदाता की होनी चाहिए।

18) उचित समय पर उसे अपना जीवन साथी चुनने की अनुमति दें, किन्तु यदि आपका बेटा

या बेटी आपसे परामर्श मांगे तो चर्चा एवं सलाह देने के लिए तैयार रहें।

संक्षेप में, इस तीव्रता से बदलते समय में माता-पिता की भूमिका वास्तव में कठिन है, किन्तु माता-पिता को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। प्रेम, चिंता एवं त्याग 'पीढ़ी के अंतर' को बहुत सफ़लतापूर्वक पाट देते हैं।

3.9 समुदाय की भूमिका

बच्चे अपने मित्रों, प्रतिवेश एवं समुदाय से भी प्रभावित होते हैं। इसलिए मूल्यों के क्षरण की समस्या से न केवल माता-पिता एवं शिक्षकों के स्तर पर बल्कि समुदाय के स्तर पर भी निपटना होगा।

स्थानीय स्तर पर, सामुदायिक स्तर की गतिविधियों का प्रभावी आयोजन, कॉलोनी-वार आवासीय कल्याण संघों की भागीदारी से किया जा सकता है। लायंस एवं रोटरी क्लब की क्षेत्रीय समितियों द्वारा संबंधित कॉलोनी के सामुदायिक केंद्रों पर बैठकें भी आयोजित की जा सकती हैं।

प्रत्येक कॉलोनी में उसके नागरिकों के रूप में बहुत सारी प्रतिभाएँ उपलब्ध हैं जिनके पास, उन युवा वयस्कों की तुलना में, जिन्हें काम पर भागना पड़ता है तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करना पड़ता है, बहुत सारे अनुभव एवं समय हैं। वे सामुदायिक सेवा गतिविधियों के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। खेल एवं सहायता के साथ-साथ स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं स्वास्थ्यविद्या, जैसे विचारों पर आधारित कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से बच्चों/युवा वयस्कों की ऊर्जा को संपूर्ण प्रणालियों में प्रसारित करने के लिए समुदाय के सदस्यों को शामिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एड्स जागरूकता, छोटे परिवार के मानदंडों को अपनाना, पर्यावरण की सुरक्षा, प्रदूषण की जाँच करना, उचित कचरा निराकरण, मच्छरों के प्रजनन को रोकना, आदि, जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर फिल्में दिखाई जा सकती हैं।

युवा व्यक्तियों एवं छात्रों को साक्षरता कक्षाएं, "हर एक हर एक को सिखाता है" कार्यक्रम तथा सभी के लिए शिक्षा कार्यक्रम (ईएफए) संचालित करने के लिए संगठित किया जा सकता है।

नुक्कड़ नाटकों का मंचन "संयुक्त हम खड़े हैं, विभाजित हम गिरेंगे", "देखभाल एवं साझा करना" "जीवन के सभी रूपों के लिए सम्मान", "ईमानदारी एवं सत्यवादिता" तथा "दूसरों की मदद करना", जैसे विषयों पर किया जा सकता है। ।

टीवी-श्रृंखला, फिल्मस्ट्रिप्स तथा फिल्मों के रूप में मूल्य-आधारित मनोरंजन प्रदान करने के लिए एक शक्तिशाली मुक़दमा बनाया जा सकता है।

लोगों को सभी समस्याओं को शांतिपूर्वक हल करने के लिए प्रेरित करने के लिए सामूहिक चर्चा का आयोजन किया जा सकता है|

बोध प्रश्न 2

1. माता-पिता घर में मूल्योन्मुख माहौल कैसे बना सकते हैं? किन्हीं दो को उल्लिखित करें?

   ……..

   ……..

   ……..

2. माता-पिता को बच्चों को मूल्यों के साथ बड़ा करने में सहायता करने वाले दो दिशानिर्देशों का उल्लेख करें?

   ……..

   ……..

   ……..

3.9.1 आवश्यक कार्य योजना

निम्नलिखित कार्य योजना का पालन किया जा सकता है--

1) अपने प्रतिवेश में ऐसे विद्यालयों की पहचान करें जो ऐसे किसी भी कार्यक्रम में शामिल होने के एवं स्थानीय प्रशिक्षुओं का सर्वेक्षण करने के लिए अपने वरिष्ठ छात्रों को शामिल करने के इच्छुक हैं।

2) आठ से दस स्वयंसेवकों का एक सहयोगी कार्यबल बनाएँ जो घर-घर, विशेष रूप से झुग्गी-झोपड़ी में जाकर, वहाँ के रहने वालों से संपर्क करें तथा उन्हें अपनी झुग्गियों को साफ रखना, अपने बच्चों को स्कूल भेजना सिखाएँ, एवं उनके साथ स्वास्थ्य, स्वास्थ्यविद्या एवं टीकाकरण कार्यक्रम पर बातचीत करें।

3) नुक्कड़ नाटक, ग्रामीण क्षेत्र में, महत्वपूर्ण संदेश प्रसार के लिए एक अच्छा माध्यम है। महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर फ़िल्म भी दिखाई जा सकती है।

4) अपनी कॉलोनी में उचित कचरा निराकरण प्रणाली स्थापित करें; साथ ही इस बात को पक्का करें कि वहाँ स्थिर पानी जमा न हों। ये दोनों उपाय घरेलु मक्खियों एवं मच्छरों की उत्पत्ति को रोकेंगे तथा इस प्रकार वहाँ के निवासियों को संक्रामक बीमारियों से बचाएँगे।

5) कॉलोनी के पार्कों को साफ-सुथरा रखने के लिए वहाँ के निवासियों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक कॉलोनी में पर्यावरण को स्वच्छ रखना आवश्यक है।

6) कॉलोनी के बच्चों एवं युवाओं के लिए विभिन्न प्रकार के नाटकीय खेलों का आयोजन करें ताकि उनकी ऊर्जा को व्यापक बढ़ावा मिल सके।

7) सामुदायिक बंधनों को प्रबल करने के लिए तथा युवा सदस्यों को उत्तरदायित्व प्रदान करने के लिए सामुदायिक मिलन समारोहों, उत्सवों एवं त्योहारों का आयोजन करें।

8) सभी कार्यकर्मियों, एवं सकारात्मक भूमिका निभाने वाले सभी लोगों को मान्यता प्रदान करें।

9) सदस्यों को व्यस्क साक्षरता कार्यक्रम की, तथा उन छोटे बच्चों के लिए जो स्कूल नहीं

जा सकते, कक्षाएँ चलाने के लिए प्रेरित करें।

10) समुदाय में बीमार व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य सेवा चिकित्सा, रक्तदान एवं नेत्रदान शिविर का आयोजन करें।

11) एक समुदाय के डॉक्टर एवं पैरा-मेडिकल स्टाफ़ समुदाय की सेवा के लिए एड्स जागरूकता, पोलियो पल्स तथा अन्य टीकाकरण कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं।

12) झुग्गीवासियों तथा ऐसे अन्य लोगों की सहायता के लिए, जिन्हें स्व-रोजगार के लिए विशेष कौशल सीखने की आवश्यकता है, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किये जा सकते हैं।

3.10 सारांश

मूल्यों की सामान्य गिरावट ने मूल्य शिक्षा की मांग पैदा कर दी है। अकेले विद्यालय इस मांग को पूरा नहीं कर सकते। अतः, एक संस्था के रूप में परिवार एवं प्रमुख खिलाड़ी के रूप में माता-पिता से मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है। माता-पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार में अनुशासन बनाए रखें तथा अपने प्यार, करुणा एवं सहानुभूति के व्यवहार के माध्यम से परिवार में पोषण का माहौल बनाएं। उन्हें विकास की प्रक्रिया को जानना चाहिए तथा अपने प्रतिपाल्य की सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए एवं बच्चों को साथियों के दबाव से मुक्त करना चाहिए।

प्रत्येक परिवार से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल्यों को पहचाने तथा उन्हें संजोए। परिवार एवं समाज के अस्तित्व के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है।

3.11 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. अ) कार्य नैतिकता ब) ईमानदारी स) सामाजिक न्याय तथा द) लिंग संबंधी मुद्दे

2. क) शिविरों एवं ट्रेक पर बच्चों के साथ जाएं।

   ख) पर्यावरण, इतिहास, आदि पर छात्रों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला चलाना।

बोध प्रश्न 2

1. अ) परिवार के सदस्यों के बीच साझा-देखभाल का रिश्ता बच्चों के नज़रिए पर प्रभाव डालता है|

   ब) परिवार के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करें।

2. क) बच्चों के साथ जितना संभव हो उतना समय बिताएं। बच्चों को अपने साथ पिकनिक अथवा पारिवारिक सैर पर ले जाएं|

   ख) अपने बच्चे का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें तथा उसे विश्वास में लेकर उसकी आवश्यकता विशेष को समझने का प्रयास करें।

3.12 संदर्भ

गुप्ता, के.एम. (1984)। स्कूली बच्चों का नैतिक विकास, गुड़गांव: अकादमिक प्रेस।

कश्यप, सुभाष सी (2002)। नागरिक और संविधान, नई दिल्ली: प्रकाशन प्रभाग, सरकार। भारत की।

कोहलबर्ग लॉरेंस (1981)। नैतिक विकास का दर्शन: नैतिक चरण और न्याय का विचार (नैतिक विकास पर निबंध, खंड 1); हार्पर एंड रो.

मित्रा शिब के. (1994)। मूल्य शिक्षा और आदतें - एनसीईआरटी प्रकाशन, नई दिल्ली।

मुजीब एम (1965)। शिक्षा एवं पारंपरिक मूल्य, मीनाक्षी प्रकाशन

एन.सी.ई.आर.टी. (1990)। प्राथमिक शिक्षकों के लिए मूल्य शिक्षा पर विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम, नई दिल्ली।

एनपीई (1986) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली: एमएचआरडी, शिक्षा विभाग

पियागेट जीन (1998)। दुनिया के बारे में बच्चे की अवधारणा: बाल मनोविज्ञान का 20वीं सदी का क्लासिक; रूटलेज, लंदन और न्यूयॉर्क।

रूहेला, एस.पी. (एड) (1986)। मानवीय मूल्य एवं शिक्षा; स्टर्लिंग पब्लिशर्स (पी) लिमिटेड, दिल्ली

शर्मा, जे.एन. और गोयल, बी.आर. (2005)। मूल्यों के समावेश के लिए रणनीतियाँ, नई दिल्ली। नागरिकता विकास सोसायटी

शर्मा, जे.एन. और गुप्ता, के.एम. (1996)। वैल्यू एजुकेशन, नई दिल्ली: सिटीजनशिप डेवलपमेंट सोसाइटी।

इकाई 4 मूल्य विकास पर मीडिया का प्रभाव

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मीडिया की परिभाषा एवं विकास

4.3.1 मीडिया क्या है?

4.3.2 मीडिया का विकास

4.4 मीडिया के प्रकार

4.5 मीडिया के कार्य

4.5.1 जानकारी का प्रसार

4.5.2 शिक्षा प्रदान करना

4.5.3 मनोरंजन प्रदान करना

4.6 मीडिया का प्रभाव: मीडिया और मूल्य विकास

4.6.1 मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

4.6.2 मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

4.6.3 मास मीडिया और बच्चे

4.7 पारंपरिक मीडिया के प्रभाव

4.8 विज्ञापन

4.9 सारांश

4.10 बोध प्रश्न के उत्तर

4.11 संदर्भ

4.1 प्रस्तावना

हम एक मध्यस्थ वातावरण में रहते हैं। हम जहां भी जाते हैं, जो कुछ भी करते हैं, हम मीडिया की उपस्थिति महसूस करते हैं - या तो वह सब कुछ सामने लाते हैं जो हमारे आसपास और उससे भी बाहर हो रहा है, या जो हमारे साथ हो रहा है उस पर रिपोर्टिंग करते हैं। आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि, 'मीडिया ने दुनिया पर कब्ज़ा कर लिया है।' यह सर्व-व्यापकता, पहुंच की सार्वभौमिकता, महान लोकप्रियता और सार्वजनिक चरित्र की विशेषता है जिसे 'मास मीडिया' शब्द में संदर्भित किया जा रहा है।

मीडिया हमें ऐसी जानकारी प्रदान करता है जो हमें न केवल हमारी दैनिक गतिविधियों से संबंधित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, बल्कि उन निर्णयों को भी लेने में सक्षम बनाती है जिनका जीवन बदलने वाला महत्व हो सकता है जैसे रोजगार के अवसर और उच्च शिक्षा के अवसर आदि। आपको इग्नू के इस कार्यक्रम के बारे में जानकारी कैसे मिली? यह या तो

समाचार पत्रों, इंटरनेट, मोबाइल फोन, रेडियो या टेलीविजन आदि के माध्यम से हुआ होगा और इनमें से प्रत्येक एक मीडिया है।

सामाजिक जीवन के हर पहलू पर मीडिया का प्रभाव और मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण पर इसका प्रभाव आज प्रासंगिक चिंता का विषय है। चर्चा यह नहीं है कि मीडिया का प्रभाव है या नहीं, बल्कि बहस इन प्रभावों के 'क्या', 'कैसे' और 'क्यों' पर है। इस इकाई में हम मीडिया के प्रभाव और मूल्य विकास में इसके योगदान को समझने का प्रयास करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपको निम्नलिखित में सक्षम होना चाहिए;

- मीडिया की परिभाषा को समझने में;
- मीडिया के विभिन्न रूपों पर चर्चा करने में;
- मीडिया के विभिन्न कार्यों का विश्लेषण करने में;
- मीडिया के प्रभाव पर चर्चा करने में

4.3 मिडिया की परिभाषा एवं विकास

4.3.1 मीडिया क्या है?

आइए, सबसे पहले यह समझते हैं कि मीडिया क्या है? सामान्यतः 'मीडिया' संचार के विभिन्न माध्यमों को संदर्भित करता है। संचार हमें मनुष्य बनाता है। हम संचार के माध्यम से अपने विचारों एवं अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। संचार से वंचित हम अलग-थलग, अकेले तथा उदास हो जाते हैं।" (माइकल 2007)। सूचना के आदान-प्रदान की यह आवश्यकता तब उत्पन्न हुई जब मनुष्य तीव्रता से बड़े सामाजिक समूहों में रहने लगे। संचार की कला के बिना मनुष्य, एक प्रजाति के रूप में, समृद्ध नहीं होता। इसलिए, मीडिया उन साधनों अथवा चैनलों की श्रृंखला को संदर्भित करता है जिनके द्वारा एक मनुष्य खुद को दूसरे मनुष्य के सामने स्वयं को व्यक्त करने में सक्षम होता है।

मीडिया सूचना या डेटा को संग्रहीत एवं वितरित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला उपकरण हो सकता है और इसे विज्ञापन मीडिया, प्रसारण मीडिया, डिजिटल मीडिया, मास मीडिया, प्रिंट मीडिया, आदि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह जानना प्रासंगिक है कि मार्शल मैकलुहान (1964), जो एक प्रसिद्ध मीडिया सिद्धांतकार और आलोचक हैं, ने कैसे मीडिया को "स्वयं का कोई भी विस्तार" के रूप में परिभाषित किया। जिस प्रकार हथौड़ा हमारी भुजाओं को फैलाता है, तथा पहिया हमारे पैरों एवं टांगों को फैलाता है, उसी प्रकार संचार का माध्यम हमारे विचारों को हमारे मस्तिष्क के भीतर से दूसरों तक पहुंचाता है। उदाहरण के लिए, रेडियो, टेलीविज़न तथा समाचार पत्र विभिन्न प्रकार के मीडिया हैं जो समाचार, विज्ञापन एवं मनोरंजन के माध्यम से जनता को जानकारी और ज्ञान प्रदान करने वाले संदेश पहुंचाते हैं जो लोगों तक व्यापक रूप से पहुंचते हैं अथवा उन्हें प्रभावित करते हैं। आज संचार के उच्च स्तर उपलब्ध होने के साथ-साथ सीखने एवं ज्ञान के स्तर में भी प्रगति हुई है।

4.3.2 मीडिया का विकास

विभिन्न तकनीकी नवाचारों एवं सुधारों के माध्यम से संचार मीडिया ने सदियों से प्रगति की है। घुरघुराने (grunts) एवं संकेतों से लेकर बोली जाने वाली बोलियों एवं बाद में लिपिबद्ध भाषाओं की अधिक परिष्कृत प्रणाली तक संचार का विकास मानव इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक है। निम्नलिखित सामान्य शब्दों में संचार प्रौद्योगिकियों के इतिहास पर चर्चा करने का एक प्रयास है - मौखिक से लिखित शब्द तक एवं लिखित से तकनीकी तथा डिजिटल मीडिया तक परिवर्तन। मीडिया आज एक बहुआयामी इकाई के रूप में विकसित हो गया है जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इंटरनेट जैसी उपलब्ध तकनीक का उपयोग करके, अब हम पृथ्वी, या अंतरिक्ष में, कहीं भी एक-दूसरे से तुरंत संवाद कर सकते हैं।

क) मौखिक शब्द

वाणी - प्रारंभिक काल में, मनुष्य ध्वनियों तथा सांकेतिक भाषा के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद करते थे, जो बाद में वाणी तथा भाषा की एक विस्तृत प्रणाली के रूप में विकसित हुई। मौखिक संचार हमारे रोज़मर्रा के जीवन में मौजूद है। यहाँ तक कि कार रेडियो से नवीनतम यातायात रिपोर्ट प्रदान किये जाने से लेकर व्याख्यान कक्ष में छात्रों को पढ़ाने वाले प्रोफेसर तक, मौखिक संचार हर जगह उपस्थित होता है। हालाँकि, मौखिक संचार व्यावहारिक लगता है, फिर भी यह सही नहीं होता है, एवं पारस्परिक तरीकों के लिए ही सबसे उपयुक्त है (जब तक कि यह प्रौद्योगिकी द्वारा मध्यस्थ न हो - उदाहरण के लिए, रेडियो प्रसारण)। मानव स्वर एवं सांकेतिक भाषा दूरी के संदर्भ में सीमित होते हैं (फिर से प्रौद्योगिकी द्वारा मध्यस्थता तक) क्योंकि जानकारी एवं विचारों के संरक्षण के लिए मनुष्य की भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता होती है जो हमेशा संभव नहीं था। संचार के ऐसे सभी रूप मानव स्मृति पर निर्भर थे, जिसके, एक अपूर्ण उपकरण होने के कारण, समय के साथ भ्रष्ट होने, अथवा खो जाने की संभावना होती है। कोई कितना याद रख सकता है इसकी भी एक सीमा होती है। समय तथा दूरी पर विजय पाने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों का आविष्कार किया गया।

ख) लिखित शब्द

लिपि - भाषण की अपूर्णताओं के कारण, प्रतीक की मुख्य अवधारणा के आधार पर, संचार के नए रूपों का आविष्कार हुआ। लेखन, सभी रूपों में, दूरी एवं समय पर विजय पाने के लिए एक महत्वपूर्ण नवाचार था। संदेशों को रिकॉर्ड किया जा सकता था, तथा भौतिक रूप से दूर-दूर तक वितरित किया जा सकता था, एवं उन्हें सदियों तक के लिए सहेजा जा सकता था। आज, काग़ज़ वह प्रमुख माध्यम है जिसके द्वारा किसी संदेश को लिखित अथवा मुद्रित शब्द के रूप में कहीं पहुंचाया जाता है। हालाँकि, काग़ज़ से बहुत पहले, *चित्रलिपि* का उपयोग मिस्रवासियों द्वारा 3000 ईसा पूर्व में किया जाता था। 26वीं शताब्दी ईसा पूर्व की सुमेरियन भाषा में *कीलाकार* लिपि को मानव लेखन के आरंभिक उदाहरणों में से एक के रूप में भी उद्धृत किया जा सकता है। आधुनिक पश्चिमी वर्णमाला सुमेरियों की लिखित लिपि से ही विकसित हुई। गुफ़ा चित्र, *पेट्रोग्लिफ़*, चित्रलेख, भावचित्र भी आधुनिक लेखन के अग्रदूत थे।

पेपिरस पौधे के तने से निर्मित पेपिरस का आविष्कार एवं उपयोग मिस्रवासियों द्वारा 3000 ईसा पूर्व में किया गया था। जानवरों की खाल से बने चर्मपत्र भी एक माध्यम के रूप में उपयोग किये जाते थे। पौधे के रेशों के घोल से बने काग़ज़ का उपयोग पहली बार चीनियों द्वारा 100 ईस्वी में किया गया था। पेपिरस, चर्मपत्र तथा काग़ज़ के विकास ने लिखित शब्द को और अधिक सुलभ बना दिया।

मुद्रण - मीडिया के साधनों के विकास में अगला महत्वपूर्ण मील का पत्थर प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार है। संदेश को हाथ से लिखना एक अत्यंत लंबी प्रक्रिया थी, इसमें समय लगता था एवं नक़ल करने में त्रुटियाँ भी हो सकती थीं। इसका समाधान प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार में मिला। चल धातु प्रकार की प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार 1439 में एक जर्मन, जोहानेस गुटेनबर्ग, द्वारा किया गया था। गुटेनबर्ग की प्रेस ने लोगों के जीवन को बदल दिया। प्रिंटिंग प्रेस के विकास के साथ, विचारों को अब भविष्य की शताब्दियों के लिए संग्रहीत किया जा सकता है। टाइपराइटर के आविष्कार से भी लिखित शब्द के उपयोग में काफ़ी सुविधा हुई। तथा 1980 के दशक के अंत तक, वर्ड प्रोसेसर एवं पर्सनल कंप्यूटर ने, पश्चिमी संसार में, पहले टाइपराइटर द्वारा किए गए कार्यों की, काफ़ी हद तक जगह ले ली थी।

ग) दूरसंचार

प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने निश्चित रूप से संचार को आसान बना दिया था, किंतु लिखित शब्द को अपने गंतव्य तक पहुंचने में कई दिन अथवा सप्ताह लग सकते थे। वैज्ञानिकों ने सूचना प्रसारित करने का एक तेज़ तरीका खोज निकाला। धूम्र सिग्नल, समुद्री झंडे, जैसे दृश्य संकेतों के उपयोग से शुरू होकर और वर्तमान समय में ड्रम, टेलीफ़ोन, रेडियो तथा टेलीग्राफ दूरसंचार जैसे ऑडियो-सिग्नलों के उपयोग में टेलीविज़न, कंप्यूटर नेटवर्किंग, इंटरनेट, मोबाइल और सैटेलाइट फोन, जैसे उन्नत विद्युत/इलेक्ट्रॉनिक संकेतों का उपयोग शामिल है।

- **टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन** - फ्रांसीसी वैज्ञानिकों ने 18वीं शताब्दी के अंत में एक संचार प्रणाली का विकास किया जो सिग्नल प्रसारित करने के लिए प्रकाश का उपयोग करती थी। अमरीकी आविष्कारक सैमुअल मोर्स ने एक ऐसी मशीन बनाकर इस प्रणाली में सुधार किया जो भाषण को विद्युत संकेतों तथा फिर लिखित शब्दों में बदल देती है। उनका टेलीग्राफ शीघ्रता से संचार करने का एक लोकप्रिय तरीका बन गया। टेलीग्राफ का आविष्कार संचार प्रौद्योगिकी में आगे की प्रगति के लिए प्रेरणा था। टेलीग्राफ के पीछे के सिद्धांत का उपयोग करते हुए, अमेरिकी आविष्कारक एलीशा ग्रे एवं अलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल ने भाषण को विद्युत संकेत में बदल दिया। टेलीग्राफ के विपरीत, यह विद्युत संकेत वापस वाणी में परिवर्तित हो गया। ग्राहम बेल का टेलीफोन, अब तक का सबसे आकर्षक एकल पेटेंट, 1876 में एक ही टेलीग्राफ़ केबल पर एक ही समय में कई संदेश प्रसारित करने के प्रयास के दौरान आया था।

घ) डिजिटल प्रौद्योगिकी

कंप्यूटर ने डिजिटलीकरण की प्रक्रिया के साथ संचार प्रौद्योगिकी में एक बड़ी छलांग का प्रतिनिधित्व किया। इस तकनीकी नवाचार ने संचार को पहले से कहीं अधिक तेज़ बना

दिया है। इंटरनेट को एक खुला संचार क्षेत्र माना जा सकता है जो दुनिया भर के लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है। चैट, ई-मेल, ये सभी, लोगों द्वारा भौतिक दूरी को जोड़ने एवं संचार करने के विभिन्न तरीकों के प्रमुख उदाहरण हैं। एक गहरी साँस लेने के समय से भी कम समय में, हम ईमेल से चैट से ब्लॉग से सोशल नेटवर्क तक के बदलाव का अनुभव कर चुके हैं।

प्रिंट से लेकर डिजिटल मीडिया तक की प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, एक बटन दबाने भर से जानकारी उपलब्ध हो जाती है| मीडिया, जैसा कि कहा जाता है, बस एक क्लिक दूर है। मीडिया प्रौद्योगिकी में हुई इस क्रांति ने एक ऐसे 'सूचना सुपरहाइवे' का मार्ग प्रशस्त किया जो संसार को एक "वैश्विक गांव" में बदल रहा है। मार्शल मैक लुहान वैश्विक गाँव की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने एवं इसके सामाजिक निहितार्थों पर विचार करने वाले पहले व्यक्ति थे। सूचना के तीव्र प्रसार और संचार ने विश्व को सिकोड़ दिया है, जिससे यह छोटी एवं घनिष्ठ हो गई है। आप अपने घरों में बैठे-बैठे हज़ारों मील दूर खेले जा रहे एक क्रिकेट मैच का सीधा प्रसारण देख सकते हैं, उसके आनंद में ऐसे भाग ले सकते हैं जैसे आप वास्तव में कार्यक्रम स्थल पर मौजूद हों। किसी दुर्घटना के पीड़ित व्यक्तियों के रिश्तेदारों का दर्द एवं पीड़ा इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया के माध्यम से तुरंत हमारे सामने आ जाता है।

आज, न केवल उन्नत प्रौद्योगिकियां हमारे लिए उपलब्ध हैं, बल्कि वे अधिक किफ़ायती भी हैं, जिससे घरों, कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों आदि में 'मीडिया-समृद्ध वातावरण' को बढ़ावा मिल रहा है। घरों में कई संचार उपकरण उपलब्ध हैं, जिससे मीडिया सामग्री के उपयोग की मात्रा बढ़ रही है। इन परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ उन्हें सक्रिय रूप से बढ़ावा देने वाले मीडिया के ही विभिन्न रूप हैं - प्रिंट मीडिया (किताबें, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ), ऑडियो मीडिया (रेडियो तथा संगीत उद्योग), ऑडियो-विज़ुअल मीडिया (टेलीविजन, वीडियो एवं सिनेमा) और, हाल ही में, कंप्यूटर चालित मीडिया ('इंटरनेट'),

4.4 मिडिया के प्रकार

मोटे तौर पर मीडिया दो प्रकार के होते हैं- प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक।

प्रिंट मीडिया- प्रिंट मीडिया समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विवरणिकाओं (ब्रोशर), समाचार पत्रों, पोस्टरों एवं अन्य मुद्रित प्रकाशनों के माध्यम से समाचारों के मुद्रण तथा वितरण से जुड़ा है। समाचार पत्र प्रिंट मीडिया का सबसे लोकप्रिय तथा आसानी से पहचाना जाने वाला रूप है। इसे अक्सर पुराना मीडिया कहा जाता है। कभी-कभी, प्रिंट मीडिया को डिस्प्ले मीडिया से विभेदित किया जाता है, जो होर्डिंगों, संकेतों तथा पोस्टरों को दर्शाता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया- यह इलेक्ट्रॉनिक संचार के कई अलग-अलग रूपों के लिए एक सामान्य शब्द है जो 'न्यू मीडिया' हैं। यह शब्द "पुराने" मीडिया रूपों के संबंध में है, जैसे प्रिंट समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ, जो पाठ एवं ग्राफिक्स का स्थिर प्रतिनिधित्व करती हैं। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के उपयोग से न्यू मीडिया संभव हुआ है। इसे अक्सर निम्नलिखित नाम दिया जाता है:

- वेब साइट
- ऑडियो तथा वीडियो स्ट्रीमिंग
- चैट रूम
- ईमेल
- वेब विज्ञापन
- डीवीडी एवं सीडी-रोम मीडिया
- इंटरनेट टेलीफ़ोनी
- डिजिटल कैमरे
- मोबाइल कंप्यूटिंग

मीडिया विभिन्न रूपों में उपलब्ध होता है जो इस प्रकार हैं:

पारंपरिक मीडिया प्रकृति में गैर-इलेक्ट्रॉनिक है तथा हमारी संस्कृति का एक अंग है। ये वो लोक रूप हैं जिनका उपयोग पारंपरिक रूप से मौखिक परंपरा में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सूचना प्रसारित करने के साधन के रूप में किया जाता रहा है। इनमें लोक रंगमंच एवं नृत्य (जात्रा, भवई, महाराष्ट्र का तमाशा, आदि), लोक गीत (बंगाल का बाउल, असम का बिहू आदि), धार्मिक प्रवचन (कथा, कीर्तन आदि), नुक्कड़ नाटक तथा माइम, कहानी सुनाना (पंचतंत्र, रामायण और महाभारत आदि) एवं कठपुतली (पश्चिमी बंगाल का पुतलिनच, तमिलनाडु का बोम्मालतम) शामिल हैं।

मास मीडिया एक अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जो मीडिया के उस वर्ग को दर्शाता है जिसकी रचना विशेष रूप से बड़े दर्शकों तक पहुंचने के लिए की गई है। यह शब्द 1920 के दशक में राष्ट्रव्यापी रेडियो नेटवर्क के आगमन तथा समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के बड़े पैमाने पर प्रसार के साथ गढ़ा गया था।

सोशल मीडिया आज चर्चा का विषय है एवं यह व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक उपयोग के लिए सामाजिक संपर्क का माध्यम है। अपने सबसे बुनियादी अर्थ में, सोशल मीडिया लोगों को समाचार, सूचना एवं सामग्री खोजने, पढ़ने तथा साझा करने के लिए संचार को इंटरैक्टिव संवाद में बदलने के लिए वेब-आधारित तकनीकों का उपयोग करता है। सोशल नेटवर्किंग साइटों के कुछ उदाहरणों में फेसबुक, ऑर्कुट, ट्विटर एवं यूट्यूब शामिल हैं, जिनका उद्देश्य फोटो तथा वीडियो साझा करना, समाचार एकत्रीकरण एवं ऑनलाइन संदर्भ स्रोत हैं, जहां कोई लेखों के लिए वोट करके तथा उन पर टिप्पणी करके बातचीत कर सकता है।

बोध प्रश्न 1

1 मीडिया के कितने प्रकार होते हैं?

.....

.....

.....

2 सोशल मीडिया क्या है?

.....

.....

.....

3 मीडिया के विकास के विभिन्न चरण क्या हैं?

.....

.....

.....

4.5 मिडिया के कार्य

मूल रूप से, मीडिया को तीन कार्य करने वाले के रूप में वर्णित किया गया है: सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन।

4.5.1 सूचना का प्रसार

मास मीडिया भारी मात्रा में जानकारी प्रदान करता है। मास मीडिया का उपयोग दर्शकों को कुछ उत्पादों एवं सेवाओं (वाणिज्यिक विज्ञापन), सामयिक मुद्दों (समाचार, समसामयिक मामलों के कार्यक्रम, वृत्तचित्र, अभियान, साक्षात्कार, पैनल चर्चा तथा सार्वजनिक बहस, आदि) और संस्कृति (खेल पर कार्यक्रम, संगीत, नाटक और कला) के बारे में सूचित करने के लिए किया जाता है। इनके उदाहरण विभिन्न समाचार चैनल, डिस्कवरी, एनिमल वर्ल्ड, मूवी चैनल, क्विज़ शो, कार्टून चैनल, आदि हैं।

4.5.2 शिक्षा प्रदान करना

विभिन्न मीडिया का उपयोग; उदाहरण के लिए दृश्य-श्रव्य (टेलीविजन), ऑडियो (रेडियो), स्वर एवं पाठ (मोबाइल टेलीफ़ोनी पर लघु संदेश सेवाओं अथवा एसएमएस सहित टेलीफ़ोन) और मल्टीमीडिया (इंटरनेट) भी; दूरस्थ शिक्षार्थियों के साथ संचार के प्राथमिक घटक हैं। यहां तक कि, पारंपरिक कक्षा शिक्षण में भी, शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर व्याख्यान देकर शिक्षण सीखने की प्रक्रिया की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मीडिया प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षण सहायक के रूप में तीव्रता से किया जा रहा है। अनौपचारिक तथा स्व-निर्देशित अधिगम के कई अवसर हैं, क्योंकि लोग मीडिया के माध्यम से स्वतंत्र रूप से अपने हितों का पालन कर रहे हैं। अपने सभी कार्यों में, जनसंचार माध्यम अनौपचारिक शिक्षा के एजेंट के रूप में भी कार्य करता है। मीडिया लोगों को उन लोगों से मिलने का एक अनूठा अवसर प्रदान कर सकता है जिनसे वे अन्यथा नहीं मिलते। इस पहचान के माध्यम से, लोग जो पहले से जानते हैं उसे सुदृढ़ कर सकते हैं अथवा नई शिक्षा ग्रहण करने, अथवा न-सीखने (सीखे हुए को भुलाने) का अनुभव कर सकते हैं। अनौपचारिक शिक्षा के एजेंट के रूप में मास मीडिया की क्षमता उन बच्चों के मामले में अधिक शक्तिशाली है जो उन पात्रों की नक़ल करते हैं जो उन्हें पसंद आते हैं। अक्सर बच्चों को लोकप्रिय पात्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले तौर-तरीक़ों, हाव-भाव एवं भाषा की नक़ल करते देखा जाता है, यही वजह है कि आप देखेंगे कि विज्ञापनदाता दर्शकों को कुशल विशेषज्ञों अथवा अतिरंजित कैमरा वर्क द्वारा किए गए कार्यों की नक़ल करने के ख़तरों

के प्रति आगाह करते हुए अस्वीकरण तथा चेतावनियां डालते हैं। ऐसी सावधानी के साथ स्क्रॉल डालने वाले कुछ लोकप्रिय विज्ञापन मोटरसाइकिल, शीतल पेय, आदि से संबंधित हैं जहां मॉडलों को अलौकिक करतब करते हुए दिखाया जाता है। एक लोकप्रिय हिंदी भाषा की फिल्म के चरित्र 'कृष' की नक़ल करते समय एक युवा लड़के द्वारा इमारत से कूदने तथा स्वयं को चोट पहुँचाने की घटना अखबार में छपी थी। किशोरों के मामले में, नक़ल का संकेत नए फैशन, उत्पादों, विचारों, रुचियों तथा व्यवहारों के प्रसार से होता है। मीडिया लोगों के मूल्यों, प्राथमिकताओं अथवा व्यक्तिगत प्रभावकारिता एवं परिणाम अपेक्षाओं की धारणाओं को बदलकर कार्रवाई के लिए प्रेरणा पैदा करता है।

4.5.3 मनोरंजन प्रदान करना

मीडिया मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, क्योंकि यह भावनात्मक विश्राम, सांस्कृतिक आनंद (यानी समस्याओं से क्षणिक मुक्ति का प्रावधान) प्रदान करता है तथा बोरियत को समाप्त करता है। ऐसे समय में भी जब टेलीविज़न जनसंचार माध्यमों पर हावी होता दिख रहा है, प्रिंट मीडिया मनोरंजन की दुनिया में अपनी जगह बनाए हुए है। हास्य स्तंभ, कॉमिक्स, फीचर कहानियां, क्रॉसवर्ड पहेलियाँ शब्द एवं संख्या खेल कई पाठकों के बीच रुचि जगाते रहते हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त मीडिया की अन्य भूमिकाएँ इस प्रकार हैं:

- **जनमत को प्रभावित करना**: सूचना प्रदान करने के साथ-साथ मीडिया जनमत को आकार देने में भी सहायता करता है। शोध से पता चलता है कि महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनता जो रुख़ अपनाती है, वह मीडिया से प्रभावित होता है, ख़ासकर जब वे अलग-अलग विचार व्यक्त करते हैं तथा मुद्दों का गहन विश्लेषण प्रदान करते हैं।

- **एजेंडा-सेटिंग**: 'एजेंडा सेटिंग' (मैककॉम्ब्स और शॉ, 1972) मीडिया का एक अत्यंत शक्तिशाली प्रभाव न कि इस बात पर है कि दर्शकों को क्या सोचना चाहिए, बल्कि निश्चित रूप से इस बात पर है कि उसे किस बारे में सोचना चाहिए - हमें यह बताने की क्षमता रखना है कि कौन से मुद्दे महत्वपूर्ण हैं। यह 'जनमत' शब्द की तुलना में दायरे में अधिक विशिष्ट है तथा इसका तात्पर्य जनता के लिए "मीडिया प्रमुखता" (अर्थात समाचार मीडिया द्वारा प्रमुख माने जाने वाले मुद्दे) को स्थानांतरित करना है, जिससे यह एक सार्वजनिक एजेंडा बन जाता है। मीडिया सिद्धांतकारों द्वारा एजेंडा सेटिंग को अनुभवजन्य रूप से साबित कर दिया गया है कि मीडिया प्रमुखता को नीतिगत प्रमुखता (यानी सार्वजनिक नीति निर्माताओं, सरकारों आदि द्वारा प्रमुख माने जाने वाले मुद्दे) में स्थानांतरित करने में समान रूप से मान्य है। अपने सरलतम रूप में, एजेंडा सेटिंग की प्रक्रिया में मीडिया को अपने कवरेज में कुछ मुद्दों एवं विषयों पर ध्यान केंद्रित करना सम्मिलित होता है, जो तब जनता अथवा नीति निर्माताओं को उन मुद्दों को अन्य मुद्दों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण समझने के लिए प्रेरित करता है।

- **जनता एवं नीति निर्माताओं को शिक्षित करना**: मीडिया सरकार तथा जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। मास मीडिया वह साधन है जिसके माध्यम से सरकार अपने कार्यक्रमों तथा नीतियों के बारे में जानकारी देती है, उन्हें समझाती है एवं उनके लिए समर्थन हासिल करने का प्रयास करती है। मीडिया परंपरागत रूप से लोकतंत्र का

प्रहरी है, जो लोगों के लिए बोलता है, लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है तथा सरकार पर एक नियंत्रण के रूप में कार्य करता है। मीडिया सरकारी अधिकारियों की जवाबदेही की गारंटी देता है तथा जनता के हितों की रक्षा करता है।

- **निर्णय लेने में मदद करना**: जनसंचार माध्यमों का यह कार्य हर जगह विकासशील समुदायों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य लोगों को संगठित करना, उन्हें एक साथ लाना तथा परिवर्तन लाने एवं राष्ट्रीय विकास को आगे बढ़ाने के लिए निर्णय लेने में मदद करना है।

- **समाजीकरण**: मास मीडिया अपनी ख़बरों, रिपोर्टिंग तथा विश्लेषण के माध्यम से सबसे महत्वपूर्ण रूप से इस बात को प्रभावित करता है कि हम विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक मुद्दों के बारे में क्या और कैसे सीखते हैं। परिवार, स्कूल एवं धार्मिक संगठनों के साथ-साथ मीडिया भी उस प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है जिसके द्वारा लोग समाज के मूल्यों को सीखते हैं और इस बात को समझते हैं कि समाज उनसे क्या अपेक्षा करता है।

उपरोक्त कार्यों से यह देखा जा सकता है कि जनसंचार माध्यम सूचना एवं शिक्षा, मनोरंजन तथा, सबसे महत्वपूर्ण रूप से, गतिशीलता, एकीकरण एवं सामाजिक संपर्क के साधन प्रदान करते हैं। संचार एवं अभिव्यक्ति के साधनों के अपने कार्यों को निष्पादित करते हुए, मीडिया एक प्रकार के सांस्कृतिक गोंद के रूप में कार्य करते हुए समाज को जोड़े रखता है।

4.6 मीडिया का प्रभाव: मीडिया और मूल्य विकास

मीडिया के प्रभाव कई विद्वानों की बहस एवं मीडिया प्रभाव अनुसंधान के केंद्र में हैं। इस बहस का कभी भी कोई निर्णायक उत्तर नहीं होगा। जनसंचार माध्यमों के उदय के परिणामस्वरूप यह बहस छिड़ गई है कि समाज में कुछ प्रकार के संदेशों को क्या और कैसे महत्व दिया जाता है, तथा उन्हें कैसे संप्रेषित किया जाता है। मास मीडिया के उदय से पूर्व, मुख्य रूप से तीन सामाजिक संस्थाएँ थीं जो लोगों के मूल्यों को प्रभावित करने का उत्तरदायित्व लेती थीं। ये तीन संस्थाएँ धार्मिक संस्थाएँ, परिवार तथा स्कूल थीं जो वस्तुओं, एक-दूसरे तथा हमारे सामाजिक संसार के साथ हमारे संबंधों की जानकारी देती थीं। इस तरह के प्रभाव हमारे साथ बने हुए हैं, लेकिन यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जनसंचार माध्यमों की प्रमुखता बढ़ जाने से रोज़मर्रा के जीवन के मामलों में उनकी प्रमुखता एवं उनके नैतिक अधिकार को काफ़ी चुनौती दी जा रही है। आज, पृथ्वी पर कोई भी स्थान (यहां तक कि अंतरिक्ष भी) जनसंचार की पहुंच से परे नहीं है तथा मीडिया, जिसे अक्सर 'चौथा स्तंभ' कहा जाता है, का समाज तथा इसके द्वारा पोषित मूल्यों पर एक निश्चित प्रभाव पड़ता है।

मीडिया का समाज पर गहरा सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव पड़ता है। यह एक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली संदेश के साथ व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की उनकी क्षमता पर आधारित है। मार्शल मैकलुहान ने "माध्यम ही संदेश है" वाक्यांश का उपयोग यह समझाने के लिए किया कि कैसे किसी संदेश का वितरण अक्सर संदेश की सामग्री से अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। मैक्लुहान के उपर्युक्त कथन का तात्पर्य यह है कि मीडिया मनुष्य के संवेदी अंगों को प्रभावित करता है तथा संदेश का रूप (प्रिंट, दृश्य, संगीत आदि) यह निर्धारित करता है कि उस संदेश

को किस प्रकार ग्रहण किया जाएगा। मैक्लुहान ने तर्क दिया कि (रेडियो, टेलीविजन, फिल्मों और कंप्यूटर सहित) आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक संचार के दूरगामी समाजशास्त्रीय, सौंदर्यवादी एवं दार्शनिक परिणाम होंगे, वास्तव में संसार को अनुभव करने के हमारे तरीक़ों को बदलने की हद तक।

आज के तीव्रता से भागते प्रतिस्पर्धी संसार में, मनुष्य अधिक से अधिक भौतिक संपदा अर्जित करने, उपयोग करने तथा अपने पास रखने, की होड़ में अपने मूल्यों, ईमानदारी एवं चरित्र से समझौता करता हुआ प्रतीत होता है। परिणामस्वरूप, कुछ लोगों का मानना है कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, ग़ैरक़ानूनी गतिविधियां, अमानवीय व्यवहार तथा अनैतिक उपभोग जो समाज में देखा जा सकता है, संभावित रूप से, समाज, राष्ट्र तथा वास्तव में संसार की संरचना को तोड़ सकता है। यह आशंका मीडिया के प्रभाव के कारण कितनी हो सकती है?

मीडिया का प्रभाव, विशेष रूप से बच्चों एवं युवाओं पर, समाज में विशेष रूप से माता-पिता एवं शिक्षकों के बीच बढ़ते ध्यान तथा बहस का विषय रहा है। चूंकि समाजीकरण में समाज के मूल्यों तथा मानदंडों को सीखना शामिल है, अधिकांश भाग के लिए, समाजीकरण मुख्य रूप से लोगों के जीवन में कुछ निश्चित समय पर होता है। बच्चे सामाजिक संदेशों का मुख्य लक्ष्य होते हैं। हम कितनी बार माता-पिता को अपने बच्चों को टीवी सेट से चिपके रहकर अपने पसंदीदा कार्यक्रम देखने के लिए डांटते हुए देखते हैं, जिससे पढ़ाई अथवा खेलने के लिए बहुत कम समय बचता है? यह बच्चों तथा युवाओं में मूल्यों के विकास को कैसे प्रभावित करता है?

मीडिया, सामाजिक संस्थाओं में से एक होने के नाते, बुरे अथवा अच्छे के लिए एक बल हो सकता है, हालांकि अक्सर ही इसके बुरे प्रभावों पर ही ध्यान केंद्रित होता है। आइए अब हम समाज की मूल्य प्रणालियों पर मीडिया के प्रभाव के संदर्भ में उनके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को समझें।

4.6.1 मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

मीडिया में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने की ज़बरदस्त क्षमता है। जनसंचार माध्यम जनमत एवं मूल्यों को बनाने तथा प्रतिबिंबित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नवीनतम घटनाओं की जानकारी कुछ ही मिनटों में देश के दूर-दराज़ के कोने तक भी लोगों तक पहुंच जाती है तथा इस बात को सुनिश्चित करती है कि हर किसी को पता हो कि देश में क्या चल रहा है। किसी भी जानकारी की आसान एवं त्वरित उपलब्धता मीडिया को जनता की राय बनाने के लिए सबसे विश्वसनीय स्रोतों में से एक बनाती है। यह दोनों पक्षों के बीच संचार का माध्यम बनकर नेताओं तथा जनता के बीच की दूरी को पाटता है।

दर्शकों के शोध से यह पता चलता है कि मीडिया समाज एवं उसके मूल्यों के प्रति लगाव को मजबूत करता है तथा सुरक्षा एवं आश्वासन पाने में सहायता करता है। टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले प्रमुख सामाजिक अवसर (सार्वजनिक या राज्य समारोह, प्रमुख खेल आयोजन) अक्सर सामाजिक सीमेंट प्रदान करने के लिए बड़ी संख्या में दर्शकों की मदद लेते हैं। भले ही समाज जटिल हो गया है, फिर भी सामाजिक अनुष्ठानों एवं आयोजनों के लिए साझा मूल्यों एवं परंपराओं को सुदृढ़ करना महत्वपूर्ण है। सामाजिक अनुष्ठानों में दर्शाए गए प्रतीक, जैसे कि राष्ट्रीय छुट्टियां मनाने वाली परेड, व्यक्तियों को एक-दूसरे, एवं अंततः समाज से बांधते हैं। भारत द्वारा आयोजित 19वें राष्ट्रमंडल खेलों का मीडिया कवरेज, 2008 में दक्षिण अफ्रीका में

टी20 विश्व कप के बाद मनाए गए जश्न का मीडिया कवरेज, भारतीय प्रीमियर लीग, या अभिनव बिंद्रा का ओलंपिक शूटिंग में गोल्ड जीतने, या राष्ट्रमंडल खेलों में साइना नेहवाल की जीत का मीडिया कवरेज, एशियाई खेलों में सुशील कुमार की कुश्ती का कवरेज, आदि ने कई मायनों में कई युवा बच्चों को खेल गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित करने के अलावा, राष्ट्रीय गौरव की भावना भी व्यक्त की है।

संकट का कवरेज मीडिया की सामाजिक-समर्थक गतिविधियों को भी सामने लाता है। संकट अचानक उभरते हैं एवं बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करते हैं, तथा मीडिया खाते अक्सर मानवीय दुख अथवा जीवन एवं संपत्ति के लिए ख़तरों के दुखद विवरण पेश करते हैं। संकट राजनीतिक नेताओं पर हमलों (उदाहरण के लिए, श्रीमती इंदिरा गांधी तह सुश्री बेनज़ीर भुट्टो की हत्या), बाहरी ताकतों के हमले (कारगिल युद्ध), प्राकृतिक आपदाओं की घटना (दिसंबर, 2006 और 2011 में आए सुनामी), हवाई, सड़क या रेल दुर्घटनाएँ, आंतरिक संघर्ष (सांप्रदायिक अथवा राजनीतिक दंगे) एवं आतंकवादी गतिविधि (26/11 मुंबई हमले) से उत्पन्न हो सकता है। किसी संकट के दौरान मीडिया न केवल जनता को घटना की जानकारी एवं उसपर स्पष्टीकरण प्रदान करता है, बल्कि एकजुटता एवं सार्वजनिक सहानुभूति पैदा करने में भी मदद करता है। मीडिया नेताओं की बुद्धिमत्ता तथा बचावकर्मियों की बहादुरी को उजागर कर सकता है। यह एक आम आदमी को हीरो बना सकता है। मीडिया बहादुरी के छोटे-छोटे कृत्यों की कहानियों को भी प्रचारित करता है ताकि वे लोगों को बहादुर बनने के लिए प्रेरित करती रहें। 26 नवंबर, 2008 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों एवं युद्ध के दौरान मीडिया द्वारा बताए गए बहादुरी के कृत्य लोगों के मन में देशभक्ति की भावना पैदा करते हैं।

मीडिया भ्रष्ट आचरण पर एक निवारक के रूप में कार्य करता है तथा सरकार के कामकाज पर नज़र रखता है। मीडिया ने साक्षरता, स्वास्थ्य प्रबंधन, दहेज विरोधी प्रथाओं, कन्या भ्रूण हत्या को हतोत्साहित करना, एड्स जागरूकता, आदि जैसे सामाजिक कार्यों को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया है। मनोरंजन मीडिया का उपयोग अक्सर समाज के भीतर सामाजिक रूप से सकारात्मक उद्देश्यों के प्रोत्साहन के लिए किया जाता है, खासकर विकासशील देशों में जहां रेडियो तथा टेलीविज़न, जैसे विकास संचार मीडिया, को लंबे समय से विकास एवं सामाजिक परिवर्तन लाने, अच्छी बातें सिखाने तथा अच्छे मूल्यों को स्थापित करने के लिए प्रभावी उपकरण के रूप में देखा जाता है।

पारिवारिक विविध कार्यक्रम और पारिवारिक 'सिटकॉम' जुड़ाव एवं एकजुटता का एक बड़ा स्रोत हैं। टीवी को परिवार के एक सदस्य को दूसरे से अलग करने वाला असामाजिक तत्व नहीं होना चाहिए। यह एक ऐसी गतिविधि हो सकती है जो परिवार के सदस्यों को एक साथ लाती है क्योंकि वे एक साथ कार्यक्रम देखते हैं और उसपर चर्चा करते हैं, जिससे भावनात्मक एवं व्यक्तिगत विकास होता है। सबसे प्रभावशाली व्यावसायिक सफलताओं में से एक भारतीय टीवी नाटक *हम लोग (वी द पीपल)* था जो 1984 में भारतीय टीवी के इतिहास में सबसे लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक बन गया। हालाँकि, यह एक व्यावसायिक मनोरंजन कार्यक्रम था, *हम लोग* का प्रत्यक्ष उद्देश्य, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, महिलाओं और पुरुषों की राजनीतिक एवं सामाजिक समानता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता एवं पारिवारिक सद्भाव जैसे मुद्दों से निपटते हुए, महिलाओं की स्थिति को आगे बढ़ाना था। हाल के दिनों में, *बालिका वधू* भी एक लोकप्रिय टेली-धारावाहिक है, जो विधवा पुनर्विवाह, लड़कियों की शिक्षा तथा बाल विवाह जैसे सामाजिक सरोकारों को उजागर करता है। समाज में किशोरियों को सशक्त बनाने के लिए

आदर्श प्रस्तुत करने वाले कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। विभिन्न टीवी चैनलों, जैसे डिस्कवरी, क्विज़ कार्यक्रम, समाचार चैनल तथा विभिन्न क्षेत्रों की प्रसिद्ध हस्तियों के भाषण देखने से बच्चों का ज्ञान बढ़ता है। कार्टून चैनल बच्चों को प्रसन्न करते हैं। खेल उनकी तार्किक तर्क शक्ति, सोचने की शक्ति तथा समझने की क्षमता को बढ़ाते हैं। खेल, कुश्ती, एथलेटिक्स, जैसी विभिन्न शारीरिक कार्यक्रम जो मीडिया के माध्यम से दिखाए जाते हैं, उनका बच्चों पर मोटर कौशल के महत्व को सिखाने पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। आज भी, छात्रों को सूचना एवं मनोरंजन के लिए समाचार पत्र पढ़ने तथा टीवी चैनल देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अख़बार पढ़ने से बच्चों की पढ़ने की आदत विकसित होती है तथा नए शब्द सीखने से उनकी शब्दावली बढ़ती है। मीडिया दुनिया में मानवाधिकारों की रक्षा एवं उनके प्रचार-प्रसार में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

4.6.2 मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

मीडिया हिंसा इस तथ्य पर जोर देते हुए गहन बहस का विषय रही है कि मीडिया हिंसा का विशेष रूप से बच्चों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, जिससे भय, हिंसक व्यवहार, आक्रामकता तथा असंवेदनशीलता में वृद्धि होती है। एक अधिक व्यापक प्रभाव यह है कि टेलीविज़न दर्शकों को उत्पीड़न तथा पीड़ा के प्रति असंवेदनशील बनाता है। वे हिंसा के परिणाम को समझने, उससे सहानुभूति रखने, उसका प्रतिरोध करने एवं उसके विरोध करने की क्षमता खो देते हैं। सर्वेक्षण हमें बताते हैं कि लोग जितना अधिक टेलीविज़न देखते हैं; इस बात की अधिक संभावना है कि वे अपने ही समुदाय में, खासकर रात को, सड़क पर निकलने से डरते हैं। वे अजनबियों से तथा नए लोगों से मिलने से डरते हैं। सभ्यता की एक पहचान, जो कि अजनबियों के प्रति दिखाई जाने वाली दया है, खो गई है। इंसानी रिश्तों के मुद्दे पर लोग सशंकित होने लगे हैं| कई अध्ययनों ने टेलीविज़न देखने में बिताए गए समय तथा मोटापे की संभावना के बीच एक शक्तिशाली संबंध दिखाया है। नींद की समस्या भी टेलीविज़न देखने से जुड़ी हुई है। मीडिया के अत्यधिक संपर्क से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं। टीवी और अखबार में दिखाए जाने वाले विज्ञापनों का बच्चों पर सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों, प्रभाव पड़ता है। वे स्क्रीन पर दिखने वाले सुपर हीरो की नक़ल करते हैं जिससे उनकी जान को खतरा हो सकता है। मीडिया के अधिक संपर्क के कारण वे अधिक आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं, जिससे उनका भविष्य भी ख़राब हो जाता है। बच्चों को वीडियो गेम खेलने एवं कंप्यूटर के सामने घंटों बिताने, इंटरनेट पर सर्फ़िंग करने में बहुत आनंद मिलता है। अभिभावकों को बच्चों का ध्यान मीडिया जगत से हटाकर बाहरी खेल (आउटडोर गेम्स) खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, तथा उन्हें शारीरिक व्यायाम कराना चाहिए। कुश्ती उन्माद एवं यूएफसी की संस्कृति बच्चों एवं किशोरों को दुर्बल पर हावी होने के ग़लत संस्कार दे सकती है। आलोचकों की राय है कि विज्ञापन अक्सर भ्रामक होते हैं तथा ऐसे उत्पादों को बेचने के लिए व्यक्तियों की भावनाओं को आकर्षित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं जो फायदेमंद नहीं भी हो सकते हैं। मीडिया में गलाकाट प्रतिस्पर्धा को भी अक्सर नकारात्मक मुद्दों को सनसनीखेज बनाने के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी अपराध को एक शीर्षक के रूप में रिपोर्ट किया जाएगा जबकि बहादुरी एवं मानवता का कार्य एक छोटे कॉलम में मुद्रित किया जाएगा। सबसे अच्छा उदाहरण आरुषि हत्याकांड है जिसे लगभग सभी भारतीय समाचार चैनलों पर कई दिनों तक दिखाया गया, जबकि सड़क पर रहने वाले बच्चों की दुर्दशा बिल्कुल भी प्रतिबिंबित नहीं होती है।

4.6.3 मास मीडिया और बच्चे

मास मीडिया का बच्चों के मूल्य विकास पर अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। ऐसे जनसंचार माध्यमों में सबसे महत्वपूर्ण टेलिविज़न है। मीडिया के उपयोग की मात्रा बच्चों की रुचि, टीवी देखने में शामिल समय के आधार पर अलग-अलग होती है, जो बच्चे की मूल्य की अवधारणाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। टेलीविज़न बच्चों के जीवन में सबसे अधिक प्रचलित मीडिया प्रभावों में से एक है। भारत में लड़के तथा लड़कियाँ, दोनों में से लगभग 50 प्रतिशत से अधिक बच्चों के लिए टीवी देखना एक दैनिक शगल है। बच्चों पर टीवी का क्या प्रभाव पड़ता है यह विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है, जैसे: वे कितना टीवी दिखते हैं, उनकी उम्र एवं व्यक्तित्व, वे टीवी अकेले देखते हैं अथवा वयस्क के साथ, तथा टीवी पर वे जो देखते हैं क्या उनके माता-पिता उसके बारे में उनसे बात करते हैं। पिछले दो दशकों में, सैकड़ों अध्ययनों ने इस बात की जाँच की कि टीवी पर दिखाए जानेवाले हिंसक कार्यक्रम बच्चों, तथा किशोर एवं किशोरियाँ को कितना प्रभावित करते हैं। इस बात पर आम सहमति बढ़ रही है कि कुछ बच्चे हिंसक चित्र और अध्येता के प्रति भेद्य हो सकते हैं। बच्चों के मीडिया के प्रति प्रमुख नकारात्मक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण नीचे दिया गया है:

- वयस्कों की तुलना में बच्चों, विशेष रूप से लड़कियों, को टीवी पर हिंसा के शिकार के रूप में चित्रित करने की अधिक संभावनाएँ होती हैं, और इससे अधिकतर लड़कियाँ अपने आस-पास के संसार से अधिक डरने लगती हैं, तथा उसके प्रति अधिक संवेदनशील हो सकती हैं। कुछ सबसे हिंसक टीवी शो बच्चों के कार्टून हैं, जिनमें हिंसा को विनोदी रूप में दर्शाया गया है – और उसके यथार्थवादी परिणामों को शायद ही कभी दर्शाया जाता है। इससे वास्तविक संसार के प्रति बच्चों की संवेदनशील प्रतिक्रिया प्रभावित होती है। कुछ छोटे बच्चों में हिंसक टीवी शो अथवा फ़िल्में देखने के बाद आक्रामक व्यवहार को चित्रित करने की संभावना अधिक होती है। अतः, माता-पिता को इस बात पर पूरा ध्यान देना चाहिए कि उनके बच्चे जो समाचार देख और सुन रहे हैं, उनमें क्या चल रहा है, क्योंकि अध्ययनों से पता चला है कि बच्चा किसी अन्य मीडिया सामग्री की तुलना में समाचार में दिखाई गई हिंसा से अधिक भयभीत होता है, तथा जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, और वास्तविकता एवं कल्पना के अंतर को बेहतर ढंग से पहचानने में समर्थ होते जाते हैं, यह भय बढ़ता जाता है।

- टेलीविज़न शिक्षण एवं स्कूल के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है यदि यह बच्चों के स्वस्थ मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण गतिविधियों के लिए आवश्यक समय में कटौती करता है। बच्चों का सबसे ख़ाली समय, विशेष रूप से प्रारंभिक रचनात्मक वर्षों के दौरान, खेलने, पढ़ने, प्रकृति की खोज करने, संगीत के बारे में सीखने अथवा या खेल-कूद में भाग लेने, आदि में व्यतीत होना चाहिए।

- टीवी देखना एक गतिहीन गतिविधि है, और यह बचपन की स्थूलता में एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ है। टीवी के सामने बिताये समय की कीमत अकसर अधिक सक्रिय क्रीड़ाओं का बलिदान होता है। कैनेडियन पीडियाट्रिक सोसाइटी के अनुसार, बच्चों के टीवी शो में अधिकतर खाद्य विज्ञापन फास्ट फूड, कैंडी एवं पूर्व-मीठे अनाज के लिए होते हैं जो बच्चों के विकास को प्रभावित करते हैं।

- आज के बच्चों के ऊपर हर मीडिया – टेलीविज़न, विज्ञापन, संगीत, फ़िल्में तथा इंटरनेट - के माध्यम से यौन संदेशों एवं चित्रों की बमबारी होती है, जबकि टेलीविज़न युवाओं को यौन व्यवहार एवं उससे जुड़े जोखिमों के बारे में शिक्षित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, फिर भी यौन सामग्री वाले कार्यक्रमों में ऐसी समस्याओं का शायद ही कभी उल्लेख किया जाता है अथवा सुसंगत तरीकों से इनपर बात की जाती है। छोटे बच्चों का कंडोम, आई-पिल, अंडर गारमेंट्स , इत्यादि के विज्ञापन देखना, कई बार विकृत अर्थ को जन्म देते हैं जो कि अस्वास्थ्यकर होता है।

(बच्चों को प्रभावित करने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक टीवी विज्ञापन)

(पुन:प्राप्त- http://www.google.co.in/search?google images दिनांक-28.4.2011)

- वीडियो गेम

वीडियो गेम मनोरंजन का एक अनूठा रूप है, क्योंकि वे खिलाड़ियों को गेम के कथानक का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आज के परिष्कृत वीडियो गेम के लिए खिलाड़ियों को निष्क्रिय रूप से फ़िल्म देखने के बजाय खेल पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसका खिलाड़ियों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक, दोनों प्रभाव पड़ता है।

वीडियो गेम का बच्चों पर सबसे सकारात्मक प्रभाव यह है कि वे खिलाड़ियों की दस्ती निपुणता एवं कंप्यूटर साक्षरता में सुधार करते हैं। लगातार बेहतर हो रही तकनीक खिलाड़ियों को बेहतर ग्राफिक्स भी प्रदान करती है जो अधिक "यथार्थवादी" आभासी खेल का अनुभव प्रदान करते हैं। हालाँकि, कई अध्ययनों से पता चलता है कि वीडियो गेम, विशेष रूप से हिंसक सामग्री वाले खेल, किशोरों को अधिक आक्रामक बनाते हैं। वीडियो गेम की परस्पर संवादात्मक गुणवत्ता निष्क्रिय रूप से टेलीविज़न अथवा फिल्में देखने से भिन्न होती है, क्योंकि यह खिलाड़ियों को खेल की स्क्रिप्ट में सक्रिय भागीदार बनने की अनुमति देती है। खिलाड़ियों

को हिंसा के कृत्यों में शामिल होने से लाभ होता है, तथा फिर वे खेल के अगले स्तर पर जाने में सक्षम होते हैं। हालाँकि परस्पर संवादात्मक वीडियो गेम पर कम अध्ययन किए गए हैं, किंतु प्रमाण बताते हैं कि हिंसक वीडियो गेम खेलने से बच्चों एवं किशोरों के व्यवहार पर अधिक नाटकीय प्रभाव पड़ सकता है (संयुक्त वक्तव्य, 2000)।

(http://www.aap.org/advocacy/releases/jstmtevc.html पर उपलब्ध)

4.7 पारंपरिक मीडिया के प्रभाव

उपरोक्त मीडिया के अलावा पारंपरिक मीडिया सामाजिक, अनुष्ठान, नैतिक और भावनात्मक आवश्यकताओं के संचार के माध्यम से राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में सक्षम है। हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जब जनसंचार माध्यम ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण में था, तब तमाशा, भवई एवं नौटंकी जैसे लोक मीडिया रूपों का उपयोग स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा देशभक्ति के संदेश फैलाने के लिए किया जाता था। आज भी, पारंपरिक मीडिया का उपयोग केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा, अन्य बातों के अलावा, जनता को शिक्षित करने, परिवार कल्याण, विकासात्मक गतिविधियों, लोकतांत्रिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक संदेश देने के लिए किया जाता है। "ढोलकी बारी", "लोकनाट्य", "जात्रा", "कीर्तन", "कठपुतली के खेल", आदि जैसी लोक कलाओं का उपयोग कई सामाजिक कार्यकर्ताओं, सुधारवादियों एवं राजनीतिक नेताओं तथा विकास एजेंसियों द्वारा ग्रामीण जनता को शिक्षित करने के लिए, तथा नई जानकारी प्रसारित करने के लिए किया गया है। ये पारंपरिक मीडिया न केवल विकासात्मक गतिविधियों में मदद करेंगे, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा एवं मूल्यों को अगली पीढ़ी तक संरक्षित एवं प्रसारित करने में भी मदद करेंगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

4.8 विज्ञापन

मास मीडिया के सभी घटकों के बीच, विज्ञापन का, समाचार तथा मनोरंजन मीडिया की तुलना में, कहीं अधिक प्रभाव पड़ता है। विज्ञापन संचार का एक रूप है जिसका उद्देश्य दर्शकों (दर्शकों, पाठकों अथवा श्रोताओं) को उत्पादों, विचारों अथवा सेवाओं को ख़रीदने या उन पर कुछ कार्रवाई करने के लिए राज़ी करने का प्रयोजन रखता है। बाज़ार अनुसंधान संगठनों द्वारा किए गए अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि जब उपभोक्ताओं को जानकारीपूर्ण विज्ञापनों से अवगत कराया जाता है, तो उनपर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे उन्हें उत्पादों की सकारात्मकताओं एवं प्रतिस्पर्धियों की नकारात्मकताओं का पता लगाकर निर्णय लेने में मदद मिलती है। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि मीडिया संपर्क के कारण उपभोक्ता के निर्णयों में तर्कसंगतता बढ़ती है। स्वास्थ्य पेय, पर्यटन, पशु जगत, वनों की कटाई जैसे टीवी विज्ञापनों के उदाहरण बढ़ते बच्चों के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं।

ये विज्ञापन भारत के व्यापक दर्शकों पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, "**जागो रे**" अभियान, जो चाय के एक लोकप्रिय ब्रांड को बढ़ावा देता है, का उद्देश्य लोगों को मतदान के अधिकार का प्रयोग करने के बारे में जागरूक करना था, और इसे दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया है। भारत के पर्यटन का **अतिथि देवो भव** अभियान पारंपरिक भारतीय संस्कृति और मेहमानों का सम्मान करने के मूल्यों पर बल देता है। ऐसे युग में जब लोग आसानी से दृश्य अपील एवं विज्ञापन छवि की आर्थिक अनिवार्यताओं के आगे झुक जाते हैं, ये विज्ञापन एक कदम आगे बढ़ रहे हैं और केवल बेचने के अलावा और भी बहुत कुछ कर रहे हैं। विज्ञापनों का संदर्भ व्यापक और कैनवास नया होता है।

टीवी विज्ञापनों के उदाहरण (http://www.google.co.in/search?google images से दिनांक-28.4.2011 को पुनः प्राप्त)

बोध प्रश्न 2

1. मीडिया के दो सकारात्मक प्रभाव बताइये?

   .....

   .....

   .....

2. विज्ञापन क्या है?

   .....

   .....

   .....

3. टेलीविजन देखने के दो नुकसान बताइये?

   .....

   .....

   .....

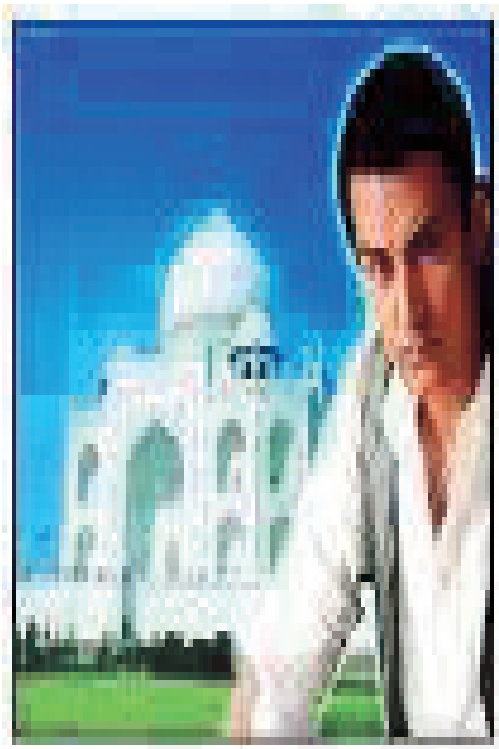

JAAGO RE!
ONE BILLION VOTES
TATA TEA
JAAGO RE!
SOCCER STARS '09
Go to Arsenal
TATA TEA
TATA TEA
TATA TEA'S JAAGO RE CAMPAIGN:
THE SOCIAL-CAUSE MARKETING INITIATIVES
AND LONG-TERM BRANDING INITIATIVES

junior
Horlicks
STAGE 1 1 2 3

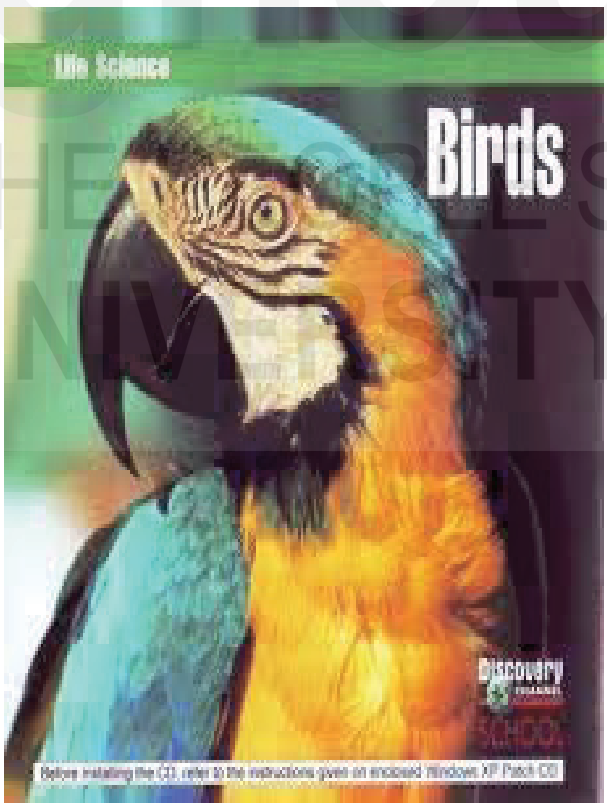
Life Science
Birds
Discovery

4.9 सारांश

लोग जीवन में रिश्ते, परिवार, माता-पिता, दोस्त, अनुभव, बुद्धि, शिक्षा, धार्मिक विश्वास एवं दृढ़ विश्वास सहित कई चीजों से प्रभावित होते हैं। मीडिया उनमें से केवल एक है, हालांकि समाज के भीतर विश्वास तथा समझ के कुछ तरीकों में लोगों को प्रभावित करने के लिए पहले से अस्तित्व में रही किसी भी चीज़ से अधिक शक्तिशाली है।

हम एक मध्यस्थ वातावरण में रह रहे हैं, और हमें इस वातावरण में रहने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित होना चाहिए। ऐसा करने का एक तरीका 'मीडिया साक्षरता अथवा शिक्षा' है। मीडिया साक्षरता को मीडिया तक पहुंचने, उसका विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने, तथा उसे संसाधित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसका लक्ष्य बच्चों को सचेत एवं चयनात्मक रूप से मीडिया का उपयोग करना, तथा मीडिया संदेशों एवं छवियों के विषय में गंभीर रूप से सोचना सिखाना है। मीडिया साक्षरता शिक्षण संस्थानों की कक्षाओं में एक औपचारिक पाठ्यक्रम, अथवा अधिक अनौपचारिक रूप से उत्तरदायी पालन-पोषण का का एक पाठ्यक्रम हो सकता है। मूल्यों की मध्यस्थता शिक्षकों के प्रशिक्षण का एक हिस्सा हो सकती है, ताकि वे प्रभावशाली युवा मस्तिष्कों को मीडिया के अलग तथा बुद्धिमान उपयोग में प्रशिक्षित कर सकें, दूसरे शब्दों में, मीडिया का क्या करना है यह सिखा सकें।

माता-पिता को यह जानने की आवश्यकता है कि बच्चे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर क्या कर रहे हैं, साथ ही उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि वे टीवी पर क्या देख रहे हैं। मीडिया शिक्षा के साथ, हिंसक प्रतिशोध, अधर्मी व्यवहार एवं भौतिक सांसारिकता के लिए मीडिया के संदेश अब पसंदीदा मॉडल नहीं होंगे, बल्कि परिवार आधारित मूल्य एवं धार्मिक नैतिकता एक बार फिर से प्राथमिकता ले सकते हैं।

4.10 बोध प्रश्न के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मास मीडिया और सोशल मीडिया।
2. सोशल मीडिया वेब-आधारित तकनीकों जैसे फेस बुक, ट्विटर, यूट्यूब आदि का उपयोग करके सामाजिक संपर्क के लिए बना है|
3. भाषण, स्क्रिप्ट, प्रिंट, दूरसंचार और डिजिटल तकनीक मीडिया विकास के विभिन्न चरण हैं।

बोध प्रश्न 2

1. अ) डिस्कवरी, समाचार और क्विज़ शो आदि जैसे विभिन्न टीवी चैनल देखने से उनका ज्ञान बढ़ता है। ब) खेलों से उनकी तार्किक तर्कशक्ति, सोचने की शक्ति और चीजों पर पकड़ बढ़ती है।
2. विज्ञापन संचार का एक रूप है जिसका उद्देश्य दर्शकों को उत्पाद, विचार या सेवा खरीदने या उस पर कुछ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करना है|
3. अ) कुछ छोटे बच्चों में हिंसक टीवी शो अथवा फ़िल्में देखने के बाद आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करने की अधिक संभावना होती है। ब) टेलीविज़न देखना एक गतिहीन गतिविधि है तथा यह बचपन में स्थूलता को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कारक साबित हुआ है।

4.11 संदर्भ

अग्रवाल वीर बाला (2002)। मीडिया और समाज: चुनौतियाँ और अवसर, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली

ब्रैनस्टन, जी. और स्टैफ़ोर्ड, आर. (2010)। द मीडिया स्टूडेंट बुक, 5वां संस्करण: रूटलेज, लंदन

कैरी जे. (1989). संस्कृति के रूप में संचार: मीडिया और समाज पर निबंध, न्यूयॉर्क, लंदन: रूटलेज

डफीब्रुक एरिन, टुरोजोसेफ एड, (2008)। मीडिया टुडे में मुख्य अध्ययन: संदर्भों में जनसंचार, रूटलेज।

दत्ता के.बी. (2007)। मास मीडिया और समाज: मुद्दे और चुनौतियाँ; आकांक्षा प्रकाशन

मैक लुहान, मार्शल (1964)। मीडिया को समझना: मनुष्य का विस्तार लंदन: रूटलेज और कीगन पॉल

मेहता नलिन (2008)। टेलीविजन पर भारत: कैसे सैटेलाइट समाचार चैनलों ने हमारे सोचने और काम करने के तरीके को बदल दिया है; हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया

ओ 'शॉघनेसी, एम. (2002)। मीडिया और समाज: एक परिचय. दूसरा संस्करण. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

वुड्स माइकल, वुड्स मैरी बी (2006)। संचार का इतिहास, लर्नर पब्लिशिंग ग्रुप, मिनियापोलिस, यूएसए

ऑफ़लाइन स्रोत:

http://www.aap.org/advocacy/releases/jstmtevc.htm

http://www.google.co.in/search?google images

MPDD/IGNOU/P.O. 41K/MAY 2024

ISBN : 978-93-6106-041-0